आज़ादी का
अमृत महोत्सव

पीएनबी प्रतिभा
pnb pratibha
अंक: 63-02 जुलाई-सितंबर, 2022
पंजाब नैशनल बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

राजभाषा विशेषांक

रोजगार उन्मुख

अनुसंधान और शोध

समृद्ध साहित्य

वैश्वीकरण की राह

सूचना प्रौद्योगिकी की डगर

शिक्षा की उड़ान

मीडिया

pnb
पीएनबी स्टाफ जर्नल
PNB Staff Journal

पंजाब नैशनल बैंक को "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, इंडोर स्टेडियम, सूरत में आयोजित राजभाषा समारोह में माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह, गृह राज्यमंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, रेल राज्य मंत्री एवं वस्त्र राज्य मंत्री आदि गणमान्य अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति में वित्त वर्ष 2021-22 के लिए 'राजभाषा कीर्ति' पुरस्कार ग्रहण करते हुए पंजाब नैशनल बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल।

मुख्य संरक्षक:

अतुल कुमार गोयल
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

संरक्षक:

संजय कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

विजय दुबे
(कार्यपालक निदेशक)

कल्याण कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

प्रबंधकीय संपादक:

देवार्चन साहू
(महाप्रबंधक - राजभाषा)

संपादक:

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा)

सह संपादक:

बलदेव कुमार मल्होत्रा
(मुख्य प्रबंधक - राजभाषा)

राजीव शर्मा
(वरिष्ठ प्रबंधक - राजभाषा)

हृदय कुमार
(राजभाषा अधिकारी)

श्री देवार्चन साहू, महाप्रबंधक - राजभाषा द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा द्वारा संपादित।

पंजाब नैशनल बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, सेक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली

मुद्रण:

रॉयल प्रेस, बी-81, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-1, नई दिल्ली-110020

पीएनबी प्रतिभा में लेखकों/रचयिताओं द्वारा व्यक्त राय एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। बैंक प्रबंधन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	2
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	4
कार्यपालक निदेशक का संदेश	5
महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश	6
संपादकीय	7
बैंक को पुरस्कार	8
पंजाब नैशनल बैंक बना रूपे क्रेडिट कार्ड पर यूपीआई आरंभ करने वाला पहला बैंक	9
राजभाषा हिंदी – दशा एवं दिशा	10
पी.एन.बी वन ऐप	15
देश सेवा में तत्पर-पंजाब नैशनल बैंक	16
बनारस - एक बेमिसाल व जीवंत शहर	18
नवनियुक्त मंडल प्रमुखों के लिए कार्यशाला का आयोजन	25
द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत	26
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के दौरे	27
कार्यपालक निदेशकों के दौरे	29
इमोशनल इंटेलिजेंस से प्रभावी प्रबंधन	30
उद्‌घाटन	32
हमें गर्व है	33
कहानी - विछोह	34
बैंक में राजभाषा की प्रासंगिकता	36
समृद्धि और विकास का प्रतीक राजभाषा हिंदी	38
पंजाब नैशनल बैंक ने पीएनबी ईज आउटलेट का उद्‌घाटन कर मनाया 76वां स्वतंत्रता दिवस	40
पंजाब नैशनल बैंक ने मनाया 76वां स्वतंत्रता दिवस	41
भारतवर्ष को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी की भूमिका	42
जनमानस की भावना हिंदी	45
प्रधान कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन	48
अंचल तथा मंडल कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ	50
संसदीय समिति के दौरे	54
राजभाषा गतिविधियाँ	55
स्वतंत्रता दिवस के 75 वर्ष और राजभाषा हिंदी	59
तमाशा समाज का / बचपन के दिन	62
हर तस्वीर कुछ कहती है (उत्कृष्ट प्रविष्टियाँ)	63
देश का सम्मान - हिंदी / बचपन	65
पुस्तक समीक्षा - जब आदिवासी गाता है	66
विविध	68
देशभक्ति के नवीन आयाम	69
प्रादेशिक भाषा की रचनाएँ	71
सीएसआर गतिविधियाँ	74
आपके पत्र	75
भावभीनी विदाई	76

हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

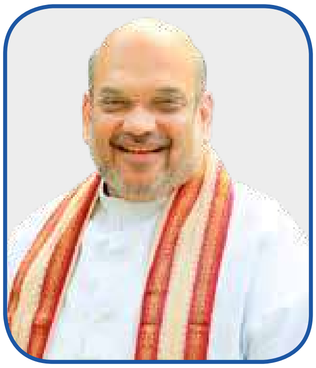

प्रिय देशवासियो!

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आजादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आंदोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किये गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किये हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किये गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृभाषाओं से नि:शुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किये गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत् शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परम्परा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उदबोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022 **(अमित शाह)**

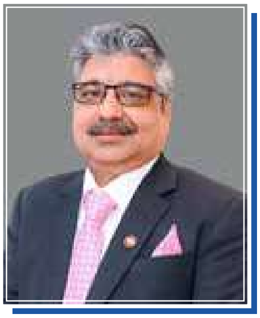

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय पीएनबीएंस,

पीएनबी प्रतिभा के माध्यम से आप से संवाद करने का पुनः अवसर प्राप्त हो रहा है। यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि पीएनबी प्रतिभा का यह अंक 'राजभाषा विशेषांक' है। किसी भाषा का राजभाषा के पद पर आसीन होना यह दर्शाता है कि उस भाषा का प्रभाव राष्ट्रीय स्तर का है। कोई भी भाषा राजभाषा के पद पर आसीन होने की प्रबल दावेदार तभी होती है जब वह भाषा राष्ट्रीय संस्कृति की संवाहक हो, राष्ट्रीय स्तर पर एकता और अखंडता के भाव को स्थापित करने में सहायक हो और हमारे देश में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो संपूर्ण देश में एकता और सदभावना स्थापित करने में सफल रही है।

भारत समृद्ध भारतीय भाषाओं और संस्कृति का देश है इसलिए संविधान निर्माताओं ने आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भारतीय भाषाओं के लिए विशेष प्रावधान किया है ताकि उन्हें निरंतर समृद्ध और प्रवाहमान बनाया जा सके। इन भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों को अपनाकर ही हिंदी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पल्लवित हुई है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था कि 'भारतीय संस्कृति एक विकसित शत दल कमल की तरह है, जिसकी प्रत्येक पंखुड़ी हमारी प्रादेशिक भाषाएँ हैं। किसी भी पंखुड़ी के नष्ट होने से कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। मैं चाहता हूँ कि प्रादेशिक भाषाएँ रानी बनकर प्रान्तों में विराजमान रहें और उनके बीच हिंदी मध्यमणि बनकर विराजे'।

साथियो, देश अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा करना है। आत्मनिर्भरता का यह संकल्प बाह्य निर्भरता को समाप्त करने से संबंधित है। सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता के साथ-साथ भाषा के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता अत्यंत आवश्यक है। प्रारंभिक स्तर से इसकी शुरुआत नई शिक्षा नीति में हमारी नई पीढ़ी को मातृभाषा में शिक्षा देने से हो गई है। कार्य संस्कृति में हिंदी का वर्चस्व स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम हमें हिंदी के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा। जब तक हम हिंदी में कार्य करने को अपने आत्मगौरव और राष्ट्रगौरव से नहीं जोड़ेंगे तब तक हम हिंदी को विश्व स्तर पर सुस्थापित नहीं कर पाएंगे। हमारे अंदर हिंदी के प्रति भी वही सम्मान और आस्था होनी चाहिए जो हमारे अन्य राष्ट्रीय प्रतीक चिह्नों के प्रति है। इसी प्रकार हमारी स्वभाषा की आत्मनिर्भरता की पूर्ति हो सकती है।

साथियो, सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक होने के नाते हमारा कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक है। जिसमें हमारे पास हिंदी में कार्य करने के असीमित अवसर हैं। पंजाब नैशनल बैंक राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों के प्रति पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रहा है। बैंक ने अपने ग्राहकों को हिंदी या उनकी अपनी भाषा में सेवाएं प्रदान करने की सुविधा प्रदान की है। बैंक का ध्येय सदैव उत्कृष्ट मानक का रहा है और ग्राहकों को उनकी भाषा में सेवाएं प्रदान करना भी उत्कृष्टता का ही एक मानक है। अत: बैंक ने अपने सभी कार्यालयों, डिजिटल माध्यमों जैसे इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, महत्वपूर्ण ऐप आदि में हिंदी सहित क्षेत्रीय भाषाओं में सेवाएं प्रदान कर ग्राहकों के लिए बैंकिंग को और भी सरल बनाया है, जिससे आज हमारी पहुँच पंक्ति में खड़े अंतिम आदमी तक हुई है। मुझे आशा है कि हम राजभाषा को अपनाकर अपने वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

मुझे आपके साथ यह साझा करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष हमारे बैंक को राजभाषा के दो-दो क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त हुए हैं और साथ ही हमारे बैंक को 'राजभाषा कीर्ति' द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हमें प्रथम पुरस्कार के लिए अपने प्रयासों में तेजी लानी है। अपने बैंकिंग कार्य को हिंदी में करने का संकल्प लेना है। आसान व सरल भाषा का प्रयोग करके हम तकनीक के सहारे आसानी से हिंदी में कार्य कर सकते हैं। इसके अलावा क्षेत्रीय स्तर पर भी हमारे अंचल एवं मंडल कार्यालयों ने भारत सरकार के विभिन्न राजभाषा पुरस्कार प्राप्त किए है। मैं उनको भी इस उपलब्धि के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे राजभाषा के क्षेत्र में इसी प्रकार उल्लेखनीय प्रदर्शन करते रहेंगे।

राजभाषा हिंदी में कार्य करने के संकल्प के साथ आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद! जय हिंदी !

अतुल कुमार गोयल
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की गृह पत्रिका के "राजभाषा विशेषांक" के माध्यम से आप सबसे संवाद स्थापित करते हुए आत्मविभोर हो रहा हूँ। राजभाषा का महत्त्व आप सभी भली प्रकार से जानते समझते हैं, इसलिए इस विशेषांक का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

आज हमारा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अवसर पर हम अपने राष्ट्रीय गौरव को याद करते हुए अगले 25 वर्षों में भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। इस अभियान में अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों के साथ ही साथ क्षेत्रीय एवं हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है।

हमारा देश बहुभाषी है और प्रत्येक भाषा अपने में सम्पूर्णता को समेटे हुए है लेकिन मुझे लगता है कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो सभी भारतीय भाषाओं में समन्वय स्थापित करने का सामर्थ्य रखती है। हिंदी ने अपनी सरलता से भारतीय संस्कृति एवं साहित्य को भी जीवंत बनाए रखा है। हिंदी सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को जागृत रखती है। यह एक ऐसी भाषा है जिसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है। देश की सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी में समरसता है जिसके कारण आम जन इससे आसानी से जुड़ जाते हैं।

आज के आधुनिक परिवेश में हिंदी तकनीकी रूप से भी बहुत समृद्ध हुई है। उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी आधारित बैंकिंग से आम जनता के लिए बैंकिंग सुगम एवं 24x7 आधार पर उपलब्ध हो गई है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से अर्थव्यवस्था पर परिलक्षित हो रहा है।

हमारा बैंक भी तकनीक और राजभाषा की दिशा में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। अभी हाल ही में दिनांक 03 अक्टूबर 2022 को हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा व्हाट्सऐप बैंकिंग का शुभारंभ किया गया है। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारत सरकार द्वारा देश के 75 जिलों में डिजिटल बैंकिंग यूनिट स्थापित करने के अनुसरण में हमारे बैंक द्वारा भी विभिन्न जिलों में डिजिटल बैंकिंग यूनिट स्थापित किए गए हैं। इन डिजिटल बैंकिंग केन्द्रों के द्वारा सुदूर ग्रामीण इलाके में बैंकिंग सेवाओं से वंचित ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग सुविधाएं 24x7 आधार पर प्रदान की जाएंगी। यह बैंकिंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल है। हमारे बैंक के विभिन्न पोर्टल एवं ऐप्लीकेशन हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। जिनके माध्यम से ग्राहकों को उनकी ही भाषा में ग्राहक सेवा प्रदान की जा रही है।

किसी भी वित्तीय एवं व्यावसायिक संस्थान का आधार ग्राहक होता है और ग्राहक को अपने संस्थान से जोड़ने के लिए आवश्यक है कि हमारा संवाद उनकी ही भाषा में हो। यदि हम उनकी ही भाषा में बैंकिंग उत्पादों के बारे में उन्हें बताएंगे तो निःसंदेह ग्राहक हमसे जुड़ेगा जिससे बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि होगी। बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि से ही हमारा देश आर्थिक दृष्टि से महाशक्ति बनने की दिशा में अग्रसर होगा। आज दुनिया के बहुत से देश हमारे देश के साथ अपनी व्यावसायिक स्थिति को मजबूती प्रदान करने के लिए हिंदी सीख रहे हैं ताकि व्यावसायिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाया जा सके। मेरा आप सबसे यही आग्रह रहेगा कि ग्राहकों को उनकी ही भाषा में बैंकिंग सुविधाओं की जानकारी प्रदान कर अपने संस्थान को एक बार पुनः शीर्षस्थ स्थान पर बनाने के लिए प्रयास करें।

हमारा बैंक प्रत्येक वर्ष राजभाषा का सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करता आ रहा है इस वर्ष भी हमारे बैंक को दो-दो राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। जो आप सभी के सम्मिलित प्रयास से संभव हो पाया है। हमें हिंदी का प्रयोग बढ़ाते हुए न केवल राजभाषा के क्षेत्र में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करना है अपितु बैंकिंग व्यवसाय में भी शीर्षस्थ होना है।

आप सभी एक बार पुनः सम्मिलित प्रयास कर अपने ध्येय की तरफ अग्रसर हों।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' के इस अंक को **'राजभाषा विशेषांक'** के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इस अंक के माध्यम से बैंक में राजभाषा के महत्व तथा बैंक की राजभाषा गतिविधियों की जानकारी आप सभी तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

राजभाषा से तात्पर्य है राज-काज की भाषा, अर्थात सरकारी कार्यालयों में आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों में प्रयोग की जाने वाली भाषा। भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को यह निर्णय लिया कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा। भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सामान्यत: भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम कहा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। किसी भी देश या समाज के इतिहास या संस्कृति को जानने का माध्यम या साधन उसकी भाषा ही होती है। भाषा के बिना हम अपने इतिहास, संस्कृति, परंपरा आदि से अनभिज्ञ रह सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। हिंदी करोड़ों भारतवासियों के दिलों को जोड़ने की भाषा है।

बहुत ही सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है, दुनिया भर में हिंदी को समझने, बोलने और चाहने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। विश्व में हिंदी भाषा बोलने के आधार पर तीसरे स्थान पर आती है। प्रसिद्ध हिंदी कवि गिरिजा कुमार माथुर जी ने हिंदी के महत्त्व को दर्शाने के लिए निम्न पंक्तियाँ लिखी हैं-

एक डोर में सबको जो है बाँधती वह हिंदी है,
हर भाषा को सगी बहन जो मानती वह हिंदी है।
भरी-पूरी हों सभी बोलियाँ यही कामना हिंदी है,
गहरी हो पहचान आपसी यही साधना हिंदी है।।

अभी हाल ही में मध्यप्रदेश राज्य सरकार ने मेडिकल शिक्षा का समस्त पाठ्यक्रम हिंदी में अनूदित करवाकर पूरे राज्य में लागू करवा दिया है जोकि हिंदी को चिकित्सीय शिक्षा प्रणाली में अपनाए जाने की एक नई और उत्कृष्ट पहल है। वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के युग में बैंकों के लिए भी हिंदी का महत्व बढ़ता जा रहा है। हमारे ग्राहकगण का एक बहुत बड़ा वर्ग हिंदी को समझता एवं बोलता है। हिंदी के माध्यम से हम बेहतर बैंकिंग सुविधाएं उन तक पहुँचा सकते हैं। हमारे बैंक द्वारा राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में बहुत से उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। आईटी के क्षेत्र में भी हमने बहुत प्रगति की है, हमारे बैंक ने प्रमुख ऐप पीएनबी-वन, एसएमएस सुविधा, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग को हिंदी सहित क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध कराया है। बैंक में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर हिंदी कार्यशाला, संगोष्ठी, हिंदी प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाता है।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत गर्व महसूस हो रहा है कि बैंक को वित्त वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार **'राजभाषा कीर्ति'** द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं, साथ ही सभी कार्यपालकगणों तथा राजभाषा प्रभारियों से अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक बढ़ावा दें तथा स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने के लिए अधिक से अधिक प्रेरित करें ताकि भविष्य में भी इस दिशा में हम अग्रणी बने रहें।

मैं आशा करता हूँ कि पीएनबी प्रतिभा का यह 'राजभाषा विशेषांक' आप सभी के लिए राजभाषा के महत्व को दर्शाने में सार्थक सिद्ध होगा।

इसी विश्वास के साथ हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

देवार्चन साहू
(महाप्रबंधक-राजभाषा)

संपादकीय

प्रिय साथियो,

बैंक की गृह पत्रिका पीएनबी प्रतिभा के इस नवीन अंक "राजभाषा विशेषांक" को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए और इसके माध्यम से आप सभी सुधी पाठकों से एक बार पुन: संवाद करते हुए मुझे अत्यंत आत्मीयता की अनुभूति हो रही है। भाषा हमारे असंख्य भावों, विचारों तथा अनुभवों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है जिसके द्वारा न केवल हम दूसरों के विचारों और ज्ञान से अवगत हो सकते हैं अपितु अपने विचारों को अन्य जनमानस तक सरलता से पहुँचा भी सकते हैं। संपर्क भाषा, स्वभाषा और मातृभाषा के रूप में हिंदी के महत्व को समझते हुए हमारे बुद्धिजीवी और दूरगामी सोच वाले स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1949 को सर्वसम्मति से हिंदी को देश की राजभाषा घोषित किया ताकि हमारा देश स्वभाषा से आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर हो सके। राजभाषा हिंदी न केवल देश की समृद्ध परम्परा की द्योतक है बल्कि अपने वैज्ञानिक व्याकरण के कारण सर्वमान्य और स्वीकार्य भी है क्योंकि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है।

हिंदी दिन-प्रतिदिन और अधिक ग्राह्य, सरल और समृद्ध होती गई क्योंकि इसके प्रगामी प्रयोग और प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी स्तर पर भी विभिन्न शोध, अनुसंधान और आईटी टूल्स के माध्यम से प्रयास किए जा रहे हैं। अभी हाल ही में 14 सितंबर, 2022 में सूरत में आयोजित भव्य हिंदी दिवस समारोह-2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी द्वारा हिंदी से हिंदी के बृहत शब्द कोश "हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण-1)" तथा स्मृति आधारित अनुवाद टूल के उन्नत संस्करण "कंठस्थ – 2.0" का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 75 वर्ष से 100 वर्ष का यह अमृत काल, संकल्प लेने और संकल्प सिद्धि का समय है। "जब तक हम इस बात का संकल्प नहीं करते कि इस देश का शासन, प्रशासन, ज्ञान और अनुसंधान हमारी भाषाओं में होगा, राजभाषाओं में होगा, तब तक हम इस देश की क्षमताओं का उपयोग नहीं कर सकते।"

यदि बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की महत्ता को देखें तो हम पाते हैं कि हिंदी अंतिम उपभोक्ता तक बैंकिंग सुविधाओं और सेवाओं को पहुँचाने का न केवल सरल और सुगम मार्ग प्रशस्त करती है बल्कि ग्राहकों के विश्वास को जीतने में भी सहायता करती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आने वाले समय में हिंदी हर क्षेत्र की एक बहुत बड़ी जरुरत बनकर न केवल हमारे राष्ट्र की अपितु विश्व की अग्रणी भाषा के रूप में स्थापित रहेगी। आज विश्व पटल पर कई विश्वविद्यालयों व संस्थानों में हिंदी भाषा में प्रकाशित किताबों, शोधों, अभिभाषणों, विचारों, पत्रिकाओं के कारण भारत की एक अलग पहचान स्थापित हो गई है; जिसके कारण हमें हिंदी भाषी होने पर न केवल गर्व की अनुभूति होती है बल्कि हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन भी मिलते हैं।

इस "राजभाषा विशेषांक" में राजभाषा हिंदी के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं और बैंकिंग क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों में इसकी महत्ता और उपयोगिता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। बैंक के सभी कार्यालयों में हिंदी माह धूमधाम से मनाया गया जिनका सचित्र विवरण इस अंक में दिया गया है। पत्रिका के इस अंक में राजभाषा से संबंधित विभिन्न लेख, प्रधान कार्यालय तथा विभिन्न कार्यालयों में आयोजित राजभाषा समारोह की झलकियाँ, स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ, कॉरपोरेट गतिविधियाँ, उच्चाधिकारियों के दौरे आदि को शामिल किया गया है। साथ ही पत्रिका में प्रसिद्ध स्थलों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियों सहित पुस्तक समीक्षा, कविता, कहानी के माध्यम से पत्रिका को रुचिकर, ज्ञानप्रद एवं उपयोगी बनाने का प्रयास भी किया गया है ताकि यह सभी पाठकों को आत्मीय आनंद प्रदान कर सके।

मैं आशा करती हूँ कि पत्रिका का यह अंक आप सभी को अवश्य पसंद आएगा। पत्रिका के पिछले अंक "बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध" हेतु आपसे प्राप्त हुई बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं तथा सुझावों के लिए मैं आप सभी की हृदय से आभारी हूँ और यह आशा करती हूँ कि आपका मार्गदर्शन, स्नेह और प्रोत्साहन हमारी पत्रिका को आगे भी यूँ ही मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित!

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबंधक – राजभाषा)

बैंक को पुरस्कार

इंडियन बैंक एसोसिएशन (आईबीए) द्वारा मुंबई में आयोजित समारोह में माननीय वित्त मंत्री सुश्री निर्मला सीतारमण की गरिमामयी उपस्थिति में माननीय वित्त राज्य मंत्री डॉ. भगवत किशनराव कराड के करकमलों से वित्त वर्ष 2021-22 के ईज 4.0 रिफोर्म इंडेक्स अवार्ड की दो श्रेणियों में पंजाब नैशनल बैंक के प्रथम उपविजेता चुने जाने पर बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण करते प्रबंध निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं श्री संजय मल्होत्रा, सचिव, वित्तीय सेवाएँ प्रभाग, भारत सरकार, आईबीए के मुख्य कार्यपालक, श्री सुनील मेहता, मुख्य महाप्रबंधक एसएमईएडी, श्री आर. के. साबू, अंचल प्रबंधक मुंबई, श्री बिभु प्रसाद महापात्र और महाप्रबंधक, एमपीडी, श्री मनीष अग्रवाल।

पीएनबी ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आरंभ किये गए एग्री इन्फ्रा फंड अभियान के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार तथा एग्री इन्फ्रास्ट्राक्चर फंड योजना के अंतर्गत समग्र प्रदर्शन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। यह पुरस्कार केंद्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री माननीय, श्री नरेंद्र तोमर ने प्रदान किया। इस अवसर पर भारत सरकार में केंद्रीय राज्य मंत्री कृषि एवं कृषक कल्याण, श्री कैलाश चौधरी, महाप्रबंधक पीएनबी, श्री अरुण शर्मा व उप महाप्रबंधक पीएनबी, श्री कुलदीप सिंह राणा सहित अन्य गणमान्य अतिथि मौजूद थे।

पंजाब नैशनल बैंक बना रूपे क्रेडिट कार्ड पर यूपीआई आरंभ करने वाला पहला बैंक

पंजाब नैशनल बैंक रूपे क्रेडिट कार्ड पर यूपीआई आरंभ करने वाला पहला बैंक बना। मुंबई में इसके लॉन्च के अवसर पर भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर श्री शक्तिकांत दास के करकमलों द्वारा पीएनबी के "क्रेडिट कार्ड पर यूपीआई" तथा "यूपीआई लाइट" का आरंभ किया गया। इस अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल तथा कार्यपालक निदेशक, श्री कल्याण कुमार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

प्रथम तिमाही वित्तीय परिणाम : 2022-23

बैंक के तिमाही वित्तीय परिणाम की घोषणा के अवसर पर वर्चुअल प्रेस मीट करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशकगण, श्री संजय कुमार, श्री कल्याण कुमार।

राजभाषा हिंदी – दशा एवं दिशा

(ओम प्रकाश गैरोला, प्रबंधक (सेवानिवृत्त), देहरादून मंडल कार्यालय)

किसी भी जाति, देश, समाज एवं संस्था के संगठन और संविकास के लिए भाषा तथा लिपि की समानता प्रत्यक्षत: परमावश्यक है। भाषा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का प्रतीक एक सामाजिक क्रिया है जो विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। विचारों का जन्म और विकास मातृभाषा की ही गोद में होता है। हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है, जो सिर्फ सीखी जा सके, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की संवाहक है। इसके माध्यम से आप लगभग 5 हजार वर्ष पुरानी संस्कृति से जुड़ सकते हैं। यही कारण है कि भारत के साथ-साथ हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। एक शोध के अनुसार हिंदी वर्तमान में विश्व में सर्वाधिक बोली व जानी जाने वाली भाषा है।

भारतीय संदर्भ:- वह दिन ऐतिहासिक था जब 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, सत्ता का हस्तांतरण हुआ और 26 जनवरी 1950 को देश में गणतंत्र लागू हुआ। वह दिन गौरवपूर्ण था जब संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित किया। वह दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होगा जब सम्पूर्ण देश का कार्य आर्यभाषा हिंदी में होगा, अर्थात हिंदी न केवल "राष्ट्रभाषा" अपितु राजभाषा के रूप में सर्वमान्य व सर्वस्वीकार्य होगी। यहाँ पर चर्चा के केंद्र में भाषा, मातृभाषा, जनभाषा, संपर्क का सम्यक विवेचन संगत होगा।

भाषा:- भाषा को यदि परिभाषा बद्ध करें तो स्पष्ट है कि यह मानव मात्र के बीच भावों को आदान-प्रदान करने वाले व्यक्त एवं स्पष्ट ध्वनि संकेतों की व्यवस्था और अभिरूप हैं। यही ध्वनि संकेत व्यवस्थित होकर भाषा का निर्माण करते हैं। भाषा मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। भाषा के माध्यम से ही उसे देशकाल और समाज का बोध होता है। भाषा अनुपम उपलब्धि है। भाषा से समाज बना। समाज ने भाषा का संवर्धन किया। भाषा सामूहिक संपदा है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का समूचा ज्ञान भारतीय भाषाओं में उगा।

मातृभाषा:- किसी भी क्षेत्र के निवासी व समुदाय के लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं को जिस भाषा, बोली व भावों में व्यक्त करते हैं वह उनकी मातृभाषा कहलाती है। जर्मनी के बर्जबर्ग विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में कहा है कि 'नवजात' गर्भावस्था में ही अपनी मातृभाषा समझने लगते हैं और उसी भाषा में रोते हैं। यह अध्ययन एक अमेरिकी पत्रिका **'जर्नल करेंट बायोलॉजी'** में प्रकाशित हुआ था। मातृभाषा हमें माँ के गर्भ से ही मिल जाती है, अर्थात माँ की जो भाषा होती है, वो हमारी मातृभाषा होती है।

राष्ट्रभाषा:- प्रत्येक राष्ट्र की एक भाषा होती है, जिसमें जनमानस भावाभिव्यक्ति एवं विचारों का सम्प्रेषण करता है। राष्ट्रवासियों द्वारा प्रयुक्त वह भाषा जिसके माध्यम से विश्व में होने वाले परिवर्तनों और प्रगति की जानकारी अधिकांश लोगों को दी जाती है तथा राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज व राष्ट्रगान की भांति सम्माननीय हो, उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा होती है। भाषा को जब राष्ट्रीय संदर्भों में देखा व परखा जाता है तो वह भावों को व्यक्त करने का माध्यम मात्र नहीं रह जाती, अपितु अनेकता में एकता तथा समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का आधार भी बन जाती है। भारत के सन्दर्भ में यह हिंदी ही हो सकती है।

राजभाषा:- राजभाषा किसी भी देश की संवैधानिक मान्यता प्राप्त प्रशासनिक भाषा होती है। जिसका उल्लेख कागजातों में होता है। खंड-खंड में ही सही हिंदी राजभाषा व राष्ट्रभाषा बनने की यात्रा में अग्रसर है। राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी ने भी कहा है कि "हिंदी की विविधता तो नवीनता का सामंजस्य है, यही उसकी प्रमुख विशेषता है।"

संवैधानिक व्यवस्थाएं एवं राजभाषा:- 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया था और तभी से हर वर्ष 14 सितंबर को पूरे देश में हिंदी दिवस मनाये जाने की औपचारिकता का निर्वाह किया जा रहा है। भारतीय संविधान के भाग 5, 6 एवं 17 के कुल 11 अनुच्छेदों

में संघ की राजभाषा हिंदी का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। भाग 5 में अध्याय 1 के अंतर्गत अनुच्छेद 120, भाग-6 [अध्याय 2] के अंतर्गत अनुच्छेद 210 तथा संविधान के भाग 17 के चार अध्यायों में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में विशद विवेचन किया गया है। भाषाई आधार पर देश का 'क', 'ख' व 'ग' क्षेत्रों में वर्गीकरण किया गया है।

राजभाषा हिंदी ही क्यों?:- संवैधानिक उपबंधों एवं व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में प्रश्न उठता है कि राजभाषा हिंदी ही क्यों? निम्नोक्त तथ्यों से इसे स्पष्ट किया जा सकता है:-

1. हिंदी भारत के हृदय की कुँजी है।
2. सरल, सक्षम एवं वैज्ञानिक भाषा है।
3. आर्यभाषा हिंदी संतुष्टि की कसौटी है।
4. आत्मगौरव की प्रतीक- हिंदी।
5. जनभाषा, संपर्क एवं राष्ट्रभाषा।
6. सूचना प्रौद्योगिकी के लिए उपयुक्त भाषा।

राजभाषा - दशा एवं दिशा:- यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि हिंदी को राजभाषा व राष्ट्रभाषा बनाये जाने के समस्त सरकारी प्रयास लगभग 72 वर्ष पूरे कर चुके हैं। लेकिन सालाना स्थायी और संकल्प की रस्मों रवायत से आगे वह कितना बढ़ी है तथा इसके क्रियान्वयन के दायित्वधारी किस प्रकार इसमें अपना सहयोग दे रहे हैं, यह प्रश्न आज भी हिंदी दिवस के गर्भ में करवटें ले रहा है। यह विषय विशद है, अत: विस्तार दोष को ध्यान में रखते हुए निम्नोक्त शीर्षकों के माध्यम से दशा एवं दिशा का निरूपण किया जा सकता है:-

प्रसिद्ध न्यायविद एवं प्रखर हिंदी प्रेमी डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने भी लिखा है:-

"हिंदी आज चाहती हमसे, हम सब निश्चल अन्तस्थल से ।
सहज विनम्र अथक यत्नों से, मांगे न्याय आज से कल से ।।

सरल हिंदी एवं राष्ट्रीय एकता:- हिंदी भाषा उस अथाह समुद्र जलराशि की भांति है, जिसमें अनेक नदियाँ मिली हैं। निषाद, शबर, उरांव आदि मुंडा भाषाओं ने हिंदी को अनेक शब्द दिए हैं तथा वाटिका को समस्त क्षेत्रीय भाषाओं ने सींचा हैं। सरल हिंदी व राष्ट्रीय एकता व अखंडता में गहरा संबंध है। हमारा देश विविधताओं से भरा है, और इस विविधता में समरसता का भाव है तथा इस भाव की अभिव्यक्ति होती है- हिंदी के माध्यम से, देश के किसी भी कोने में चले जाइए, हिंदी आपका साथ देगी। यह संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है- मानव संसाधन प्रबंधन एवं सांगठनिक आत्मीयता में भी हिंदी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद नें भी कहा है कि 'जिस देश को अपनी भाषा व साहित्य पर गर्व का अनुभव न हो वह कभी उन्नत नहीं हो सकता व उसकी एकता संदिग्ध रहती है।'

हिंदी का सामर्थ्य एवं सार्थकता:- इसे तो अपनों ने लूटा गैरों में कहाँ दम था।" प्राय: भाषा को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में ही परिभाषित किया जाता है, परन्तु सच पूछिए तो भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं होती, अपितु इसके साथ उस समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्य भी जुड़े हैं। हिंदी का जलवा अंग्रेज और अन्य विदेशी भी मान चुके हैं। डॉ. मैग्रेसर का भी मानना था, हिंदी दुनिया की महानतम भाषाओं में एक है। भारत को समझने के लिए हिंदी अनिवार्य है।" वर्तमान में हिंदी देश के अधिसंख्य लोगों की मातृभाषा के रूप में अपने महत्व का प्रतिपादन कर रही है।

राजभाषा हिंदी की अंतर्वस्तु:- यदि बोलचाल, पत्राचार, सम्भाषण, सभा-सम्मेलन और परिचर्चा में कोई उपयुक्त शब्द न मिले तो संस्कृत व अन्य भाषाओं के समानार्थी व प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने में कोई हानि नहीं है। यहाँ तक कि अंग्रेजी के रोमन शब्दों का प्रयोग कर भी अपने आशय को स्पष्ट किया जा सकता है। परन्तु जानबूझकर भाषा को उच्च, गूढ़ व व्यंग्यात्मक बनाना हिंदी के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है। जैसा कि हम बैंकिंग की ही बात करें और किसी के द्वारा प्रस्तुत ऋण आवेदन पर अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार नहीं दे सकते- 'प्रिय ग्राहक आपका ऋण आवेदन प्राप्त हुआ। इसे पढ़कर हृदय कमल खिल उठा। हम आपको ऋण नहीं देंगे भला, कभी आप अपनी तशरीफ़ का टोकरा हमारे बैंक में लाइयेगा, ताकि कभी हम आपको, कभी खुद को और कभी अपने बैंक को देख सकें!.........' आदि भावुक, अलंकारिक, लाक्षणिक और व्यंगात्मक भाषा का बैंक में कोई मतलब नहीं। बैंकिंग की हिंदी द्विअर्थी न हो बल्कि आशय को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने वाली हो। सेवाओं के प्रकार भिन्न हो सकते हैं। परन्तु उन्हें प्रदान करने का माध्यम एक ही है- भाषा, ग्राहक की भाषा में सेवा व संतुष्टि का स्तर उन्नत होता है। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3[4] में ग्राहकों के हित को महत्व दिया गया है। गोपनीयता का भी ध्यान रखा जाता है। ई-आरडी, ई-एफ.डी.आर., ई-खाता विवरण, ई-म्यूच्यूअल फंड में इंटरनेट के माध्यम से भाषा चुनने की स्वतंत्रता है। कभी-कभी भाषा चयन में तकनीकी समस्या आ जाती है। ओरेकल सॉफ्टवेयर हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी को अधिक सपोर्ट करता है। अंग्रेजी एसएमएस में 160 शब्द का एक वाक्य माना जाता है जबकि हिंदी में 60 शब्द हिंदी में व्यय साध्य है।

राजभाषा कार्यान्वयन:- बैंकिंग क्षेत्र व भारत सरकार के अन्य उपक्रमों में भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दशा व दिशा भी संवैधानिक उपबंधों के अनुसार निर्धारित होती है। राजभाषा अधिनियम, 1963 [यथा संशोधित 1967], राजभाषा संकल्प 1968 और राजभाषा नियम 1976 के प्रावधानों के आधार पर कार्य होता है। परन्तु एक विडंबना है कि पूरे विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहाँ का अधिकांश कामकाज अभी भी तथा कथित अभिजात्यता व विशिष्टता बोध के कारण अंग्रेजी में होता है। अंग्रेजी को विश्वभाषा व अंतरराष्ट्रीय जनसंपर्क की भाषा का भ्रम पालकर हम हिंदी पर उसे प्राथमिकता देते हैं।

राजभाषा–कार्यपालकों का दायित्व :- राजभाषा कार्यान्वयन का मुख्य दायित्व कार्यालय प्रधान का होता है। इस संबंध में राजभाषा अधिनियम 1976 का नियम 12 महत्वपूर्ण है। इसमें अनुपालन के उत्तरदायित्व की स्पष्ट व्याख्या की गई है। कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वे देखें कि अधिनियमों – नियमों के उपबंधों व उपनियम 2 के अधीन जारी निर्देशों का अनुपालन हो रहा है या नहीं, भाषा प्रयोग की जाँच पड़ताल करने का दायित्व कार्यपालक प्रधान व मुख्य कार्यपालक का होता है।

राजभाषा और हिंदी अधिकारी:- संघ के शासकीय प्रयोग एवं भारत सरकार के कार्यालयों, मंत्रालयों, उपक्रमों, विभागों, केंद्र सरकार द्वारा गठित आयोगों, निगमों, कंपनियों व राजभाषा समितियों में एक प्रेरक के रूप में हिंदी (राजभाषा) के कार्यान्वयन को मूर्त रूप देने के लिए राजभाषा (हिंदी) अधिकारियों की नियुक्ति की गई है, चूँकि राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 में कोई दंडात्मक प्रावधान नहीं किये गए हैं। तात्पर्य यह है कि राजभाषा क्रियान्वयन का मामला पारस्परिक सहयोग और सहिष्णुता पर आधारित है। हिंदी अधिकारियों को अधिकार नहीं दिए गए हैं, परंतु उनसे अपेक्षाएं असीमित हैं। उन्हें अनुवाद कार्य के साथ-साथ अनुवाद की जाँच भी करनी पड़ती है। हिंदी अधिकारी महाभारत के अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह में फंसा अकेला योद्धा है, जो अंग्रेजियत से निरंतर अपमानित व उपेक्षित होने के बावजूद अंग्रेजी के खिलाफ लड़ रहा है तथा संवैधानिक उपबंधों के अनुरूप हिंदी के प्रगामी प्रयोग तथा प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है। हिंदी अधिकारी व राजभाषा विभाग से जुड़े अधिकारी/कर्मचारी अपनी सफलता, उदारता जैसे आदर्श गुणों को जीवन में अपनाकर अपने इसी वैयक्तिक वैशिष्ट्य तथा ओजपूर्ण व्यक्तित्व के कारण अधीनस्थ स्टाफ से लेकर उच्च प्रबंधन को प्रेरित करने का कार्य करते हैं।

कार्यान्वयन संबंधी बाधाएं:- प्रश्न उठता है कि तमाम संवैधानिक व्यवस्थाओं, सरकारी तामझाम और प्रयासों के बावजूद भी हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाने व सुचारू कार्यान्वयन में दिक्कतें आ रही हैं। मेरी दृष्टि में निम्नोक्त कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं:-

1. कठिनाई का मूल मानसिकता में हैं। अंग्रेजी के साथ अभिजात्यता व विशिष्टता बोध/नगण्य ज्ञान होने पर भी अंग्रेजी में कार्य।
2. संदर्भ साहित्य का अभाव व परीक्षाओं का माध्यम मुख्यत: अंग्रेजी।
3. संवैधानिक उपबंधों का समुचित पालन न होना। दायित्वाधीन अधिकारियों का अंग्रेजी के प्रति मोह।
4. हिंदी भावी राज्यों में हिंदी के प्रति हीनता ग्रंथि। कार्यान्वयन के आंकड़े बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना।
5. कार्यालयों में हिंदी अधिकारी होने पर कार्यालय प्रधान व अन्य कर्मचारी स्वयं को हिंदी में कार्य करने से स्वत: ही निवृत्त मान लेते हैं। कार्यक्रमों में चहेतों को उपकृत करना।

कार्यान्वयन – कुछ सुझाव:- राजभाषा की दिशा व दशा सही रहे, कुछ व्यवहारिक सुझाव इस प्रकार हैं:-

1. प्रवेश परिचय पाठ्यक्रम सरल, सुबोध व सुग्राहय भाषा में हों। क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग किया जाए। वित्तीय समावेशन के लिए वित्तीय शिक्षण व शिक्षण की भाषा सर्वग्राहय हो।
2. ग्राहक की भाषा में कार्य व वार्तालाप। अनुवाद की बजाय मौलिक चिंतन पर जोर। संवैधानिक व्यवस्थाओं का समुचित अनुपालन। योजनाओं का प्रचार हिंदी में।
3. शिक्षा व परीक्षाओं का माध्यम हिंदी व क्षेत्रीय भाषाएं हों।
4. राजभाषा कार्यान्वयन में चूक पर दंड का भी प्रावधान हो। राजभाषा में कामकाज की गति ऊपर से नीचे की ओर हो।
5. सूक्ष्म वित्तीयन (माइक्रो फाइनेंस) का विस्तार ग्रामीण अंचल में उनकी भाषा में योजनाओं का प्रचार हो। समस्त सामजिक सुरक्षा योजनाओं का प्रचार हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में आवश्यक है।
6. हिंदी में कार्य करने में झिझक रखने वालों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन हो। सार्वभौम प्रारूप व शब्दावली का निर्माण किया जाए।

हिंदी विश्वभाषा:- हिंदी को विश्वभाषा बनाने के लिए सरकारी, व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से सघन प्रयास जारी हैं। इसके लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, विदेश मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को देशी-विदेशी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए नए पाठ्यक्रमों को बनाना होगा। अभी तक यह प्रचलित था कि विश्व में बोली जाने वाली हिंदी सबसे बड़ी दूसरी भाषा है। परन्तु अब डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, महानिदेशक, वैश्विक हिंदी शोध संस्थान देहरादून (पूर्व उपमहाप्रबंधक, कॉर्पोरेशन बैंक अब यूनियन बैंक) ने अपने शोध से सिद्ध किया है कि हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली व प्रयोग की जाने वाली भाषा है। डॉ. नौटियाल के अनुसार आंकड़े इस प्रकार है:-

भारत में	– 1,16,61,45,320
भारत से बाहर	– 17,48,41,280
शरणार्थी/अप्रवासी	– 1,60,00,000
	1,35,69,86,600

- हिंदी 1356 मिलियन
- अंग्रेजी 1268 मिलियन
- मंदारिन 1120 मिलियन
- स्पेनिश 538 मिलियन
- फ्रेंच 277 मिलियन

विशेष:- वर्ष 1981 से प्रारंभ अपने इस शोध को हर दो वर्ष में अद्यतन कर 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर प्रकाशित करने का क्रम डॉ. नौटियाल अत्यंत परिश्रम से कर रहें हैं। डॉ. नौटियाल के शोध को हिंदी के संदर्भ में वैश्विकता के जो 7 मानदंड अधिक प्रमाणिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं, वे इस प्रकार हैं 1. लिखने-बोलने में सरलता। 2. सुलभता 3. ग्राहयता 4. सार्वजनीयता 5. धर्म, जाति, वर्ण व कालादि बन्धनों से परे 6. राष्ट्रीयता 7. अंतरराष्ट्रीयता।

हिंदी की देवनागरी लिपि को सर्वाधिक वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक माना गया है। सभी क्षेत्रीय भाषाओं व उर्दू का प्रतिनिधित्व भी हिंदी करती है। उर्दू व हिंदी अलग-अलग नहीं हैं, अपितु एक भाषा हैं। उर्दू का जन्म हिंदी से हुआ है, अत: उर्दू हिंदी की एक बोली व शैली है। इसलिए उर्दू बोलने वालों को हिंदी बोलने वालों में गिना जाना चाहिए। डॉ. नौटियाल एक प्रतिष्ठित लेखक, सफल बैंकर, चिन्तक एवं शोधकर्ता भी हैं।

कुछ प्रासंगिक तथ्य:- 'राजभाषा हिंदी-दशा एवं दिशा के समीक्षात्मक विवरण के साथ-साथ कुछ प्रासंगिक तथ्य विषय-वस्तु को स्पष्ट करने व इसकी देवनागरी लिपि - राजलिपि रही है'

1. हिंदी के उत्थान के सेतु हैं – रोजगार प्रदाता, स्कूल-कॉलेजों में शिक्षण का माध्यम हिंदी होना, फिल्में, टेलीविजन, धारावाहिक और विज्ञापन, पत्र-पत्रिकाएं, हिंदी में लेखन, सरकारी, गैर-सरकारी संगठनों का कामकाज हिंदी में, हिंदीतर भाषियों को एकजुट किया जाना। न्यायालयों में अभी भी अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है।
2. हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली प्रयोजनमूलक हिंदी का महत्वपूर्ण अंग है। कृत्रिम निर्माण, अनुकूलन, एकरूपता स्पष्ट अर्थवत्ता तथा स्वीकरण के द्वारा ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं के लिए लगभग 8 लाख शब्द गढ़े गए हैं। विधि शब्दावली, मीडिया शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, मानविकी एवं समाज विज्ञान की शब्दावली प्रकाशित हो चुकी हैं।
3. 'ग' क्षेत्र के जिन 10 राज्यों की 40 प्रतिशत जनता हिंदी को समझती है उसे 'ख' क्षेत्र में वर्णित करने हेतु प्रयास होने चाहिए। तत्पश्चात शेष 7 राज्यों पर विचार हो।
4. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के साथ-साथ ही अनुच्छेद 351 के अनुसार व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। न्यायपालिका की भाषा हिंदी हो इस पर जिम्मेदार लोगों का मौन संशय पैदा करता है।
5. भाषा के रूप में अंग्रेजी का ज्ञान बुरा नहीं हैं, परन्तु भारत के लिए अंग्रेजी केवल भाषा नहीं, अपितु पराधीनता का स्मारक है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भाषा हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाएं थीं। अंग्रेजी को विश्वभाषा बताने वाले आत्महीन ग्रंथि के शिकार हैं।
6. भारत की भाषिक एकता और विविधता पर हुई परिचर्चा में यूनेस्को ने माना कि पिछले 50 वर्षों में भारत की लगभग 220 भाषाएं लुप्त हुई हैं। अत: भारतीय भाषाओं का एक विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए ताकि समस्त भाषाओं के बीच बेहतर तालमेल स्थापित हो सके।
7. भाषा से आत्मनिर्भरता की राह मिलती है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं औपनिवेशिक मानसिकता से उबारती हैं तथा स्वायत होने की संभावना बढ़ाती है। लिहाजा इन भाषाओं की उपेक्षा राजभाषा की दशा व दिशा को भी बदल सकती हैं। यदि नई शिक्षा नीति के पालन में हिंदी व भारतीय भाषाओं के प्रति लगाव पैदा किया जा सके तो एक महान कार्य हो सकता है, अन्यथा हम पश्चिम के पिछलग्गू मात्र बने रहेंगे।

8. भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी के वर्चस्व से निपटने के लिए एकजुटता दिखायें व साझा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, शब्द भंडार और लिपि के स्तर पर साथ आयें। संसदीय राजभाषा समिति की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने अंग्रेजी के विकल्प के रूप में हिंदी को अपनाने का आग्रह किया।
9. सरकार को नहीं भूलना चाहिये कि भारतीयता का मूल स्वर मुखरित करने वाली लिपि 'नागरी' और भाषा हिंदी ही है। हिंदी सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का महिमा मंडन करती है, अत: राष्ट्रभाषा व राजभाषा के रूप में हिंदी ही वरेण्य है।
10. संविधान के अंग्रेजी संस्करण में हिंदी के लिए,'एडिशनल लैंग्वेज' शब्द का प्रयोग किया है। पूरे विश्व में 1356 मिलियन की भाषा, 206 देशों में प्रयुक्त, 160 देशों में बोली जाने वाली, विश्व के 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली, भारत के लगभग 116 करोड़ की भाषा जो हमारी राजभाषा भी है कोई अतिरिक्त भाषा [Additional Language] कैसे हो सकती है।

पंजाब नैशनल बैंक एवं हिंदी:- राष्ट्रीयकृत बैंकों में प्रमुख, प्रथम स्वदेशी बैंक और प्रौद्योगिकी उन्नयन में भी अग्रणी विकास [FINANCIAL INCLUSION & INCLUSIVE GROWTH] के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्य कर रहा है, वहीं राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग, प्रचार-प्रसार तथा दशा व दिशा को अनुकूल रूप से प्रभावित करने में भी समस्त बैंकिंग उद्योग का नेतृत्व करने की क्षमता रखता है।

अंत में:- हॉलैंड के प्रसिद्ध हिंदी विद्वान 'आलफंस' ने कितना सटीक कहा है ''भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। हिंदी व इन भाषाओं के बीच में अंग्रेजी कैसे संपर्क भाषा बन सकती है। क्या दिल्ली से हैदराबाद का रास्ता लन्दन से होकर निकलता है।''

मेरी स्पष्ट धारणा है कि यदि सभी संबंधित व्यक्ति व संस्थाएं स्वयं को राजभाषा रूपी वाहन के 'यात्री' व 'सहयात्री' न मानकर 'चालाक' एवं 'परिचालक' मानकर चलेंगे तो निश्चित रूप से वाहन अपने गंतव्य पर समय पर पहुँचेगा। यह बात सभी की चिंता व चिंतन के दायरे में होनी चाहिए। निम्नोक्त पंक्तियाँ प्रेरणा देने का काम करेंगी:-

"भाषा के संसार की सरताज है हिंदी,
अभिव्यक्ति का एक सुमधुर साज है हिंदी।
राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता का प्रतीक ही नहीं,
भारत की आत्मा की आवाज है हिंदी।"

एक सुबह ऐसी भी हो

रजनी राउत, शाखा प्रमुख, आर्वी नाका रोड, वर्धा नागपुर मंडल

एक सुबह ऐसी भी हो
ना दिन हो ना रात हो
चारों ओर बस प्रकाश हो
धूप निकले आंगन में
चुरा के जो सूरज से
बस हल्की ठंड का एहसास हो
एक सुबह ऐसी भी हो।।

नदी निकले सागर से
सीप में पलते हो मोती
हवाओं की सरसराहट हो
चिड़ियों की चहचहाहट हो
आंचल में हो नीला आकाश
ना आँसू हो ना उदासी हो
एक सुबह ऐसी भी हो।।

हर लब पे हो बस एक प्यारी मुस्कान
ना क्रोध हो ना हो अभिमान
उम्मीदों की हो तपिश
हर लम्हा हो गज़ल
हो रेशमी स्मृतियों की निर्झर बरसात
एक सुबह ऐसी भी हो।।
एक सुबह ऐसी भी हो।।

पी.एन.बी वन ऐप

(धीरेंद्र मंडावत, वरिष्ठ प्रबंधक आईटी, मण्डल कार्यालय, गाँधीनगर)

पी.एन.बी वन (PNB ONE) एक मोबाइल बैंकिंग ऐप्लिकेशन हैं। इस एक ही प्लेटफॉर्म पर आप विभिन्न प्रकार की बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं । इस ऐप के माध्यम से आप बिना शाखा गये अपने बैंकिंग संबंधी कार्यों को पूर्ण कर सकते हैं। इससे समय व धन दोनों की ही बचत होती है। यह सुविधा 24x7 उपलब्ध है। सुरक्षा के लिहाज से इसमें एमपिन (MPIN) के साथ बायोमेट्रिक का इस्तेमाल किया गया है। इस ऐप में लेनदेन करने के लिए आपको पासवर्ड की भी जरूरत होती है। जो आपको अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करता है।

पीएनबी वन (PNB ONE) ऐप की विशेषता :-

पीएनबी वन(PNB ONE) ऐप की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पीएनबी वन (PNB ONE) को हम भारत की 12 भाषाओं में इस्तेमाल कर सकते हैं। जो इस प्रकार है,- अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, पंजाबी, तमिल, तेलगु मलयालम, कश्मीरी, कन्नड़, असमिया आदि । डेबिट कार्ड को अस्थायी रूप से चालू और बंद करने के लिए भी इस ऐप का इस्तेमाल किया जा सकता है। यह ऐप ग्राहकों को वर्चुअल डेबिट कार्ड प्राप्त करने की सुविधा भी देता है। वर्चुअल डेबिट कार्ड प्राप्त करने के लिए आपको ऐप में सबसे पहले लॉग इन करना होगा। डेबिट कार्ड ऑप्शन में जाकर वर्चुअल डेबिट कार्ड प्राप्त कर सकते हैं। इस ऐप के जरिये ग्राहकों को ध्वनि सहायता (Voice Assistance) का लाभ भी मिलेगा। इसके अलावा इस ऐप के माध्यम से उपयोगकर्ता वैल्यू ऐडेड विकल्प के द्वारा इनकम टैक्स रिटर्न दाखिल करने के लिए टीडीएस/फॉर्म16 प्रमाण पत्र जेनरेट करने, डुप्लिकेट चालान बनवाने, सुकन्या समृद्धि खाते को ऐप से लिंक करके पैसा ट्रांसफर करने, पीपीएफ खाते में पैसे जमा करना एवं ऑनलाइन डी-मैट अकाउंट खोल सकते हैं और डी-मैट खाते को लिंक भी कर सकते हैं । इसके अलावा एफडी और फॉर्म-26 एएस जैसी सुविधाओं का प्रयोग भी कर सकते हैं। पीएनबी वन ऐप के जरिये ग्राहक 10 लाख रुपये तक का फंड ट्रांसफर कर सकते हैं। इसकी डिफ़ॉल्ट लिमिट 2 लाख रुपये है, जो 10 लाख रुपये तक बढ़ाई जा सकती है। इसके अलावा भी ऐप से कई सुविधाएं ग्राहकों को मिलेगी। जैसे डेबिट कार्ड को आप अपने हिसाब से संचालित कर सकते हो, इस ऐप के माध्यम से ग्राहक अलग- अलग तरह के कई बिल जैसे मोबाइल बिल, लैंडलाइन, डीटीएच, बिजली का बिल आदि सभी चीजों का भुगतान कर सकते हैं। एम पासबुक के जरिये अपने खातों का स्टेटमेंट देख एवं डाउनलोड कर सकते है। ऐप के जरिए आप पॉजिटिव पे सिस्टम से चेक को वेरीफाई कर सकते हैं। आप एनपीएस आदि खातों में पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं पीएनबी वन के द्वारा पैसा ट्रांसफर करने, यूजर आईडी बदलने, ट्रांजेक्शन पासवर्ड बदलने आदि के डेमो विडियो आप यूट्यूब पर भी देख सकते है। अंत में पीएनबी वन (PNB ONE) से लॉग आउट करते समय फीडबैक का ऑप्शन भी दिखाई देगा।

पीएनबी वन (PNB ONE) का ऐसे करें रजिस्ट्रेशन

1. पहले प्ले स्टोर से पीएनबी वन ऐप (PNB One App) डाउनलोड करें।
2. ऐप पर न्यू यूजर पर क्लिक करें।
3. इसके बाद अपना बैंक अकाउंट नंबर दर्ज करें।
4. रजिस्ट्रेशन के लिए मोबाइल बैंकिंग या फिर इंटरनेट बैंकिंग को सेलेक्ट करें।
5. अब एक प्रोफाईल –व्यू ओनली या फिर व्यू एंड ट्रांजेक्शन सेलेक्ट करें।
6. आपके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर ओटीपी आएगा। इसे दर्ज करें और कंटिन्यू पर क्लिक करें।
7. ओटीपी दर्ज करने के बाद डेबिट कार्ड की डिटेल्स दर्ज करें।
8. सफलतापूर्वक वैलिडेशन के बाद लॉग इन और ट्रांजेक्शन पासवर्ड सेट करें।
9. पासवर्ड सेट करने पर रजिस्ट्रेशन हो जाएगा।

अब आप साइन इन पर क्लिक करके ऐप का प्रयोग कर सकते हैं।

देश सेवा में तत्पर-पंजाब नैशनल बैंक

पंजाब नैशनल बैंक ने बैंक की प्रमुख योजना पीएनबी रक्षक प्लस के तहत रक्षाकर्मियों के लिए विशेष रूप से तैयार किये गए उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। इस अवसर पर भारतीय वायु सेना की ओर से चीफ ऑफ एयर स्टाफ, एयर चीफ मार्शल, श्री विवेक राम चौधरी, बैंक के प्रबंध निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल को प्रतीक चिन्ह भेंट करके सम्मानित करते हुए। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री विजय दुबे तथा मुख्य महाप्रबंधक, श्री सुनील सोनी।

भारतीय सेना के मुख्यालय, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पीएनबी और भारतीय सेना के मध्य पीएनबी रक्षक प्लस योजना के अंतर्गत हुए समझौता ज्ञापन के दौरान हस्ताक्षरित ज्ञापन का आदान-प्रदान करते भारतीय सेना की ओर से मेजर जर्नल, श्री अशोक सिंह, (बाएं) मेजर जर्नल राज सिन्हा, सीडीबीए (एकदम बाएं) और पीएनबी के कार्यपालक निदेशक, श्री विजय दुबे, (एकदम दायें) एवं बैंक के मुख्य महाप्रबंधक, श्री सुनील सोनी (दायें)।

देश सेवा में तत्पर-पंजाब नैशनल बैंक

असम रायफल्स मुख्यालय, शिलांग में पंजाब नैशनल बैंक ने पीएनबी रक्षक प्लस योजना के लिए असम रायफल्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। ले. जनरल. पीसी. नायर, एवीएसएम, वाईएसएम, महानिदेशक, असम रायफल्स को स्मृति चिन्ह सौंपते हुए श्री सुनील सोनी, मुख्य महाप्रबंधक।

पंजाब नैशनल बैंक ने इंडियन कोस्ट गार्ड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इस अवसर पर एडीजी, इंडियन कोस्ट गार्ड श्री राकेश पाल को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए बैंक के महाप्रबंधक, श्री राजीव कुमार। साथ में हैं, बैंक के मुख्य रक्षा बैंकिंग सलाहकार, मेजर जनरल राज सिन्हा और श्री गिरवर कुमार अग्रवाल, उप महाप्रबंधक।

बनारस - एक बेमिसाल व जीवंत शहर

(बृज गोपाल दास, उप-प्रबंधक (सेवानिवृत्त), शाखा विशेश्वरगंज, वाराणसी)

बनारस जिसे वाराणसी और काशी के नाम से भी जानते हैं, पतितपावनी माँ गंगा के तट पर बसा विश्व के प्राचीनतम एवं पवित्र नगरों में से एक है। इसे अविमुक्त क्षेत्र माना जाता है। लोगों की मान्यता है कि यहाँ मरने पर मोक्ष मिलता है लेकिन बनारस मरना नहीं, जीना सिखाता है। प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन लिखते हैं - "बनारस इतिहास से भी अधिक पुरातन है, परंपराओं से भी अतिशय पुराना है, किवदंतियों (मिथकों) से भी कहीं अधिक प्राचीन है और जब इन तीनों को एकत्र कर दें तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है ।" इसका इतिहास पौराणिक काल से जुड़ा हुआ है। स्कंद पुराण, पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, महाभारत, रामायण के साथ-साथ प्राचीनतम ऋग्वेद में भी इसका उल्लेख है। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नगर को धार्मिक, शैक्षणिक एवं कलात्मक गतिविधियों का केन्द्र बताया है।

बनारस अपने ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व के कारण संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संसदीय क्षेत्र होने के कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। इसका विस्तार गंगा नदी के दो संगमों - वरूणा नदी और असी नदी के बीच बताया जाता है जिनके बीच की दूरी लगभग 2.5 मील है। मशहूर शायर नजीर बनारसी लिखते हैं -

"लेके अपनी गोद में, गंगा ने पाला है मुझे
नाम है मेरा नजीर और मेरी नगरी बेनजीर"

बनारस में विभिन्न कुटीर उद्योग हैं जिनमें बनारसी रेशमी साड़ी उद्योग, कपड़ा उद्योग, कालीन उद्योग, हस्तशिल्प, लकड़ी व मिट्टी के खिलौने व सजावटी सामान प्रमुख हैं । बनारसी मगही पान विश्व प्रसिद्ध है। इसकी खासियत यह है कि इसे चबाना नहीं पड़ता। मुँह में डालते ही पूरे मुँह में घुल जाता है। बनारस के मशहूर लंगड़ा आम और मलइयो के लोग दीवाने हैं। बनारसी रेशम विश्व भर में अपनी महीनता एवं मुलायमपन के लिए विख्यात है। बनारसी रेशमी साड़ियों पर बारीक डिजाइन और जरी का काम साड़ी की सुंदरता और गुणवत्ता को कई गुणा बढ़ा देते हैं जिस कारण ये साड़ियाँ आज भी वैवाहिक कार्यक्रमों व सभी पारंपरिक उत्सवों में अपने सामर्थ्य अनुसार पहनी जाती हैं। फिर इन्हें यत्न से संभाल कर रखा जाता है ताकि ये खराब ना हों। मैकाले लिखते हैं - "बनारस की खड्डियों से महीनतम रेशम निकलता है जो सेंट जेम्स और वर्सेल्स के मंडपों की शोभा बढ़ाता है।" जरी, सोने का पानी चढ़ा हुआ चांदी का तार है। जरी के इस कार्य को ज़रदोजी कहते हैं। पहले इसमें शुद्ध सोने की जरी का प्रयोग होता था परंतु इससे साड़ी बहुत महंगी हो जाती है जिससे अब नकली चमकदार जरी का काम होने लगा है।

इसमें अनेकों प्रकार के चमकदार व परंपरागत मोटिफ जैसे बूटी, बूटा, कोनिया, बेल, जाल, जंगला, झालर इत्यादि लगाए जाते हैं। बनारसी साड़ियाँ सुहाग का प्रतीक मानी जाती हैं। हिंदू समाज में बनारसी साड़ी का महत्व चूड़ी और सिंदूर के समान है। आज भी बनारसी साड़ी का बाजार चौक के पास कुँज गली में और मैदागिन के पास गोलघर में प्रतिदिन लगता है।

यहाँ समय-समय पर अनेकों महान विभूतियों का प्रादुर्भाव होता रहा है। महर्षि अगस्त्य, संत कबीर, संत रैदास, बाबा कीनाराम, जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ, रानी लक्ष्मीबाई, लाल बहादुर शास्त्री, मुंशी प्रेमचंद, महाकवि जयशंकर प्रसाद, भारतेंदु हरिश्चंद्र, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां, पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित राजन मिश्र एवं पंडित साजन मिश्र, किशन महाराज, बिरजू महाराज, छन्नूलाल मिश्र, सामता प्रसाद (गुदई महाराज) आदि विभूतियों की जन्मभूमि है, वहीं स्वामी रामानंदाचार्य, वल्लभाचार्य, तैलंग स्वामी, पंडित मदन मोहन मालवीय, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, देवकीनंदन खत्री, डॉक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी, काशीनाथ सिंह, शिव प्रसाद गुप्त आदि विभूतियों ने इसे अपनी कर्मभूमि बनाया। बनारस ने राजा हरिश्चंद्र को शरण दी। गोस्वामी तुलसीदास ने हिंदू धर्म का पवित्र ग्रंथ रामचरितमानस और विनय पत्रिका की रचना यहीं की। गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद अपना प्रथम उपदेश यहीं सारनाथ में दिया था। यह शहर रत्नों की खान है। धर्म, संस्कृति, खेल, नृत्य, संगीत, कला, शिक्षा सभी क्षेत्रों के बनारस से एक नहीं, कई रत्न निकले हैं जिन्होंने देश में ही नहीं विश्व में भारत का नाम रोशन किया है । यहाँ से परोक्ष या अपरोक्ष तरह से जुड़ी आठ महान विभूतियों को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें कई लोगों का जन्म जरूर शहर से बाहर हुआ पर उनकी पढ़ाई-लिखाई और कर्मभूमि बनारस ही रही है। डॉक्टर भगवान दास, लाल बहादुर शास्त्री, पंडित रवि शंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां तो काशी में ही जन्मे थे पर बाकी चार डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन, चिंतामणि नागेश रामचंद्र राव, महामना मदन मोहन मालवीय और भूपेन हजारिका काशी हिंदू विश्वविद्यालय से संबद्ध रहे हैं और उनके लिए काशी बहुत कुछ था।

वाराणसी में 4 बड़े विश्वविद्यालय हैं - काशी हिंदू विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय और सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ हाईयर टिबेटियन स्टडीज। काशी हिंदू विश्वविद्यालय का पूरा कैंपस पेड़-पौधों से हरा-भरा है और किसी शहर से कम नहीं है। यहाँ की इमारतें महल जैसी हैं। ये सिर्फ एक शिक्षण संस्थान नहीं है, बनारस की शान है, विरासत है, अभिमान है। मुख्य परिसर 1360 एकड़ भूमि में स्थित है जिसकी भूमि काशी नरेश ने दान की थी। 75 छात्रावासों के साथ यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है जिसमें लगभग 35000 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। यहाँ की सेंट्रल लाइब्रेरी अब एशिया की सबसे बड़ी साइबर लाइब्रेरी बन गई है। ई-रिसोर्सेज से युक्त 450 कंप्यूटर्स वाली इस अत्याधुनिक लाइब्रेरी की सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होगी। यहाँ के चिकित्सा विज्ञान संस्थान से संबद्ध सर सुंदरलाल चिकित्सालय में रोजाना लगभग 5000 मरीज बहिरंग सेवा (ओपीडी) का लाभ हासिल करने आते हैं। अब तो ट्रामा सेंटर भी खुल चुका है।

यहाँ के स्थानीय निवासी मुख्यतः काशिका भोजपुरी बोलते हैं जो हिंदी की ही एक बोली है। काशी के साहित्यकार काशीनाथ सिंह कहते हैं - 'गुरू' यहाँ की नागरिकता का सरनेम है। जो पैदा भया वह भी गुरु, जो मरा वह भी गुरु। नदियों की कल-कल, घंटे-घड़ियालों और अजान की आवाज सुनकर जागते हुए इस शहर में चेला कोई नहीं है । हर कोई राजा है, प्रजा कोई नहीं है । वर्गहीन समाज का सबसे

बड़ा जनतंत्र है बनारस । इसकी तुलना किसी अन्य शहर से नहीं हो सकती - "लाख मीठा हो तुम्हारे शहर का पानी, वो बनारस तो हो ही नहीं सकता ।"

वाराणसी के प्रमुख मंदिर - यहाँ हर गली में मंदिर है। वाराणसी का सबसे महत्वपूर्ण मंदिर भगवान शिव को समर्पित 'काशी विश्वनाथ मंदिर' है जो चौक के पास ज्ञानवापी क्षेत्र में अनादिकाल से स्थित है और देश के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है । 'बिड़ला मंदिर' या 'नया विश्वनाथ मंदिर' काशी हिंदू विश्वविद्यालय परिसर में स्थित है जो श्वेत संगमरमर से बना है और देश का सबसे ऊँचा मंदिर है। 'काल भैरव मंदिर' विशेश्वरगंज और गोलघर के पास है। भगवान काल भैरव को काशी के कोतवाल के रूप में पूजा जाता है। इनके हाथ में बड़ी एवं मोटे पत्थर की लाठी होने के कारण इन्हें दंडपाणि भी कहते हैं। जो भी प्रशासनिक अधिकारी वाराणसी आता है इनका दर्शन अवश्य करता है। 'माँ अन्नपूर्णा मंदिर' काशी विश्वनाथ मंदिर के पास है जिन्हें अन्न की देवी माना जाता है। दीपावली के दूसरे दिन अन्नकूट महोत्सव पर भक्तगण माँ की स्वर्ण प्रतिमा का दर्शन लाभ करते हैं। इसी मंदिर में आदि शंकराचार्य ने अन्नपूर्णा स्तोत्र की रचना कर ज्ञान वैराग्य प्राप्ति की कामना की थी। 'तुलसी मानस मंदिर' दुर्गाकुंड के पास सफेद संगमरमर से बना है जो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को समर्पित है। इसकी संपूर्ण दीवार पर रामचरितमानस लिखी गई है और रामायण के प्रसिद्ध चित्रण को नक्काशी द्वारा अंकित किया गया है। दूसरी मंजिल पर स्वचालित श्रीराम एवं श्रीकृष्ण लीला होती है। 'संकटमोचन मंदिर' श्रीराम के अनन्य भक्त श्रीहनुमान को समर्पित है जो दुर्गाकुंड के पास है। इसकी स्थापना गोस्वामी तुलसीदास ने की थी। सामने की ओर श्रीराम का मंदिर है। परिसर में बहुत सारे वानर विचरण करते रहते हैं। 'दुर्गा मंदिर' शक्ति की देवी माँ दुर्गा का भव्य मंदिर है जो लाल पत्थरों से बना है। एक तरफ दुर्गाकुंड है। यहाँ माता स्वयंभू (अपने आप) प्रकट हुई थी इसीलिए यहाँ प्रतिमा के स्थान पर देवी माँ के मुखौटे और चरण पादुकाओं का पूजन होता है। 'बटुकभैरव मंदिर' महादेव का बालरूप है जो कमच्छा में स्थित है। 'मृत्युंजय महादेव मंदिर' भगवान शिव का मंदिर है जो दारानगर और विशेश्वरगंज के समीप है। 'संकठा मंदिर', 'मंगला गौरी मंदिर', 'ब्रह्मचारिणी मंदिर', 'बिंदु माधव मंदिर', 'गोपाल मंदिर' पक्का महल ठठेरी बाजार की तंग व संकरी गलियों में स्थित हैं और लोगों की आस्था के केंद्र हैं। 'भारत माता मंदिर' काशी विद्यापीठ परिसर में स्थित है जहाँ संगमरमर से भारत माता का मानचित्र बनाया गया है।

'काशी विश्वनाथ कॉरिडोर' प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का ड्रीम प्रोजेक्ट था जिसका मुख्य लक्ष्य विश्वनाथ मंदिर परिसर का सौंदर्यीकरण और गंगा तट पर ललिता घाट से मंदिर तक पहुँचने के मार्ग को चौड़ा करना था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में 8 मार्च 2019 को इस परियोजना के लिए भूमि पूजन किया था और 13 दिसंबर 2021 को धाम का लोकार्पण किया। इसमें जमीन अधिग्रहण में 390 करोड़ रुपए और निर्माण में 339 करोड़ रुपए कुल लगभग 900 करोड़ रुपये का अनुमानित खर्च है। 5.3 लाख वर्गफीट में तैयार हो रहे भव्य कॉरिडोर में छोटी-बड़ी 23 इमारतें और 27 मंदिर हैं। इसी से आप इसकी भव्यता का अंदाजा लगा सकते हैं। अब श्रद्धालुओं को गलियों और तंग रास्तों से नहीं गुजरना होगा। लगभग 3100 वर्ग मीटर में मंदिर परिसर बना है। पूरे परिसर में मकराना के सफेद मार्बल और चुनार के गुलाबी पत्थर लगे हैं। अब पूरे परिसर में एक समय में 50 से 75 हजार श्रद्धालु प्रवेश कर सकेंगे जबकि पहले सैकड़ों की संख्या में ही श्रद्धालु आ पाते थे। इसके लिए 300 से अधिक इमारतों को खरीदा गया और उन्हें ध्वस्त किया गया। पूरे कॉरिडोर को 3 भागों में बांटा गया है। इसमें 4 बड़े-बड़े गेट और प्रदक्षिणा पथ पर संगमरमर के 22 शिलालेख लगाए गए हैं जिसमें काशी की महिमा का वर्णन है। यहाँ मंदिर चौक, मुमुक्षु भवन, तीन यात्री सुविधा केंद्र, चार शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, मल्टीपर्पज हॉल, सिटी म्यूजियम, वाराणसी गैलरी, जलपान

गृह आदि की व्यवस्था की गई है। धाम में महादेव के प्रिय पौधे रूद्राक्ष, बेल, पारिजात, वट और अशोक लगाए गए हैं। धाम की चमक बढ़ाने के लिए 5000 लाईटें लगाई गई हैं जो रंग बदलती रहती हैं।

इसके अलावा मुस्लिमों के लिए अनेकों प्रसिद्ध मस्जिदें हैं जैसे गंगा किनारे पंचगंगा घाट स्थित 'आलमगीर मस्जिद' जो औरंगजेब द्वारा बनवाई गई है और इसका स्थापत्य मुगल कला का बेहतरीन नमूना है। 'ज्ञानवापी मस्जिद' जो विश्वनाथ मंदिर से महज 10 मीटर दूर है और बीच में लोहे की बैरिकेडिंग कर दी गई है, आदमपुर की 1400 साल पुरानी 'ढाई कंगूरा मस्जिद', नई सड़क स्थित 'लंगड़ा हाफिज मस्जिद', नदेसर स्थित 'जामा मस्जिद', दोषीपुरा की 'लंगड़ की मस्जिद' और काशी विद्यापीठ रोड स्थित 'बड़ी ईदगाह मस्जिद' इत्यादि। सिक्खों के लिए नीचीबाग स्थित 'गुरुद्वारा बड़ी संगत', गुरु बाग स्थित 'गुरुद्वारा गुरु का बाग', दशाश्वमेध स्थित 'गुरुद्वारा छोटी संगत' इत्यादि हैं। ईसाइयों के लिए कैंटोंमेंट स्थित 'सेंट मैरी कैथड्रल चर्च', गिरजा-घर चौराहा स्थित 'सेंट थॉमस चर्च' और सिगरा स्थित 'सेंट पॉल चर्च' मुख्य हैं।

गंगा - माँ गंगा से पहचान है बनारस की। बनारस को गंगा के किनारे बसना था या गंगा को बनारस के किनारे बहना था, ये कोई नहीं जानता। इस नगरी की बहुवचनीय सभ्यता और संस्कार के पीछे अमृत जलधारा वाली गंगा है। पूरे देश में बनारस ही ऐसा शहर है जहाँ गंगा उत्तरवाहिनी है यानि दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। गंगा की हर बूँद में बनारस बसा है। गंगा सब धर्मों और कौमों की माँ है। मशहूर शायर नजीर बनारसी लिखते हैं - "हमने तो नमाजें भी पढ़ी हैं अक्सर, गंगा के पानी में वजू कर-करके"। गालिब कहते हैं – "अगर दरिया-ए-गंगा इसके कदमों पर अपनी पेशानी (माथा) न मलता तो वह हमारी नजरों में मोहतरम (पावन) न रहता।" गंगा के बायें तट पर उत्तर से दक्षिण तक फैले 84 घाटों की श्रृंखला में सबसे दक्षिण का अंतिम घाट अस्सी घाट है। तट के 5 घाट - अस्सी घाट, दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट, पंचगंगा घाट और आदिकेशव घाट पौराणिक महत्व के हैं। सभी 84 घाट पक्के हैं और पत्थरों के बने हैं। ये घाट यूनेस्को द्वारा "विश्व धरोहर" के रूप में चिन्हित हैं। इनके बारे में कहते हैं "ये गंगा के घाट, काशी के हैं ठाठ।" अधिकांश घाट स्नान और पूजा समारोह घाट हैं जबकि दो घाटों - मणिकार्णिका और हरिश्चंद्र को श्मशान स्थलों के रूप में उपयोग किया जाता है । गर्मी के मौसम में लोग घाट पर गंगा में पैर डुबोकर बैठते हैं जो उन्हें अलग ही एहसास कराता है। मणिकर्णिका की विशेषता यह है कि यहाँ घाट पर चिता की अग्नि लगातार जलती रहती है, कभी बुझने नहीं पाती। यहीं ये एहसास होता है कि जीवन का अंतिम सत्य यही है। लेकिन बनारस मरना नहीं जीना सिखाता है। दशाश्वमेध घाट पर प्रतिदिन 'गंगा आरती' का आयोजन पूरी भव्यता के साथ होता है जिसमें लगभग 45 मिनट लगते हैं। यह आरती सात लकड़ी के तख्तों पर सात पंडितों द्वारा की जाती है जिसमें कर्णप्रिय मंत्रों की गूँज वातावरण को आध्यात्मिक बना देती है। अस्सी घाट युवाओं में सबसे ज्यादा मशहूर है। यहाँ भी शाम को गंगा आरती का आयोजन होने लगा है। गंगा के बीच धारा से सभी 84 घाटों का विहंगम दर्शन कराने हेतु 2000 वर्ग फीट का 90 सैलानियों की क्षमता वाला 'अलकनंदा क्रूज' तैयार है। यह खिड़किया घाट से अस्सी घाट के बीच चलता है जिसका भाड़ा रुपये 750 प्रति व्यक्ति (कर अतिरिक्त) है जिसमें नाश्ता भी सुलभ है। इंजन पूरी तरह से साउंड प्रूफ है। गंगा में गंदगी ना गिरे इसके लिए बायो-टॉयलेट की सुविधा है। क्रूज की खिड़कियाँ काफी बड़ी बनाई गई हैं ताकि बाहर के खूबसूरत नजारे का भरपूर आनंद उठाया जा सके।

सारनाथ - वाराणसी से केवल 10 किलोमीटर दूर सारनाथ एक प्रसिद्ध बौद्ध स्थल है जहाँ भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति

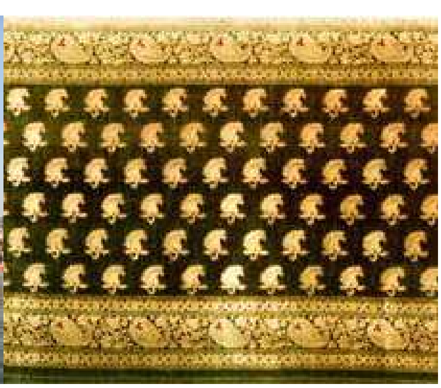

के बाद अपना पहला उपदेश दिया था जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' का नाम दिया जाता है। इसी स्थल पर 'धम्मेक स्तूप' का निर्माण करवाया गया जहाँ बुद्ध ने आर्य अष्टांग मार्ग की अवधारणा को बतलाया था, जिस पर चलकर व्यक्ति मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। 'चौखंडी स्तूप' को बौद्ध धर्म और संस्कृति के सबसे दिव्य और महत्वपूर्ण स्मारकों में एक माना गया है। स्तूप ठीक उस जगह है जहाँ भगवान बुद्ध की मुलाकात अपने पांच शिष्यों से हुई थी। 'अशोक स्तंभ' सम्राट अशोक द्वारा 50 मीटर लंबा पत्थरों से निर्मित भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है जिसके शीर्ष पर चार शेर हैं और स्तंभ का चक्र हमारे तिरंगे का चक्र है। 'मूलगंध कुटी विहार' में आकर्षक भित्ति चित्र देखे जा सकते हैं। प्रवेश द्वार पर तांबे का बड़ा घंटा लगा है और भीतर बुद्ध की सोने की आदमकद प्रतिमा है। 'थाई मंदिर' खूबसूरत बगीचे में बनाया गया है जोकि एक बेहद शांत और एकांत सी भरी जगह है और थाई वास्तुकला को दर्शाता है। 'सारनाथ संग्रहालय' में बौद्ध मूर्तियों और कलाकृतियों का बेजोड़ विस्तृत संग्रह है।

रामनगर किला - किला वाराणसी से 14 किलोमीटर दूर गंगा के पूर्वी तट पर तुलसी घाट के सामने स्थित है जहाँ सड़क मार्ग के अलावा गंगा के किसी भी घाट से नौका द्वारा पहुँचना भी आनंददायक है। किला सन् 1750 में चुनार के बलुआ पत्थर से मुगल शैली में बना है और तब से ही काशी नरेश का आधिकारिक और स्थायी निवास रहा है। किले की आकर्षक नक्काशीदार बालकनी, खुले आंगन और संग्रहालय इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं। दुर्ग में छोटे-बड़े 1010 कमरे हैं और सात आंगन हैं। संग्रहालय के अंदर 19वीं सदी की विंटेज कारें, चांदी, हाथीदांत और लकड़ी की शाही पालकियाँ, ढाल, तलवारों और पुरानी बंदूकों का शस्त्रागार, प्राचीन घड़ियाँ, हाथीदांत के नक्काशीदार सामान रखे गये हैं। यहाँ खगोलीय (ज्योतिष/पंचांग घड़ी) भी मौजूद है जो आधुनिक समय, दिन तथा तारीखों को तो बताती है साथ ही यह भारतीय ज्योतिष शास्त्र पर आधारित गणनाओं को भी व्यक्त करती है। इसमें नक्षत्रों, ग्रहों, राशियों, सूर्योदय, सूर्यास्त, चंद्रोदय, चंद्रास्त के साथ घड़ी, घंटा, पल तथा क्षण जैसे समय मानकों का भी पता चलता है । घड़ी किसी आश्चर्य से कम नहीं है। किले में महर्षि वेदव्यास का एक मंदिर है और दक्षिणी दीवार पर हनुमानजी की काली, दक्षिण मुखी मूर्ति है जिसमें हनुमानजी जमीन को दोनों हाथों से दबाए हुए हैं मानो गंगा के प्रकोप से किले को अपने बलशाली हाथों से रोके हुए हैं। इसके अलावा रामनगर की रामलीला भी बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ की रामलीला देखने के लिए बनारस के कोने-कोने से लोग आते हैं।

बनारस की गलियाँ- बनारस वस्तुतः गलियों का शहर है। यहाँ छोटी-बड़ी, पतली-संकरी सैकड़ों गलियाँ हैं। इनमें जंतर-मंतर भी है, भूलभुलैया भी है। "तू बन जा गली बनारस की, मैं शाम तलक भटकूँ तुझमें।" आप बस खाली हों और किसी भी गली में घुस जाएं। घूमते-घूमते कहाँ निकलेंगे कोई नहीं जानता । यहाँ कोई निशान लगा नहीं मिलेगा। जहाँ चूके कि काफी आगे जाने पर रास्ता बंद मिलेगा। " गलियों बीच काशी है, कि काशी बीच गलियाँ। कि काशी ही गली है, कि गलियों की ही काशी है।" इन गलियों में सभी जाति, धर्म, संप्रदाय, बोली के लोग आपसी भाईचारे से मिलजुल कर रहते हैं इसीलिए डॉ राम अवतार पांडेय जी कहते हैं -

वरूणा और अस्सी के भीतर है अनुपम विस्तार बनारस।
विविध धर्म भाषा-भाषी, रहते ज्यों परिवार बनारस।
जिसकी गली-गली में बसता, है सारा संसार बनारस।
एक बार जो आ बस जाता, कहता इसे हमार बनारस।

बड़े से बड़े खाटी बनारसी से भी अगर पूछा जाए कि आप बनारस की सभी गलियों के बारे में जानते हैं तो वह भी अपना उत्तर नकारात्मक ही देते हैं। ये गलियाँ पूरे बनारस को आपस में जोड़े रखती हैं। कभी बनारस की तंग गलियों में घूमते वक्त खिड़की से उड़ती हुई पान की फुहार सिर पर पड़ जाए तो इससे किसी के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचती

बल्कि सामने वाला 'का गुरु! तईं देख के थूका' कह कर आगे निकल जाता है। अब पता ही नहीं चलता कि सामने वाला गुस्से में गरिया रहा है या मोहब्बत में।

बनारस के लक्खी मेले- बनारस के पांच मेले ऐसे हैं जिनमें लाखों की भीड़ जुटती है और यह कोई अतिश्योक्ति नहीं है इसीलिए इसे लक्खी मेला कहते हैं -

(1) **चेतगंज की नक्कटैया का मेला-** यह मेला विजयादशमी के बाद कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को करवा चौथ की रात को आयोजित होता है। इसमें रामचरितमानस की घटनाओं के क्रमवार प्रदर्शन के साथ-साथ तमाम तरह की सामाजिक बुराइयों और समकालीन समस्याओं जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, लूटपाट आदि की झाँकी निकाली जाती है। मेले का आधार लक्ष्मण द्वारा शूपर्णखा की नाक काट कर बुरी व आसुरी शक्तियों का अंत करना है। यह मेला पिशाचमोचन से लेकर संकटमोचन तक चलता है। इसमें बनारस के अलावा आस-पास के जिलों द्वारा भी झाँकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं ।

(2) **रथयात्रा मेला -** इस मेले में रथयात्रा चौराहे पर लकड़ी के 14 पहिए वाले, 20 फीट चौड़े और 18 फीट लंबे विशाल रथ पर भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के काष्ठ के विग्रहों का दर्शन-पूजन किया जाता है जो 3 दिन तक चलता है। पुरी के बाद बनारस में ही रथयात्रा का इतना विशाल मेला आयोजित होता है। मान्यता है कि इन 3 दिनों में भगवान के विशाल रथ का पहिया अगर बारिश से भीग जाए तो वर्ष पर्यंत धन-धान्य की कमी नहीं रहती। फसल अच्छी होती है। यह मेला महमूरगंज से लेकर गिरिजाघर तक और कमच्छा से लेकर सिगरा तक फैला होता है।

(3) **नाग नथैया मेला-** तुलसी घाट पर कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को यह मेला आयोजित होता है। इस दिन काशी में उत्तर वाहिनी गंगा यमुना में बदल जाती है। यमुना तट पर बालकृष्ण सखाओं के साथ गेंद खेलते हैं । खेलते-खेलते गेंद यमुना में चली जाती है। तब श्रीकृष्ण कदंब की डाल से यमुना रूपी गंगा में छलांग लगाते हैं और प्रदूषण के प्रतीक कालिया नाग का मान मर्दन कर प्रकृति के संरक्षण का संदेश देते हुए फन पर खड़े होकर बंसी बजाते हुए प्रकट होते हैं तो श्रद्धालुओं की साँसे मानों थम सी जाती हैं और संपूर्ण गंगा तट किशन कंहैया लाल की जय और हर-हर महादेव के उद्घोष से गूँज उठता है। पांच मिनट की इस अनूठी लीला का साक्षी बनने के लिए अस्सी घाट से लेकर निषादराज घाट तक गंगा किनारे, नौकाओं व बजडो़ं पर लोग डटे रहते हैं।

(4) **नाटी इमली का भरत मिलाप-** आश्विन शुक्ल एकादशी को श्री चित्रकूट रामलीला समिति द्वारा नाटी इमली स्थित भरत मिलाप मैदान में ठीक सायं 4.40 पर भरत मिलाप का आयोजन होता है। 14 वर्ष के वनवास और रावण वध के बाद भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ पुष्पक विमान पर सवार होकर मैदान पर पहुँचते हैं। हनुमान द्वारा सूचना पाकर भरत और शत्रुघ्न नंगे पाँव दौड़ते हुए वहाँ पहुँचकर साष्टांग दंडवत करते हैं। राम-लक्ष्मण दौड़कर उनके पास पहुँचते हैं और चारों भाई आपस में गले मिलते हैं। इसके बाद परंपरा अनुसार यदुवंशी अपनी पारंपरिक वेशभूषा में रघुवंशियों से सुशोभित पुष्पक विमान को अपने मजबूत कंधों पर उठाकर बड़ा गणेश स्थित अयोध्या के लिए चल पड़ते हैं। इस 10 मिनट की लीला को देखने के लिए देश-विदेश के लाखों लोग एकत्र होते हैं।

(5) **देव-दीपावली -** हर साल कार्तिक पूर्णिमा के दिन सायं काल में बनारस के सभी घाटों को मिट्टी के दीयों से सजाया जाता है और विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। लगभग 3 किलोमीटर में फैले गंगा के अर्ध चंद्राकार घाटों पर जगमग करते लाखों-करोड़ों दीप गंगा की निर्मल धारा में इठलाते-बहते 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का शाश्वत संदेश देते हैं। इसके आयोजन में हजारों-हजार लोग सुबह से ही तन-मन-धन से लग जाते हैं। दिलचस्प बात यह है कि ये दीए बुझने नहीं पाते। लोग लगातार इनमें तेल डालते रहते हैं। घाटों के साथ ही नगर के सभी सरोवरों, कुंडों, मंदिरों, मठों, आश्रमों और प्रत्येक हिंदू घरों में भी दीप प्रज्ज्वलित किए जाते हैं। लोग गंगा किनारे पैदल और गंगा की धार में किराए की नावों और बजड़ों में बैठकर परंपरा और आधुनिकता के इस अद्‌भुत संगम और नयनाभिराम दृश्य का अवलोकन करके अपने को धन्य मानते हैं। ऐसा लगता है मानों काशी में पूरी आकाशगंगा ही उतर आयी है।

लेकिन यदि आप जल्दी में हों और एक दिन में बनारस घूमना चाहते हों तो बनारस घूमने मत आना। बनारस की नींद बहुत धीरे - धीरे खुलती है। आहिस्ता - आहिस्ता जागता है यह शहर। एक दिन में आप बनारस नहीं देख सकते। देख भी लें तो घूम नहीं सकते। घूम भी लें तो समझ नहीं सकते और

बनारस को समझना पड़ता है। जिसने बनारस को समझ लिया, यहाँ की नब्ज पकड़ ली, फिर वो सीधे प्रधानमंत्री तक बन सकता है। जिस प्रकार आप मंदिर में समय लेकर, इत्मीनान से जाते हैं, कोशिश करते हैं, कि भाव शांत रहे, भगवान के सम्मुख श्रद्धा से शीश नवाते हैं, भगवान से जुड़ने की कोशिश करते हैं वैसे ही आना है बनारस। किसी मोटे थुलथुल व्यक्ति को तेज- तेज चलते देखकर यह मत समझ लेना कि वो किसी जल्दी में है। आगे उसकी चौकड़ी (मित्र मंडली) इंतजार कर रही है। किसी चाय या पान की दुकान पर खड़े-खड़े पिछले दिन की सारी भड़ास, सारा गुबार निकालेगा। पूरे देश-दुनिया की चिंता करेगा। चुनाव में किसी को हराएगा, किसी को जिताएगा, किसी की जमानत भी जब्त करा देगा। चाय वाला जल्दी से चाय नहीं दे देगा। वो जानता है कि भईया जी को चाय की तलब नहीं, चाय पे चर्चा खींच लाई है। पान वाला भी जल्दी से नहीं देगा पान। उसे मालूम है कि चचा को पान खाने की पिनक नहीं है। यदि ऐसा होता तो किसी को भेजकर भी मंगा लेते। यहाँ गमछा, फटी धोती और सूट-बूट एक ही दुकान पे चाय पीता है, एक ही दुकान पे पान खाता है।

केवल पढ़-सुनकर बनारस को नहीं समझा जा सकता। उसे देखना पड़ता है, समझना पड़ता है। ये वो शहर है जहाँ बिस्मिल्लाह खां भोले बाबा के दर पर शहनाई बजाते थे तो प्रेमचंद बच्चों को ईदगाह की कहानी सुनाते थे। कबीर ने गंगा घाट की सीढ़ियों पर रात को लेटकर अपना गुरु रामानंद को बनाया तो नजीर गंगा के जल से वजू करते थे। यहाँ आज भी राधा-कृष्ण की चुनरी नजमा बीबी सिलती है तो उर्स की चादर चंपाकली बुनती है। इमरान आज भी रामलला की झाँकी सजाता है तो बांकेलाल ताजिये को कंधा देता है। रहमान के घर आज भी बुने जाते हैं हमारी बहनों के सुहाग के जोड़े तो अतीक आज भी धागे में पिरोता है रुद्राक्ष के दाने। सलीम होली मिलने आता है गुझिया और श्रीखंड के लिए तो पप्पू ईद का इंतजार करता है सेवइयों के लिए। यहाँ जितने उल्लास से रथयात्रा का मेला निकलता है, उतने ही धूमधाम से ताजिया का जुलूस भी निकलता है। यहाँ क्रिसमस भी उतने ही जोर शोर से मनाया जाता है जितनी होली।

सार ये है कि बनारस के बारे में कभी कुछ पूरा बताया ही नहीं जा सकता। गालिब लिखते हैं-

"बनारस को दुनिया के दिल का नुक्ता (बिंदु) कहना दुरुस्त होगा। इसकी हवा मुर्दों के बदन में रूह फूँक देती है। इसकी खाक के ज़र्रे मुसाफिरों के तलवे से कांटे खींच निकालते हैं। अगर सूरज इसके दर-ओ-दीवार के ऊपर से न गुजरता तो वह इतना रोशन और ताबनाक (प्रखर) न होता।"

बनारस न रुकता है, न थमता है, न सोता है, न अलसाता है। बस चलता रहता है। यहाँ कभी रात नहीं होती।

जहाँ राख भी रख दो तो पारस हो जाता है।

यूं ही नहीं कोई शहर बनारस हो जाता है

बनारस अपने बारे में कहता है -

जिसने भी छुआ वो स्वर्ण हुआ,
सब कहें मुझे मैं पारस हूँ।
मेरा जन्म महाश्मसान मगर,
मैं जिंदा शहर बनारस हूँ।

फिलहाल बनारस से निकलते समय दिमाग में यही ख्याल आता है - अद्भुत, अद्वितीय, असाधारण, अप्रतिम, अतुलनीय, अकल्पनीय, अनूठा, अकलंकित, अविनाशी, अलौकिक, अकिल्विष।

हिंदी एक जानदार भाषा है; वह जितनी बढ़ेगी देश को उतना ही लाभ होगा।

- पंडित जवाहरलाल नेहरु

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

नवनियुक्त मंडल प्रमुखों के लिए कार्यशाला का आयोजन

प्रधान कार्यालय के मल्टीपर्पज हॉल में नवनियुक्त मंडल प्रमुखों के लिए आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के अवसर पर एलकेएमसी विभाग द्वारा तैयार की गई पुस्तिका का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार, श्रीमती रीता कौल, महाप्रबंधक, श्रीमती कुमुद नेगी वार्ष्णेय, उप महाप्रबंधक।

तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान मंडल कार्यालय में कार्यनिष्पादन तथा बैंक की नीतियों के क्रियान्वयन संबंधी महत्वपूर्ण सिद्धांतों सहित फील्ड में कार्य करते समय आने वाली कठिनाइयों से निपटने हेतु उपायों पर प्रधान कार्यालय के कार्यपालक निदेशकगणों, मुख्य महाप्रबंधकों, महाप्रबंधक सहित वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उचित मार्गदर्शन प्रदान किया गया ।

नवनियुक्त मंडल प्रमुखों के लिए आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशकगण, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार, महाप्रबंधक, श्रीमती रीता कौल, अन्य उच्च अधिकारीगण।

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल की अध्यक्षता में 20 अंचलों से 29 उप महाप्रबंधकों तथा 15 सहायक महाप्रबंधकों सहित कुल 44 नवनियुक्त मंडल प्रमुखों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्रधान कार्यालय के मल्टीपर्पज हॉल में किया गया जिसमें कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार ने भी सहभागिता की।

अपने उद्बोधन में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल ने नवनियुक्त मंडल प्रमुखों से अपने नये उत्तरदायित्वों का पूरी निष्ठा और कर्मठता से पालन करने की आशा व्यक्त की ताकि बैंक के उत्थान में उनका योगदान व्यापक हो।

प्रधान कार्यालय के मल्टीपर्पज हॉल में नवनियुक्त मंडल प्रमुखों के लिए आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के अवसर पर नवनियुक्त मंडल प्रमुखों को संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल।

इस अवसर पर एलकेएमसी विभाग द्वारा मंडल प्रमुखों के लिए उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के संबंध में मार्गदर्शन करने वाली बुकलेट का विमोचन बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार भी उपस्थित थे।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।"

- सुमित्रानंदन पंत

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत (बैंक को दो राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुए)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 14 एवं 15 सितंबर 2022 को सूरत (गुजरात) में "हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन" का आयोजन माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र भाई पटेल, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्री निशिथ प्रामाणिक, रेल राज्य मंत्री एवं वस्त्र राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, सांसदगण तथा सचिव, राजभाषा, श्रीमती अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव मीनाक्षी जौली एवं हिंदी के विद्वान उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अनुवाद कार्य को सरल बनाने हेतु स्मृति आधारित अनुवाद टूल के उन्नत संस्करण "कंठस्थ 2.0" और हिंदी से हिंदी बृहत शब्दकोश "हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण-1) का लोकार्पण किया। पंजाब नैशनल बैंक को इस सम्मेलन में दो-दो राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुए वर्ष 2021-22 हेतु द्वितीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा दिल्ली बैंक नराकास को प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ। बैंक की ओर से यह पुरस्कार बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल तथा दिल्ली बैंक नराकास अध्यक्ष एवं अंचल प्रबंधक दिल्ली, श्री समीर बाजपेयी ने ग्रहण किए। पंजाब नैशनल बैंक को सम्मेलन में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदत्त विशेष पुरस्कार श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा ने ग्रहण किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री देवार्चन साहू, प्रधान कार्यालय, अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता तथा बैंक के विभिन्न अंचल और मंडल कार्यालयों के उच्चाधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी इस सम्मेलन में शामिल हुए।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात) में अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण करते हुए माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात) में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के साथ एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल (मध्य में) उनके बाएं अंचल प्रबंधक, दिल्ली एवं मुख्य महाप्रबंधक, श्री समीर बाजपेयी तथा श्रीमती मनीषा शर्मा सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा एवं बाएं, अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक राजभाषा, श्री देवार्चन साहू, श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात) में माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री निशिथ प्रामाणिक के करकमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण करते हुए दिल्ली बैंक नराकास अध्यक्ष एवं अंचल प्रबंधक दिल्ली, श्री समीर बाजपेयी।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात) में माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री निशिथ प्रामाणिक के करकमलों से प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के दौरे

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ के व्यावसायिक दौरे के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल का अभिनंदन करते हुए अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप पाणिग्रही।

पंजाब नैशनल बैंक के संस्थापक लाला लाजपत राय की जन्म स्थली ढुढ़ीके, जिला मोगा में स्मारक का उदघाटन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल गोयल एवं अंचल प्रबंधक, लुधियाना, श्री सुमन्त महान्ती एवं बैंक के अन्य उच्चाधिकारीगण।

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ में बैंक के संस्थापक लाला लाजपत राय की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। दृश्य हैं अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप पाणिग्रही एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, सूरत में आयोजित कॉरपोरेट ग्राहक बैठक के दौरान मंचासीन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता एवं महाप्रबंधक, श्री दीपंकर महापात्र।

बैंक के एमडी एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल का अभिवादन करते हुए अंचल प्रबंधक, लुधियाना, श्री सुमंत महांती। साथ में हैं उप अंचल प्रबंधक, लुधियाना, श्री दलजीत सिंह, उप महाप्रबंधक श्री जगजीत सिंह एवं अन्य।

मंडल कार्यालय, कोलकाता, दक्षिण में आयोजित ग्राहक सम्मान समारोह में ग्राहकों को सम्मानित करते एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल साथ में हैं अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के दौरे

त्रिपुरा राज्य, अगरतला के सचिवालय में आयोजित त्रिपुरा राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक में उपस्थित त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री, श्री माणिक साह, पंजाब नैशनल बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल और वरिष्ठ अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, अगरतला में शाखाओं के साथ समीक्षा बैठक के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल का अभिनंदन करते हुए अंचल प्रबंधक, गुवाहाटी, श्री बिक्रमजीत सोम। साथ में उपस्थित हैं अन्य अधिकारीगण।

त्रिपुरा राज्य, अगरतला के सचिवालय में आयोजित त्रिपुरा राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक में त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री श्री माणिक साह को पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल।

मंडल कार्यालय, सूरत में एमसीसी के दौरे के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल विचार-विमर्श करते हुए। साथ में हैं अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री बिनय कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, अहमदाबाद, श्री दीपंकर महापात्र एवं अन्य स्टाफ सदस्यगण।

मंडल कार्यालय, पुणे के दौरे के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए मंडल प्रमुख, पुणे, श्रीमती भुवनेश्वरी वेंकटरमण।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

अंचल कार्यालय, मुंबई में आयोजित टाऊन हॉल बैठक में कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत करते हुए अंचल प्रबंधक, मुंबई, श्री बी.पी.महापात्र।

अंचल कार्यालय, कोलकाता में आयोजित ग्राहक बैठक में कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार एवं महाप्रबंधक, श्री सुनील अग्रवाल, कोलकाता, अंचल के प्रमुख ग्राहकों को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।

कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार एवं अंचल प्रबंधक, कोलकाता, श्री नबीन कुमार दाश अंचल कार्यालय, कोलकाता में आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को राष्ट्रीय ध्वज प्रदान करते हुए।

कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार तथा नामित कार्यपालक निदेशक श्री बिनोद कुमार द्वारा अंचल कार्यालय, अमृतसर का दो दिवसीय दौरा किया गया। इस अवसर पर व्यापार समीक्षा बैठक में श्री संजय कुमार का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए अंचल प्रबंधक, प्रवीन गोयल।

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी में हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर अंचल कार्यालय में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार साथ में हैं अंचल प्रबंधक, गुवाहाटी, श्री बिक्रमजित सोम व अन्य अधिकारीगण।

अंचल कार्यालय, जयपुर में आयोजित समीक्षा बैठक के अवसर पर कार्यपालक निदेशक, श्री कल्याण कुमार को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए अंचल प्रबंधक, जयपुर, श्री आर.के बाजपेयी एवं उप अंचल प्रबंधक, श्री एन.आर बंजारा।

इमोशनल इंटेलिजेंस से प्रभावी प्रबंधन

(अंकित पाण्डेय,प्रबंधक(मा.सं.वि), अंचल कार्यालय:आगरा)

नेतृत्व और मानव सभ्यता का इतिहास काफी विस्तृत एवं पुराना है। ऐसा माना जाता है कि जब से मानव अपने परिवार या समूह के साथ रहकर अपना जीवन यापन कर रहा है तब से नेतृत्व क्षमता का विकास शुरू हुआ होगा। कुशल नेतृत्व से संसार को कैसे जीता जा सकता है ये हम ऐलेक्जेंडर, महात्मा गाँधी, नेल्सन मंडेला जैसे महान योद्धा विचारक, विद्वान एवं बुद्धिजीवियों या आज के दौर के एलन मस्क जैसे सफल उद्यमियों से सीख सकते हैं।

कुशल नेतृत्व के महत्व को समझते हुए इसे प्रबंधन के क्षेत्र में भी पढ़ा और समझा जाने लगा। इसके पीछे एक ही उद्देश्य था कि कैसे मानव में नेतृत्व के गुणों का विकास किया जा सके। नेतृत्व क्षमता के आधारभूत तत्वों में से एक है करूणा भाव का विकास करना या यूँ कहें कि व्यक्ति में संवेगात्मक बुद्धि (इमोशनल इंटेलिजेंस) उत्पन्न करना।

पीटर सलोवी और जॉन मेयर के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि(इमोशनल इंटेलिजेंस) व्यक्ति की अपनी और अन्य लोगों की भावनाओं की निगरानी करने, विभिन्न भावनाओं को समझने और उन्हें उचित रूप से इस्तेमाल करके अपने व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता है"।

1940 में डेविड वेसलर ने लिखा कि "व्यक्ति की सफलताओं में सिर्फ बौद्धिक पक्ष शामिल नहीं है बल्कि भावनात्मक पक्षों को महत्व दिए जाने की जरूरत है"।

यह बात सर्वविदित है कि प्रत्येक संस्था या संगठन अपने कार्मिक या यूँ कहें कि 'मानव पूँजी' से संचालित होते हैं। संस्था या संगठन को क्रियाशील बनाने में "मानव पूँजी" रुपी कार्मिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। संस्था या संगठन को समृद्ध और विकास के नए सोपान तक ले जाने वाले मानव संसाधन रुपी इंजन भावनाओं, अनुभूतियों और मनोदशाओं से प्रेरित एवं पूर्ण होते हैं।

व्यक्ति अपनी भावनाओं को अपने व्यवहार के माध्यम से अभिव्यक्त या प्रकट करता है और इसमें उसका कार्यस्थल पर प्रदर्शित व्यवहार भी सम्मिलित है। एक कुशल प्रबंधक(लीडर) को अपने स्वयं के विचार और मतों के अलावा दूसरों के दृष्टिकोण से स्थितियों का विश्लेषण करना अर्थात 'दर्शन' सीखना चाहिए। किसी भी प्रतिक्रिया से पहले दूसरों के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए। इसके लिए निरंतर सचेत रहने की आवश्यकता होती है और यही गुण एक लीडर को जागरूक एवं सामर्थ्यवान विश्लेषक बनाता है।

कार्यस्थल में मानवीय भाव की भूमिका के विषय में अनेक शोधों और अध्ययनों से यह पता चलता है कि कार्य की गुणवत्ता, निर्णय लेने की क्षमता, रचनात्मकता एवं व्यवहार में मानवीय भाव अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी संस्था के प्रति उसके कार्मिक कितने प्रतिबद्ध होंगे, यह कार्मिकों की भावनाओं पर निर्भर करता है और यदि भावनाओं की समझ तथा उसे अभिव्यक्त करने का प्रबंधन, संस्था के कर्मचारियों या लीडर्स में हैं, तो उससे कार्यस्थल पर ऐसा सकारात्मक भाव उत्पन्न किया जा सकता है, जो संस्थान के सभी कर्मचारियों की उत्पादकता या कार्यनिष्पादन में वृद्धि करे।

प्रबंधन एवं कार्मिक के मध्य भावनात्मक लगाव किसी भी संस्था के विकास का मेरूदंड है। भावनात्मक रुपी सेतु के क्षतिग्रस्त होने से कार्मिक एवं प्रबंधन के बीच एक अंतर सा आ जाता है, जो संस्था के विकास एवं कार्मिक के उत्थान में सबसे बड़ी बाधा उत्पन्न करता है जो कार्मिक के उत्तरदायित्वों और संस्था में उसकी भूमिका को प्रभावित करता है। जिस नेतृत्व से कार्मिकों को सशक्त बनाने, एकजुटता के धागे में पिरोने की आशा की जाती है, उस नेतृत्व को अपनी और दूसरों की भावनाओं को संग्रहित करने की क्षमता एवं ललक अधिक लाभ दे सकती है। इस गुण के बल पर वे कार्मिकों के बीच

सकारात्मक भावनाओं को प्रोत्साहित करने में सफल होते हैं। एक कुशल लोक सेवक कार्यकुशलता, दक्षता एवं कार्य की सफलता के लिए संवेगात्मक प्रबंधन का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करता है। संवेगात्मक बुद्धि से आत्म-जागरूकता और निर्णय लेने में सुधार होता है, साथ ही ये कार्मिकों में अपने मूल्य प्रणाली एवं मान्यताओं का मूल्यांकन करने की अनुमति भी प्रदान करता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता(इमोशनल इंटेलिजेंस) की उत्कृष्टता "संप्रेषण के सिद्धांत" पर आधारित है। ऋग्वेद के अनुसार "तीन इकाइयाँ है जो कि संप्रेषण को सफल बनाती है फिर चाहे वो खुद से ही क्यों न हों, हृदय, मन और बुद्धि। हृदय में करूणा पनपती है मन में इच्छा और विचार और बुद्धि में निर्णय।" ऋग्वेद कहता है कि निर्णय शब्दों द्वारा प्रदर्शित होते हैं, करूणा हमारे हाव-भाव द्वारा। आवश्यक यह है कि इन तीनों में सांमजस्य हो अर्थात मनसा, वाचना और कर्म से हमारे भाव एक जैसे हो अर्थात हम किसी व्यक्ति की भावना और विचारों को सही रूप में प्रदर्शित कर कार्यस्थल पर व्यष्टि एवं समष्टि रूप से सफल हो सकते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात करें तो फोर्ब्स के साथ एक साक्षात्कार में रटगर्स विश्वविद्यालय की जैविक मानवविज्ञानी डॉ. हेलेन फिशर ने विस्तार से बताया है कि व्यक्तित्व, मस्तिष्क, रसायन विज्ञान से जुड़ा है। उन्होंने चार प्रकार के जैविक स्वभाव या व्यक्तित्व के बारे में बताया जो किसी व्यक्ति की प्रमुख नेतृत्व शैली के एक हिस्से को आकार देते हैं। जो चुनौतियों का सामना करता है। "डायरेक्टर" जो संकेत को नियंत्रित करने के लिए एक टेस्टोस्टेरोन के प्रभुत्व से उत्साह प्रदर्शित करता है। "बिल्डर" जो सेरोटोनिन के प्रभाव को व्यक्त करने वाले सिस्टम को बनाए रखता है और "नेशोशियेटर" जो ऑक्सीटोसिन के प्रमुख प्रभाव से प्रदर्शित करने, विश्वास बनाने और संबंधों को पोषित करने में कुशल बनाता है।

एक व्यक्ति अपने पिछले अनुभवों या अन्य स्थितिजन्य कारकों के आधार पर इनमें से एक से अधिक स्वभाव के लक्षणों का संयोजन भी प्राप्त कर सकता है। हालांकि इस प्रकार के सिद्धांतों और वर्गीकरणों के लिए प्रबंधन और नेतृत्व पर मौजूदा साहित्य के एक भाग के रूप में विस्तृत ढंग से अपनाए जाने के लिए अधिक शोध एवं साक्ष्य की आवश्यकता है। ये शुद्ध विज्ञान के परिप्रेक्ष्य से व्यक्तित्व, व्यवहार और नेतृत्व को समझने का प्रयास करते हैं। ऐसे लीडर और प्रबंधक स्वयं में और दूसरों के बीच इस तरह के लक्षणों की पहचान करने में सक्षम हैं। वो टीमों के भीतर विविधता का प्रबंधन करने के लिए प्रासंगिक और उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत कर पाते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि और इसके प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने के उपरांत हम एक उदाहरण के रूप में इसे और बरीकी से समझने का प्रयास करेंगे। हम सभी जानते हैं कि श्रीकृष्ण के नेतृत्व में पांडवों ने विजय प्राप्त की थी। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सारथी के रूप में अपने दायित्वों का दक्षता से पालन किया। श्रीकृष्ण ने अपनी इस भूमिका में अनेक नेतृत्व शैलियों का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। श्रीकृष्ण, अर्जुन के मन में व्याप्त विभिन्न जटिल भावनात्मक उथल-पुथल के प्रति संवेदनशील होकर यह जानने में भी सक्षम रहे कि कौन से भाव और विचार अर्जुन को भावनात्मक रूप से कमजोर एवं शिथिल बना रहे थे। अर्जुन की दशा व वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप श्रीकृष्ण अपनी दिव्य एवं अनुनय शैली को गतिशील रूप से परिवर्तित करते रहे और अर्जुन को कर्त्तव्यों को पूरा करने में सक्षम होने के लिए प्रोत्साहित व समर्थन प्रदान करते रहे जिसके परिणामस्वरूप युद्ध में पांडवों की विजय हुई।

श्रीकृष्ण की नेतृत्व शैली और संवेगात्मक बुद्धि आज भी प्रासंगिक है क्योंकि एक सफल लीडर वही है जो अपने अधीनस्थों की भावनात्मक जरूरत के अनुसार अपनी शैली में परिवर्तन या सुधार कर उनका मार्गदर्शक बनें। एक सफल लीडर वही है जो एक निश्चित शैली के प्रति जिद्दी स्वभाव न अपनाकर दूसरों के लिए एक अनुकूल, उपर्युक्त तथा उचित स्वर, शैली और प्रतिक्रिया तैयार करे क्योंकि कर्मचारी के व्यवहार भी भावनाओं में निहित होते हैं जो निरंतर बदलते रहते हैं। अत: न केवल आज के समय में बल्कि भविष्य में भी संस्थान को प्रगति पथ पर अग्रसर करने हेतु एक ऐसे लीडर या प्रबंधक की आवश्यकता है जो कार्मिकों की भावनाओं को समझें, स्वीकारे और उनके अनुसार अपनी नेतृत्व शैली का चयन करें।

"जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

उद्घाटन

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल चंडीगढ़ अंचल के सैक्टर 38, में एटीएम का उद्घाटन करते हुए। साथ में हैं अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप कुमार पाणिग्रही।

अगरतला, मंडल में आने वाले अगरतला हवाई अड्डे पर एटीएम का उद्घाटन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं बैंक के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, ब्रह्मपुर के अंतर्गत आने वाली शाखा बुगुडा के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन करते हुए अंचल प्रबंधक, भुवनेश्वर, श्री उदय भास्कर रेड्डी अल्टूरु।

मंडल कार्यालय, मुजफ्फरपुर के अधीन महनार शाखा के नवीनीकृत भवन के उद्घाटन के अवसर पर अंचल प्रबंधक, पटना, श्री पूर्णचन्द्र बेहरा एवं मंडल प्रमुख, मुजफ्फरपुर, श्री संजॉय सिन्हा।

गांधीनगर मंडल के अंतर्गत जीआईडीसी, हिम्मतनगर शाखा में बैंक के एटीएम का उद्घाटन करते हुए जिलाधिकारी, साबरकांठा, श्री हितेश कोया। साथ में हैं श्री शाम भाई सलूजा, अध्यक्ष, जीआईडीसी (GIDC) एसोसिएशन, हिम्मतनगर तथा मंडल प्रमुख ,गांधीनगर, श्री बिजेंदर सिंह।

मंडल कार्यालय, ब्रह्मपुर के अंतर्गत आने वाली शाखा, राजसुनाखला का उद्घाटन करते हुए अंचल प्रबंधक, भुवनेश्वर, श्री उदय भास्कर रेड्डी अल्टूरु।

हमें गर्व है

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किक बॉक्सिंग के क्षेत्र में अपना और पंजाब नैशनल बैंक का परचम फहराने वाले श्री सुधीर सक्सेना आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। फिर भी उनके बारे में यह बताना जरुरी हो जाता है कि एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे तथा अभी तक आर्थिक तंगी और प्रायोजकों के अभाव के बावजूद उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और सच्ची लगन से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के खिलाड़ियों के साथ लोहा लेते हुए भारत के लिए 1 स्वर्ण, 2 रजत और 2 कांस्य पदक जीत कर अपनी एक अलग पहचान बनाई है जोकि अपने आप में एक गौरवपूर्ण और आश्चर्यजनक इसलिए कि सरकार और प्रायोजकों के बिना खेल के प्रति इतना जूनून और देश का मान बढ़ाने का इतना समर्पण उदाहरण के तौर पर ही देखने-सुनने में आता है।

अंतरराष्ट्रीय खेल किक बॉक्सिंग जिसमें भारत की पहुँच आज तक सीमित रही है, ऐसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में विश्व चैम्पियनशिप और एशियन चैम्पियनशिप के सदस्य सुधीर सक्सेना भारत के लिए विश्व स्तर पर एक गौरवपूर्ण और अनुकरणीय व्यक्तित्व हैं। 12 राष्ट्रीय पदकों और चालीस से अधिक राज्य स्तर के विभिन्न पदकों के विजेता रहे सुधीर की लग्न और मेहनत बेमिसाल है। विभिन्न देशों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके सुधीर ने हाल ही में इटली में हुए वर्ल्ड किक बॉक्सिंग चैम्पियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

श्री सुधीर सक्सेना की शिक्षा-दीक्षा बनारस में अपने माता-पिता के घर पर हुई है। उनके कोच श्री शिव शंकर प्रजापति, अखिलेश रावत जैसे महान गुरु रहें हैं। उनके खेल की शुरुआत बनारस से हुई थी। उन्होंने यह भी बताया कि उनका किक पंच कमजोर था परन्तु किक बॉक्सिंग हार्ड थी इसलिए उन्होंने किक बॉक्सिंग का चयन किया। उनका सपना देश के लिए स्वर्ण जीतकर इस खेल विधा में देश का वर्चस्व स्थापित करना है। पीएनबी परिवार और पीएनबी प्रतिभा का संपादक मंडल उनके जज्बे को सलाम करता है और उनके उज्ज्वल भविष्य और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता है।

कहानी - विछोह

संदीप कुमार, अंचल शस्त्र प्रमुख, मेरठ

मित्रों, यह कहानी है, गुप्ता जी की। चलिए, उनकी यादों के सहारे अपने अंतर्मन को टटोलते हैं।

गुप्ता जी सरकारी नौकरी वाले, एक अच्छे खासे बड़े मकान के मालिक, समर्पित पत्नी, एक बेटी और एक पुत्र वाले परिवार के मुखिया हैं। संक्षेप में कहें, तो वर्तमान की परिभाषा के अनुसार एक सफल, सुखी और संपन्न इंसान।

गुप्ता जी स्वयं एक साधारण पृष्ठभूमि से उठकर, जी तोड़ मेहनत करके, आज इस मुकाम पर पहुँचे हैं। उनकी पत्नी ने भी कंधे से कंधा मिलाकर, अपने बच्चों को हरसंभव सुख-संसाधन देते हुए उनकी सर्वोत्तम शिक्षा का प्रबंध किया। रिसते समय के साथ, वे कब सेवानिवृत्ति की दहलीज पर जा पहुँचे, पता ही न चला। इस दौरान, माँ और बाऊ जी भी साथ छोड़ गए। बड़ी बिटिया डॉक्टर बनके अपने डॉक्टर पति के साथ, दूर शहर में भली - भांति सेटल हो गई और पुत्र भी इंजीनियर बन के बैंगलुरु में एक बड़ी कंपनी में साल भर पहले मोटे पैकेज पर लग गया।

कभी माँ, बाऊ जी, बच्चों से भरे रहने वाले घर में, अब दो ही प्राणी हैं। गुप्ता जी तो अभी भी अगले दो महीनों तक ऑफिस में समय काट लेंगे, पर धर्मपत्नी का तो समय काटे न कटता

है। कभी पूरे दिन और रात काम में खटने वाली महिला, अब व्यस्त रहने का बहाना ढूँढती है।

हाँ, एक सप्ताह से तो अभी व्यस्त है, बेटा जो आया है। दुखती कमर और झुकती पीठ के बावजूद, भाग - भाग कर बेटे की फरमाइशें पूरी कर रही है। माँ के हाथ का हर व्यंजन जो उसे बाहर नहीं मिलता, खाना है और यथासंभव लेकर भी जाना है। भागदौड़ की जिंदगी में मिला यह छोटा सा अंतराल, जैसे माँ और बेटा, दोनों ही, हरसंभव एक-दूसरे के लिए जीना चाहते हों। दोनों को प्रसन्न देख, गुप्ता जी भी मन ही मन खुश होते रहते। बेटा भी, अपनी ढेरों बातों, करियर आदि के बारे में बताता रहता। कल सुबह बेटे को बंगलुरु जाना है, सोच-सोच कर जैसे दोनों की जान ही निकलती जाती है। बेटा चहकता रहता और माँ-बाप का कलेजा विछोह की ज्वाला से दहकता रहता। पर, दोनों ने जैसे नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से एक्टिंग का कोर्स कर रखा है, मजाल क्या जो बेटे को आभास भी हो जाए। माँ हँस-हँस कर उसका सामान लगा रही है और गुप्ता जी भी छोटी-छोटी चीजों के लिए बाजार के कई चक्कर लगा चुके हैं।

समय की बलिहारी, पुत्र के प्रस्थान का दिन भी आ चुका है। माँ, बेटे के साथ के हर क्षण को जैसे अपनी आँखों में समा लेना चाहती है। मौन की भाषा का अपना अंतरबोध होता है, उसकी डबडबाई आँखें पति से छुपी न रहती। सामान बंध गया है, विदाई का क्षण आ चुका है। सीने से लगा कर माँ, बेटे को दुलारती है, बलाएं लेती है, भावनाओं का ज्वार जैसे बांध तोड़ने को आतुर है, फिर भी चेहरे पर रोनी सी मुस्कान लाकर, बेटे को विदा करती है।

गुप्ता जी भी बेटे के साथ उपलब्ध समय को हर संभव तरीके से बिताना चाहते हैं, इसलिए स्वयं स्कूटर निकाल लिया है। उसका सामान आगे रख लिया है जिससे पीछे बैठे बेटे को इसी बहाने छूते रहें। स्कूटर जानबूझकर धीमे चला रहे हैं ताकि बात करते-करते जितना संभव हो और समय बिता सकें। रास्ते में, उन्हें पत्नी की चिंता भी हो रही है, क्योंकि जानते हैं कि बांध सभी किनारे तोड़ चुका होगा।

स्टेशन भी जैसे कितना जल्दी आ गया। कमबख्त ट्रेन भी आज सही समय पर आ रही है। बेटा बैग संभालता है, विदा माँगता है। वह उसके गले लग जाना चाहते हैं, पर आखिर पिता हैं, अब तक बच्चों के साथ चट्टान की तरह खड़े रहें हैं तो आज पिघलना कैसा! बेटे को भीड़ में ओझल होते हुए अंतिम क्षणों तक निहारते रहते हैं। भारी मन से स्कूटर घर की ओर मोड़ते हैं, साइकिल वाले भी उनसे तेज चल रहे हैं।

हृदय में हजारों प्रश्न फन उठा रहे हैं। इतना बोझिल मन, अब तक तो न हुआ; कभी वो स्वयं भी तो ऐसे ही घर से बाहर गए थे; अब आगे हम दोनों का क्या होगा, आदि आदि। क्या पता कि उत्तर मिलेंगे भी या अनुत्तरित ही रह जायेंगे।

मित्रों! यह विछोह की कपोल कल्पना है, कहानी है, आपबीती है अथवा जगबीती, यह आप स्वयं तय करें। विछोह के हजार रूप, जहाँ प्रेम, दुलार से सिक्त भावनाएं, वहीं विछोह। यह न तो प्रथम है न ही अंतिम। अत: एक अलग दृष्टिकोण से विछोह वेदना की पुन: प्रस्तुति, फिर कभी...

हर तस्वीर कुछ कहती है

कहते हैं कि कैमरा और तस्वीर झूठ नहीं बोलते हैं और वाकई में हर तस्वीर कुछ कहती है जो हमारे दिलो-दिमाग और अंतरात्मा को छू जाती है और हमें सोचने और उस पर कुछ लिखने के लिए प्रेरित करती है। क्या यह तस्वीर आपको लिखने के लिए प्रेरित नहीं कर रही है? तो उठाइए कलम और इस तस्वीर पर अपने मौलिक विचार (गद्य/पद्य में) केवल 10 से 15 पंक्तियों में हिंदी यूनिकोड में टाइप कर हमें 15 दिसंबर 2022 तक ईमेल पते pnbstaffjournal@mail.co.in या राजभाषा विभाग की ईमेल आईडी rajbhashavibhag@pnb.co.in पर भेज दीजिये। कृपया प्रविष्टि में फोटो सहित अपना पूर्ण विवरण अवश्य लिखें। हस्तलिखित/रोमन लिपि में टंकित प्रविष्टियाँ स्वीकार नहीं की जाएंगी। केवल पीएनबी बैंक के स्टाफ सदस्य ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। प्रत्येक स्टाफ सदस्य की केवल एक प्रविष्टि पर विचार किया जाएगा। चुनी गई सर्वश्रेष्ठ प्रतिक्रियाओं को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा ।

बैंक में राजभाषा की प्रासंगिकता

(स्नेहा सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय, अहमदाबाद)

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय को सूल"। भारतेंदु हरिश्चंद्र की ये पंक्तियाँ अपनी प्रगति में भाषा की भूमिका का महत्व स्पष्ट करती हैं।

किसी देश, प्रदेश या राज्य के शासन तथा राजकीय कार्य व्यवस्था के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे राजभाषा कहते हैं। भारत में विभिन्न समय में संस्कृत, पाली, मराठी, प्राकृत, अपभ्रंश राजभाषा रही परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रीय चेतना के विकास के साथ स्वभाषा को राजभाषा बनाने की माँग हुई। सर्वाधिक जनता द्वारा जानी,बोली,लिखी जानेवाली भाषा होने के कारण हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 को स्वीकार किया गया और संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को लागू करने के संबंध में व्यवस्था की गयी।

संवैधानिक व्यवस्था के आधार पर 1963 तथा 1976 में बने अधिनियम व राजभाषा नियम के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों पर राजभाषा कार्यान्वयन, कामकाज हिंदी में करने हेतु लक्ष्य निर्धारित किये गए और बैंकों में हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में कामकाज शुरू हुआ।

मैन्युअल बैंकिंग के दौरान तो हिंदी में अच्छा कार्य हो रहा था। स्टाफ कर्मचारियों को भी सुविधा थी और ग्राहकों को भी। फिर हुआ कंप्यूटराइजेशन और उस समय कंप्यूटर पर तो केवल अंग्रेजी में कार्य हो सकता था। कंप्यूटर पर टाइपिंग और बैंक की विभिन्न प्रणालियों को द्विभाषिक बनाने में बहुत समय लगा और उसी वजह से हिंदी में किया जा रहा कामकाज पिछड़ गया।

कंप्यूटराइजेशन के कई वर्ष बाद यूनिकोड बना, जिससे अब हिन्दी में टाइपिंग करना आसान हो गया। मोबाईल क्रांति ने तो कमाल ही कर दिया और अब आप बोलकर भी टाइपिंग कर सकते हो। राजभाषा में काम करने-कराने में जो रूकावटें थी वो तो दूर हो गयीं, अब जरूरत है आदत और मानसिकता बदलने की।

हम अधिकतर शहरों की बैंकिंग देखते हैं, लेकिन अभी भी हमारे 60 प्रतिशत से अधिक ग्राहक ग्रामीण क्षेत्रों से हैं। गाँवों में लोगों को बैंक की कार्य प्रणाली की कठिन भाषा को उनकी भाषा में समझा पाना वाकई मुश्किल काम है। ऐसे में हिंदी बैंकों के लिए वरदान की तरह है। अत: गाँवों में बैंक में ज्यादातर काम हिंदी में होता है। बैंकों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग से हमारे ग्राहकों को बहुत ही सुविधा होती है। बैंकिंग से जुड़े मुश्किल शब्दों को जब हम उन्हें उनकी भाषा में समझाते हैं तो ग्राहकों को संतुष्टि मिलती है और इससे कामकाज निपटाने में भी बेहद आसानी होती है। ज्यादातर हिंदी भाषी ग्रामीण क्षेत्र बेहद पिछड़े हैं। लोगों में बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के बारे में जागरूकता पैदा करनी हैं। यही कारण है कि कोर बैंकिंग सॉल्यूशंस (सीबीएस) और एटीएम जैसी बैंकिंग सुविधाएं आज देश के ग्रामीण इलाकों तक हिंदी में पहुँच रही हैं। एसएमएस सुविधा भी ग्राहक अपनी मर्जी की भाषा में ले सकता हैं। बैंक की योजनाओं की प्रचार सामग्री हिंदी में बनाकर वितरित की जाती हैं। स्थानीय समाचार पत्रों में, टी.वी. चैनल, रेडियो जैसे प्रचार के विभिन्न प्रकार का उपयोग करते हुए बैंक अपनी योजनाओं की जानकारी लोगों तक हिंदी में आसानी से पहुँचा रहे हैं। मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग तथा मोबाईल पर उपयोग किये जाने वाले बैंकों के विभिन्न ऐप भी हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध कराये गए हैं।

आजादी के 75 वर्ष बाद भी शहरों में सभी कार्यालयों में अधिकांश कार्य अंग्रेजी में हो रहा है जबकि हिंदी सरल एवं

वैज्ञानिक भाषा है। सरकारी कार्यालयों तथा बैंकों में हिंदी का प्रयोग राजभाषा अधिकारियों के जिम्मे डाल दिया गया है। वार्षिक कार्यक्रम और लक्ष्य प्राप्ति के दायरे में राजभाषा को उलझा दिया गया है। राजभाषा को जन-जन की भाषा के रूप में व्यावहारिक बनाने के बदले औपचारिक हिंदी लागू करने की जिद में कभी-कभी अंग्रेजी का भाषांतरण करते हुए हिंदी के क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जिसके कारण स्टाफ सदस्य हिंदी का प्रयोग करने से डरते हैं।

सरकारी कार्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों पर तो राजभाषा में कार्य करने की जिम्मेदारी है। किन्तु बाजार की आवश्यकता सभी निजी उद्योगों ने पहचान ली है और आपने देखा होगा विज्ञापन की दुनिया में हिंग्लिश भाषा उपयोग में आने लगी है। उन पर भाषा के उपयोग की कोई कानूनी जिम्मेदारी तो नही थी फिर भी उन्होंने अपने उत्पाद लोगों तक पहुँचाने के लिए आम जनता की भाषा हिंदी का सहारा लिया। बैंकिंग उद्योग सेवा उद्योग है। अपने उत्पाद,योजनाएं ग्राहकों तक पहुँचाने से ही कारोबार बढ़ाया जा सकता है। ग्राहकों के लिए सारी व्यवस्थाएँ और सुविधाएँ एकत्र कर लेने के बावजूद भी ग्राहक के बौद्धिक और भावनात्मक रूप को भी समझना आवश्यक है। इसके लिए बैंक को विज्ञापन तथा ग्राहक संपर्क का सहारा लेना पड़ता है और तब भाषा का महत्व समझ में आता है। बैंकों की आपसी होड़ में उनके उत्पाद, उनकी ब्याज दरें आदि सभी लगभग एक समान हो गई हैं। तब इस स्थिति में अच्छी ग्राहक सेवा के लिए स्टाफ का ग्राहकों के प्रति व्यवहार और भाषा का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। ग्राहकों से अपनापन, जुड़ाव भाषा के माध्यम से आसानी से होता है।

निष्कर्ष : जनधन योजना के तहत जो 22 करोड़ से ज्यादा खाते खुले थे वो आम जनता की भाषा में किये गए प्रचार का ही परिणाम था। हिंदी के अधिकतम प्रयोग से ही बैंकिंग व अन्य व्यवसाय में प्रगति की जा सकेगी। आम आदमी से जुड़कर रोजमर्रा के काम में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा सरलतम, सुलभ ढंग से नयी तकनीक का प्रयोग करना ही बैंकों के लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक होगा। ईमानदारी, निष्ठा, आत्मविश्वास से भरा प्रयास बढ़ते हुए कारोबार के साथ-साथ एक दिन हिंदी को भी आसमान की ऊँचाइयों तक ले जाएगा। राजभाषा हिंदी में कार्य करना राष्ट्र गौरव और अस्मिता का प्रतीक है। यह भारत की आत्मा की आवाज है। कहीं ना कहीं हम राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति से जुड़ जाते हैं। मुश्किल कुछ भी नहीं अगर आप करने की इच्छा रखते हों, इसके लिए कवि दुष्यंत कुमार ने कहा भी है,

"कौन कहता है आसमां में छेद नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो ।"

बड़ा कौन?

(पुष्कर तराई, उप अंचल प्रबंधक एवं महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, मुंबई)

तारा कहता है मैं बड़ा
चाँद कहता है मैं बड़ा, न कि तू बड़ा
मेरे आने से तुम खो जाते हो
फिर कौन बड़ा ?
सूरज कहता है मैं बड़ा
मेरे आने से तुम कहाँ दिखते हो
फिर कौन बड़ा?
तुम बड़े न कि मैं बड़ा।

आदमी कहता है सबसे मैं बड़ा
दुनिया मेरी मुट्ठी में है
मन में गर्व का पहाड़
सोच में अहंकार की आग
पदवी का घमंड
शब्द "मैं" से शुरू और "मैं" से खत्म
फिर कौन बड़ा?
आदमी बड़ा न कि प्रकृति बड़ी ।

श्मशान कहता है मैं बड़ा
धन-दौलत न ले जाएंगे
न गर्व, न अहंकार रहेगा
न पार्थिव शरीर रहेगा
भस्म होकर खो जाएगा
फिर कौन बड़ा?
तुम बड़े न कि मैं बड़ा।

समृद्धि और विकास का प्रतीक राजभाषा हिंदी

(शिवानी साकल्ले, एस. डब्ल्यू.ओ.'ए', मण्डल कार्यालय, भोपाल)

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है और इसे राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा दिया गया था। अतः प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। वैसे तो भारत देश में बहुत सी भाषायें बोली जाती हैं परन्तु हिंदी भाषा का अपना ही एक महत्व है जिसके कारण यह लोगों के हृदय में एक महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है। क्योंकि पूर्व में काफी लम्बे समय से हिंदी भाषा का उपयोग होता आ रहा है। भक्तिकाल में पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक, चारों दिशाओं में अनेक संतो द्वारा हिंदी भाषा में ही रचनाएँ की गयी हैं।

स्वतंत्रता के समय के राजनेताओं जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, सुब्रह्मण्यम भारती आदि द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का सपना देखा गया था।

अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाने के कारण हिंदी को महात्मा गाँधी ने 1917 में गुजरात के सम्मेलन में राजभाषा के रूप में स्वीकारे जाने के लिए जोर दिया था।

राजभाषा हिन्दी की विशेषताएँ

- अन्य भाषाओं के शब्द हिंदी भाषा में भी समाहित हैं।
- इस भाषा को समझना और सीखना आसान है।
- इस भाषा को अल्पकाल में ही लिखना, पढ़ना सीखा जा सकता है।
- इस भाषा को जैसा पढ़ा जाता है वैसा ही लिखा जाता है यही इसकी मुख्य विशेषता है।
- इस भाषा को संस्कृत भाषा की बेटी कहा जाता है।
- इसके साहित्य का क्षेत्र भी विशाल है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा किसी भाषा को राजभाषा होने के लिए निम्नलिखित लक्षण बताए गये हैं :

- **आसान होनी चाहिए-** राजभाषा होने के लिए भाषा का आसान होना आवश्यक है।
- **सरल होनी चाहिए-** प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
- **बोलने वालों की संख्या अधिक होनी चाहिए –** उस भाषा को बोलने वालों की संख्या अधिक होनी चाहिए।

उपर्युक्त लक्षणों के कारण ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

राजभाषा हिंदी की विकास-यात्रा

हिंदी दीर्घकाल से अखण्ड भारत में जन–जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। भक्तिकाल में अनेक संत कवियों ने हिंदी में साहित्य रचना की और लोगों का मार्गदर्शन किया। केवल उत्तरी भारत की नहीं, बल्कि दक्षिण भारत के आचार्यों वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानन्द आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था। अहिंदी भाषी राज्यों के भक्त–सन्त कवियों (जैसे—असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव (13वीं शताब्दी), गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य आदि) ने हिंदी को ही अपने धर्म-प्रचार और साहित्य का माध्यम बनाया था। सिखों के पवित्र ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहिब में अनेक संत कवियों के हिंदी काव्य संगृहीत हैं। हिंदी के प्रसिद्ध कवि भूषण, छत्रपति शिवाजी के राजकवि थे। 1816 ई0 में विलियम केरी ने लिखा कि हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए कार्य

हिंदी भाषा का विकास और प्रसार करने के उद्देश से संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ के कर्तव्य के रूप में राज्य

को यह निर्देश दिए गये हैं कि वो हिंदी भाषा को भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाएं और उनका विकास करे।

इसके प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। जिसमें हिंदी निबंध लेखन, वाद-विवाद, हिंदी टंकण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। सरकार द्वारा भी हिंदी दिवस से संबंधित आयोजन बड़े पैमाने पर किये जाते हैं। सामान्यतः हर सरकारी, अर्ध-सरकारी संस्थान हिंदी दिवस पर कोई न कोई आयोजन करती है। इस अवसर पर कई पुरस्कार भी वितरित किये जाते हैं।

विश्वभाषा की ओर बढ़ते कदम

जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने और समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है। हिंदी ने हमें नयी पहचान दिलाई है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी हमारी "राष्ट्रभाषा" भी है। हिंदी भाषा हमें दुनियाभर में सम्मान भी दिलाती है। अतः हिंदी हमारे स्वाभिमान और गर्व की भाषा है।

एक कोशिश अभी बाकी है ...

(सुदीप विश्नोई , एस. डब्ल्यू. ओ., शाखा कार्यालय - आर.सी.सी. भोपाल)

कुछ अच्छा करने की चाह दिल में लाजमी है
चाँद को पाने की हसरत दिल में कहाँ थमीं है,
आसमान छूने के लिए तैयार अब हर जमीं है,
क्योंकि, एक कोशिश अभी बाकी है ।।

मुश्किलें तो हैं मगर इतनी भी नहीं हैं,
हौंसलों की उड़ान में अब क्या कमी है,
उम्मीद की लहरें दिल में कब थमीं हैं,
क्योंकि, एक कोशिश अभी बाकी है ।।

दूर है मंजिल मेरी पर इतनी भी नहीं है,
मेरी निगाहें मंजिल से अभी हटी जो नहीं है,
हौंसला जो बुलंद है तो फिर क्या कमी है,
क्योंकि, एक कोशिश अभी बाकी है ।।

हार गया जो वो अवतार नहीं आदमी है,
इस दुनिया में सबमें कुछ न कुछ कमी है,
दिल में सपने देखने की चाह कहाँ थमीं है,
आँख में उम्मीदों के दरिया की आज भी नमी है,
क्योंकि, एक कोशिश अभी बाकी है ।।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

पंजाब नैशनल बैंक ने पीएनबी ईज आउटलेट का उद्घाटन कर मनाया 76वां स्वतंत्रता दिवस

प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल।

पंजाब नैशनल बैंक ने बोटैनिकल गार्डन मैट्रो स्टेशन पर ब्रांड न्यू PNB@Ease आउटलेट का उद्घाटन कर 76वां स्वंतत्रता दिवस मनाया। देश के पूर्णत: स्वदेशी बैंकों में से एक पीएनबी, नवोन्मेषी, कस्टमर फ्रेंडली, पेपरलेस और डिजिटल PNB@Ease आउटलेट व क्योस्क शुरू कर भारत में ग्राहकों का सबसे चहेता बैंक बनने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस सुविधा की घोषणा सबसे पहले बैंक के द्वारका स्थित मुख्यालय पर स्वतंत्रता दिवस के उत्सव के दौरान की गई जिसके बाद नोएडा के बोटैनिकल गार्डन मैट्रो स्टेशन पर ईज आउटलेट का उद्घाटन किया गया। इस समारोह को विशिष्ट अतिथि, लोकसभा सदस्य डॉ. महेश शर्मा व पीएनबी के एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल ने संबोधित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. महेश शर्मा ने कहा, मैं पीएनबी को बधाई के साथ धन्यवाद देता हूँ इस ईज आउटलेट की सेवा शुरू करने के लिए, जहाँ सभी बैंकिंग सेवाएं एक छत के नीचे उपलब्ध करायी जा रही हैं। यह सरकार के डिजिटल इण्डिया के विजन की ओर एक कदम है।

इस अवसर पर पीएनबी के एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल ने कहा, "आज जबकि हम अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि हम पूर्णत: स्वदेशी बैंक का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिसकी स्थापना आजादी की लड़ाई में प्रमुख भूमिका निभाने वाले स्वाधीनता सेनानी लाला लाजपत राय ने की थी। मैं हार्दिक सम्मान व्यक्त करता हूँ उन सभी शहीदों के प्रति, जिन्होंने हमारी स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी और आदरपूर्वक याद कर रहा हूँ उन वीर सैनिकों को जो आज तक हमारे देश की रक्षा कर रहे हैं।

ईज आउटलेट के उद्घाटन पर उन्होंने कहा "हमें आज PNB@ Ease आउटलेट का उद्घाटन करते हुए खुशी हो रही है। यहाँ ग्राहकों को हर तरह की डिजिटल सेवाएं मिल सकेंगी जिसमें यूटिलिटी बिल्स के पेमेंट, फंड ट्रांसफर, एटीएम सेवाएं, तुरंत खाता खोलना, विडियो केवाईसी और बहुत सी डिजिटली उपलब्ध सेवाएं शामिल हैं।

द्वारका में स्वतंत्रता दिवस के उत्सव के दौरान कार्यपालक निदेशकों व सीवीओ के साथ एमडी एवं सीईओ ने स्वतंत्रता सेनानी व पीएनबी के संस्थापक श्री लाला लाजपत राय को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनकी प्रतिमा को माल्यार्पण किया। इसके उपरांत पीएनबी के कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार ने सभी पीएनबी परिवार के सदस्यों को राष्ट्रीय प्रतिज्ञा का पाठ कराया। इस अवसर पर बैंक ने अपने ग्राहकों को भी सम्मानित किया।

अपनी सीएसआर पहल के तहत बैंक दिल्ली में 3000 से ज्यादा छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है तथा तीन सरकारी स्कूलों को आधारभूत सुविधाओं के विस्तार के लिए सहयोग दिया।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर हर घर तिरंगा कार्यक्रम के दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशकगण, श्री संजय कुमार, श्री कल्याण कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री विजय कुमार त्यागी, मुख्य महाप्रबंधक, श्री सुनील सोनी ।

पंजाब नैशनल बैंक ने मनाया 76वां स्वतंत्रता दिवस

अंचल कार्यालय, मुंबई में स्वतंत्रता दिवस आयोजित किया गया। अंचल प्रबंधक, श्री बिभु प्रसाद महापात्र ने ध्वजारोहण किया। इस समारोह में श्री पुष्कर तराई, उप अंचल प्रबंधक और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

अंचल और मंडल कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों को सम्मानित करते हुए अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता।

मंडल कार्यालय, टिहरी में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण करते हुए मंडल प्रमुख, श्री राजेंद्र कुमार भाटिया। साथ में हैं मंडल कार्यालय के अन्य उच्चाधिकारीगण।

76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अंचल कार्यालय, अमृतसर में आयोजित समारोह में ध्वजारोहण करते हुए अंचल प्रबंधक श्री प्रवीन गोयल। साथ में हैं अन्य उच्च अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, दक्षिण 24 परगना द्वारा 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए मंडल प्रमुख, श्री बिश्वरंजन नायक तथा साथ में मुख्य प्रबंधक, श्री शंकर लाल मंडल एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मंडल प्रमुख, श्रीमती अंजू मित्तल के नेतृत्व में मंडल कार्यालय, हिसार और इसके अधीनस्थ शाखा कार्यालयों के स्टाफ सदस्य शहर में तिरंगा यात्रा निकालते हुए।

भारतवर्ष को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी की भूमिका

(हरगोविंद मकवाना, अधिकारी, क्षेत्रीय वसूली केंद्र, असम रोड, अहमदाबाद)

प्रस्तावना:-

आत्मनिर्भर भारत को अन्य शब्दों में स्वावलंबी भारत अथवा स्वतंत्र भारत आदि नामों से भी जाना जाता है। आत्मनिर्भर बनना हर एक व्यक्ति, समाज और देश के लिए सुनहरा सपना है। आत्मनिर्भर हम तब बन सकते हैं कि जब हम हमारे हर कार्य को पूरा करते हुए आने वाली कठिनाइयों तथा जीवन में आने वाली समस्त चुनौतियों का सामना करके सफलता प्राप्त करें।

दूसरे शब्दों में हम अपने हर काम या अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें यानि कि दूसरे की मदद या सहायता न लें। स्वतंत्र यानि स्वावलंबी बने। यदि कोई भी व्यक्ति, समाज या कोई देश आत्मनिर्भर होगा तो यह बात निर्विवाद है कि यदि किसी देश पर किसी भी समय कोई व्यक्तिगत व सामाजिक चुनौतियाँ यानि मुसीबत आएगी तो वे खुद ही अपनी ताकत से उन चुनौतियों, अड़चनों को सुलझा सकता है। अत: उसे किसी दूसरे की जरूरत पड़ती नहीं है। किसी भी देश के पास संसाधनों एवं वस्तुओं को सृजित करने के लिए समय पर सामग्री उपलब्ध है तो यह देश इसका उपयोग करके उपसंसाधनों का निर्माण यानि सृजन स्वयं कर सकता है। फलस्वरूप, देश वास्तविक रूप से आत्मनिर्भर बनेगा और किसी अन्य देश पर निर्भर रहने की कोई भी जरूरत नहीं पड़ेगी यह एक सत्य है। अत: 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम 'आत्मनिर्भर', भारत का प्रथम पहलु है।

उपरोक्त विषय वस्तु को मद्देनजर रखते हुए हम कह सकते हैं कि हमारे भारतवर्ष में युगों-युगों से विभिन्न प्रकार की भाषाएं एवं बोलियाँ बोली जाती है। भारतीय भाषाओं का भारतवर्ष को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिनमें से करीबन 2272 भाषाएं – भारतवर्ष में बोली जाती हैं। अत: इन भाषाओं को एक-दूसरे के बीच सामंजस्य स्थापित करना" आत्मनिर्भर" भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पहलु है वर्तमान में कुल 22 भारतीय भाषाओं को संविधान की आठवीं सूची में समाविष्ट किया गया है। भाषा विचारों की संवाहिका होती है। संप्रेषण इसकी प्रथम कसौटी है।

मानवीय विचारों की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति वाणीगत भाषा में हुआ करती है। मनुष्य को मनुष्य से, समाज को समाज से, प्रदेश को प्रदेश से तथा राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाने में भाषा सेतु व सोपान का काम करती है। अत: भाषा विचारों के आदान-प्रदान तथा संपर्क का माध्यम है। भाषा केवल सम्प्रेषण ही नहीं करती बल्कि चरित्र का उद्घाटन भी करती है। समाज को, राष्ट्र को जोड़ती है। भाषा एक ऐसी जड़ी-बूटी है, जो समाज को तथा राष्ट्र को अखंडित रखती है। भारत को "आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाने में हिंदी का बड़ा योगदान है।

"आत्मनिर्भर' भारत वास्तविक रूप से कोई नई अवधारणा नहीं है परन्तु यह विचार महात्मा गाँधी जी के ग्राम-स्वराज की विचारधारा का ही नया रूप है।

आत्मनिर्भर भारत की परिभाषाएं:-

"आत्मनिर्भर भारत का सही आश्रय तो यह होता है कि प्रत्येक व्यक्ति, समाज, राज्य और किसी भी देश, किसी अन्य व्यक्ति, समाज या देश पर निर्भर न होकर अपने खुद पर या स्वयं पर निर्भर हो।

आत्मनिर्भर भारत से यह मतलब है कि हमारा देश भारत कृषि क्षेत्र तथा सेवा क्षेत्र में स्वयं पर निर्भर हो और हमें इन क्षेत्रों में किसी पर निर्भर न रहना पड़े, हमें अन्य देशों की मदद न लेनी पड़े।

हमारा देश प्रत्येक वस्तु-उत्पाद का निर्माण करें, जिसका

उपयोग हम खुद करें, चाहे वो छोटी से छोटी और बड़ी– से– बड़ी वस्तु या चीज ही क्यों न हो।

"हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी " ने बताया था कि एक राष्ट्र की शक्ति उसकी अपनी निर्भरता से है, दूसरों से उधार लेकर काम चलाने में नहीं। "आत्मनिर्भर भारत अभियान" के अंतर्गत हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री 'श्री नरेंद्र मोदी जी ने 20 लाख करोड़ रूपये के पैकेज की घोषणा की है। यह पैकेज हमारे देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का करीबन 10% है। यह पैकेज आत्मनिर्भर भारत के सूक्ष्म, लघु तथा मझौले (मध्यम) उद्योग को जीवन संजीवनी प्रदान करेगा। भारतवर्ष के कोने-कोने में स्वदेशी वस्तुओं तथा अन्य उत्पादों का पहुँचाना तथा लोगों को स्वदेशी उत्पादों के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु हिंदी भाषा का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जिससे हमारे देश के लोगों को अपने ही देश में बनी हुई वस्तु की पहचान हो सके।

अधिक वस्तुओं का उत्पादन होने से हम अपने भारतवर्ष में उत्पादित वस्तुओं का अन्य देशों में हिंदी भाषा के माध्यम से निर्यात करके हमारे देश के आयातों में कमी लाये हैं। आत्मनिर्भर बनके निर्माण क्षेत्र में अधिक बढ़ोतरी करके निर्यात लाभ ले सकते हैं भारतवर्ष की यह भी महत्वपूर्ण विशेषता है कि हमारे सरकारी क्षेत्र भी आत्मनिर्भर भारत के लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

आत्मनिर्भरता के महत्वपूर्ण लाभ: -

किसी भी देश को यानि हमारे भारतवर्ष को अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। आवश्यक वस्तुओं के आयात के लिए अन्य देशों के सामने 'गिड़-गिड़ाना नहीं पड़ेगा।

देश में सूक्ष्म, लघु, मध्यम एवं छोटे-छोटे एवं बड़े पैमाने के उद्योगों में अधिक बढ़ोतरी होगी। अत: देश में औद्योगिक विकास में वृद्धि होगी।

देश का युवाधन, सफल और सक्षम एवं कामयाब बनेगा और देश के युवावर्ग को रोजगार के महत्तम अवसर उपलब्ध होंगे।

देश में बेरोजगारी में कमी होगी और इसके साथ-साथ देश गरीबी से भी मुक्त होगा और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होगी।

देश के अर्थतंत्र में गति तथा आर्थिक व्यवस्था भी मजबूत होगी।

किसी भी समय प्राकृतिक आपदा या तत्कालीन विपत्ति में देश में खाद्यानों में वृद्धि एवं मांग बढ़ जाती है, यदि देश आत्मनिर्भर है यानि देश के पास खाद्यान्नों का भण्डार है तो उसे किसी भी अन्य दूसरे देश पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान:-

भारतवर्ष विभिन्न भाषाओं का देश है। इन सभी भाषाओं के सामजस्य के लिए 'हिंदी' एक ऐसी भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से असम तक बोली और समझी जाती है। कहने का मतलब पूरे भारतवर्ष के लोग हिंदी में आसानी से बोल सकते हैं और समझ भी सकते हैं। इसलिए भारत निर्मित उत्पाद-वस्तुओं का क्रय-विक्रय भारतवर्ष में सरलता से हो सकता है, जिसका पूरा लाभ भारतीय अर्थव्यवस्था की गति बढ़ाने में मिलता है। जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा एवं प्रगति में 'हिंदी भाषा का बड़ा योगदान है।

ग्रामीण जनता के लिए 'हिंदी' आशीर्वाद है। हम जानते हैं कि भारत की करीबन 80% जनसंख्या गाँवों में ही रहती है। परिणाम स्वरूप ग्रामीण लोग अनपढ़ और कम पढ़े-लिखे होते हैं। भारत सरकार तथा बैंकों द्वारा जारी लाभकारी योजनाओं से अनजान होते हैं। परन्तु ये सभी योजनाएं, यदि हिंदी भाषा में प्रकाशित की जाए तो ग्रामीण लोग सभी योजनाओं को आसानी से समझ सकते हैं और इनका लाभ भी ले सकते हैं। फलस्वरूप देश के लोग आर्थिक रूप से सशक्त बनके स्वयं आत्मनिर्भर बन सकते हैं। इसी प्रकार देश के सभी ग्रामीण लोग आत्मनिर्भर बनते हैं, तो भारत देश के आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में वृद्धि होती है, जिसकी आधारशिला हिंदी का प्रचार, प्रयोग और प्रचलन का ही प्रभाव है।'

"आत्मनिर्भर भारत में स्वदेशी वस्तुओं के विपणन में हिंदी भाषा का महत्व":-

भारत वर्ष में उत्पादित स्वदेशी एवं घरेलू वस्तुओं के विपणन करने के लिए हिंदी भाषा का अत्यंत महत्व है। विपणन की सफलता की असली कुँजी उपभोक्ताओं के साथ संपर्क का माध्यम भाषा ही होती है। अत: देश में निर्मित यानि कोई भी राज्य, प्रान्त तथा प्रदेश में उत्पादित स्वदेशी वस्तुओं का विपणन करने में हिंदी भाषा की अधिक महत्वपूर्ण भूमिका है यदि हमें हमारे देश में प्रयुक्त प्रचलित सरल एवं सहज हिंदी भाषा की जानकारी है तो हम एक प्रांत से दूसरे प्रांत में

हिंदी भाषा के माध्यम से रेडियो, टेलीविजन तथा अन्य दृश्य एवं श्रव्य संसाधनों जैसे विज्ञापन के माध्यम से इनका प्रचार करके आसानी से विपणन करने में कामयाब रहेंगे तथा आत्मनिर्भर भारत की दिशा में आगे बढ़ेंगे यह एक सर्वमान्य सत्य है।

कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता में हिंदी भाषा का योगदान:-

हमारे भारतवर्ष में सर्व संपन्न आत्मनिर्भरता एवं अर्थतंत्र के विकास में सबसे अधिक महत्व कृषि क्षेत्र का ही है यह बात निर्विवाद सत्य है। कृषि क्षेत्र में वृद्धि के लिए किसानों की बड़ी भूमिका है जो किसानवर्ग गाँव में रहता है अनपढ़ तथा कम पढ़ा-लिखा होता है। कृषि से संबंधित सरकारी एवं बैंकिंग योजनाओं से वे किसान लोग भी अनजान होते हैं। अत: देश की कुल आय में करीबन 70% से अधिक भाग कृषि क्षेत्र का होता है। यदि कृषि से संबंधित सभी योजनाओं को 'हिंदी' में प्रकाशित किया जाये तो ग्रामीण किसान भी इन योजनाओं का लाभ प्राप्त कर आत्मनिर्भर हो सकते हैं। इसी प्रकार हम कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकते हैं जैसे "खाद्यान्नों" के लिए अब हमारे देश को अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। इसी प्रकार " हिंदी" के माध्यम से हमारा देश कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में और आगे है।

औद्योगिक विकास में आत्मनिर्भरता के लिए हिंदी भाषा का योगदान:-

औद्योगिक विकास के अंतर्गत सूक्ष्म, लघु, मध्यम एवं बड़े पैमाने के उद्योगों को शामिल किया जाता है। भारत सरकार तथा भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए "आत्मनिर्भर भारत" में इनको अधिक महत्व दिया है। इस समय इन उद्यमों द्वारा निर्मित स्वदेशी वस्तुओं, उत्पादों को हमारे देश में प्रचलित "हिंदी भाषा के माध्यम से इन चीजों को "वोकल फॉर लोकल" पहलु के तहत एक प्रान्त में क्रय-विक्रय कर आसानी से अपना विकास कर सकते हैं। अत: इन चीजों को हमें दूसरे देशों से आयात नहीं करना पड़ता है तथा अन्य देशों पर निर्भर भी नहीं रहना पड़ता जो भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे ले जाने में "हिंदी" भाषा की एक अहम भूमिका को दर्शाता है।

नए उपभोक्ताओं को आकर्षित करने में "हिंदी" भाषा का योगदान:-

भारतवर्ष में भूमि पर रहने वाले जन और जन की संस्कृति इन सबके के मेल से किसी राष्ट्र के स्वरुप का निर्माण होता है। इन सबके में सामंजस्य स्थापित करने में "हिंदी भाषा" की महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी देश की भाषाओं/भाषा में जितनी मुखरता होगी, उसकी अस्मिता, पहचान और चिंतन शक्ति उतनी ही प्रखर होगी। आईये आज हम सब भारतवासी एक जुट होकर अपने इस स्वाभिमानी भारत को "आत्मनिर्भर भारत" बनाने का संकल्प लें।

रक्षाबंधन

(विशाल कुमार, विपणन अधिकारी, मंडल कार्यालय, नदिया)

सावन माह का अंतिम वार
देखो आया राखी का त्यौहार।
पूर्णिमा को मनाते इसे हम यार,
भाई – बहन का दिखता प्यार।
बहनें सज – धज कर रहती तैयार,
प्यारे भाई का करती इंतजार।
राखी, मिठाई और दीपक से थाल सजाती,
कुमकुम का टीका माथे पर लगाती।
दीपक से भाई की आरती करती,
तब जाकर कलाई पर राखी बांधती।
भाई भी सदैव रक्षा को तत्पर रहता,
जीवन भर संबंध निभाता।
दोनों के प्रेम में कितनी है मिठास,
एक दूजे के लिए हर पल रहता अटूट विश्वास।

जनमानस की भावना हिंदी

विद्या भूषण मल्होत्रा, अधिकारी (सेवा निवृत्त), जयपुर , मंडल कार्यालय

पृथ्वी पर रहने वाले लोग और उन लोगों की संस्कृति, इन सबके मेल से ही किसी राष्ट्र के स्वरूप का निर्माण होता है तथा इसमें सामंजस्य स्थापित करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अत: यह सत्य है कि भाषा विचार अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और राष्ट्र की प्रगति का द्योतक भी। इसलिए हम कह सकते हैं कि भाषा केवल सम्प्रेषण ही नहीं करती, समाज को जोड़ती है, समाज को धारण करती है।

हिंदी निर्विवाद रूप से सरल, सक्षम व समृद्ध भाषा है। इसकी देवनागरी लिपि वैज्ञानिक व स्वाभाविक है, जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। व्याकरण तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी यह विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में काफी समृद्ध है। इसकी शब्दावली में करोड़ों शब्द हैं जो किसी भी विचार बोध की अभिव्यक्ति करने में अपने आप में सक्षम हैं। हिंदी में कुछ विशेष गुण हैं जैसे-जनसामान्य के बीच लोकप्रियता, जीवंतता, स्वीकार्यता, उदारता व स्वायत्तता आदि। अत: संपर्क भाषा होने के सारे गुण हिंदी भाषा में विद्यमान हैं। संपर्क भाषा होने के कारण देश के विभिन्न प्रान्तों में रहने वाले विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच भाषाई एकता को सुदृढ़ करने में भी हिंदी की विशेष भूमिका है।

हिंदी के महत्व को ध्यान में रखकर ही भारत सरकार ने वर्ष 1963 में एक राजभाषा अधिनियम बनाया। इसके अंतर्गत दिसंबर 1967 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया जिसमें हिदी को राजभाषा घोषित किया गया। 17 जुलाई 1976 में राजभाषा नियम जारी किए गए जो न केवल भारत सरकार के कार्यालयों, मंत्रालयों व विभागों पर लागू होते हैं बल्कि राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों पर भी लागू होते हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी जानने वालों की संख्या 73.30% है अत: हिंदी को राजभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा का महत्व प्रदान किया जाता है।

हिंदी भाषा का बाजारीकरण :-

हिंदी भाषा के बाजारीकरण का अर्थ हिंदी का प्रचार और प्रसार है। हमारा देश चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर है। भारत विश्व मंच पर एक सशक्त अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकारी नीतियों व विकास संबंधी योजनाओं को सभी लोगों तक पहुँचाने के लिए जन साधारण की भाषा होना नितांत आवश्यक है और निसंदेह हिंदी इस कसौटी पर खरी उतरती है।

नब्बे के दशक में शुरू हुई भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का सबसे ज्यादा लाभ यदि किसी भारतीय भाषा को हुआ तो वह हिंदी है। चूँकि हिंदी पहले से ही मनोरंजन, साहित्य, पत्रकारिता और राजनीतिक विमर्श की सबसे बड़ी भाषा थी। अत: जैसे ही बाजरोंमुख अर्थव्यवस्था ने पंख फैलाए, हिंदी ने तेजी से उड़ान भरी।

आज वैश्वीकृत और उदारीकृत अर्थव्यवस्था ने भाषाओं का महत्व उजागर कर दिया है। हिंदी भी विश्व की कुछ प्रमुख भाषाओं में से एक है। भारत को जानने व समझने वालों के अलावा आज व्यापार और वाणिज्य क्षेत्र के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं। अत: हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में भी अपनी पकड़ मजबूत करती जा रही है। आज विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 110 करोड़ 30 लाख है।

कुछ विद्वान हिंदी की प्रगति का जायजा आंकड़ों की भाषा फीसदी (प्रतिशत) में लेते हैं। जबकि भाषा तो एक अभिव्यक्ति है। जिसका मापन अंकों या प्रतिशत में नहीं किया जाना चाहिए। भाषा तो बहते हुए जल की तरह है जो तमाम अवरोधों के बावजूद अपना रास्ता ढूँढ ही लेती है। कुछ ऐसी स्थिति हिंदी की भी है। इसीलिए देश में हिंदी

अनेक अवरोधों के बावजूद भी चाहे वो व्यापारिक प्रतिष्ठान हों या उपक्रम, बिना हिंदी के काम नहीं चलता। अपनी बात कहनी है और उत्पाद को बाजार में बेचना है तो हिंदी को अपनाना ही होगा, इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

हिंदी भाषा के बाजारीकरण के उद्देश्य:-

हिंदी भाषा के बाजारीकरण का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा की प्रगति तथा प्रचलन में आने वाले अवरोधों व अड़चनों को हटाना है। मैकाले द्वारा लागू की गई शिक्षा पद्धति और उसके परिपोषकों का मानना है कि अंग्रेजी श्रेष्ठ भाषा है तथा इसकी सहायता के बिना भारतीय भाषाओं का विकास एवं एकता संभव नहीं। डलहौजी व लार्ड कर्जन से लेकर जवाहर लाल नेहरु तक मैकाले के शब्दों को दोहराते रहे हैं। ऐसे लोगों को लक्ष्य करके रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा है:- "हमने अपनी आँखे खोकर चश्मे लगा लिए हैं। हिंदी बुद्धिजीवी अगर अंग्रेजी को गुड़ की तरह खाये तो शायद उसे पचा भी लें, लेकिन वह उसे अफीम की तरह खाता है, इसलिए पिछले सवा दो सौ सालों से हमारे विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी का घोटा लगाए जाने के बाद भी आज तक कोई शेक्सपियर, कोई मिल्टन या कोई वुड्सवर्थ पैदा नहीं हुआ। तुलसीदास, सूरदास, कालिदास, दयानंद सरस्वती या स्वामी विवेकानंद जैसे गुलाब अपनी जमीन, अपनी आबो-हवा व अपनी भाषा में ही खिलते हैं। अत: अपनी भाषा अपनायें।

हिंदी समाचार पत्रों की लोकप्रियता ने भी सफलता के नए आयाम स्थापित किये हैं। इनकी प्रसार संख्या में भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर संवाददाता, उपसंवाददाता, प्रूफ रीडर, समाचार संपादक, फोटो ग्राफर, डिजाइनर व कार्टूनिस्ट के रूप में मिल रहे हैं। यूनिकोड ने हिंदी पत्राचार के क्षेत्र में काफी प्रगति कर ली है। मीडिया के क्षेत्र में जैसे- दृश्य, श्रव्य, प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक में हिंदी का वर्चस्व बढ़ा है।

सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने हिंदी में अपना प्रभावशाली अस्तित्व दर्शा दिया है। इंटरनेट पर हिंदी की अनेक वेबसाइट और ईमेल सुविधा होने से सम्प्रेषण, संवाद और व्यापार हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ उजागर हुई हैं। विश्व की सुप्रसिद्ध साईट- 'ई-कॉमर्स' व ई-गवर्नेस' के क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर परिलक्षित हुए हैं वहीं दूसरी ओर साइबर स्पेस के क्षेत्र में हिंदी की सफलताएं प्रशंसनीय हैं।

हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने हिंदी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा की अनुमति 2018 में दे दी थी। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में इसका स्वागत किया गया है। आशा भी की जाती है कि इंजीनियरिंग की पुस्तकें सरल भाषा में लिखी जायें। कुछ किये गए सर्वेक्षणों से पता चला है कि उच्चतम न्यायालय के फैसले जोकि अंग्रेजी में होते हैं उसे 50% से अधिक अधिवक्ता ठीक से समझ ही नहीं पाते। अत: उच्चतम न्यायालय के सभी निर्णयों का अब हिंदी में अनुवाद प्रारंभ हो गया है। इससे हिंदी को नई दिशा मिलेगी।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा को भावात्मक अखंडता के माध्यम से सुदृढ़ करने तथा हिंदी के प्रचार व प्रसार हेतु प्रथम 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का आयोजन वर्ष 1975 में नागपुर में किया गया। जो प्राय: 3 वर्ष में एक बार मनाया जाता है। इसे हर बार अलग-अलग देशों में इसलिए मनाया जाता है कि हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता मिले। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा और साहित्य में विदेशी विद्वानों के योगदान को मान्यता प्रदान करना तथा सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान, आर्थिक विकास व संचार के क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना शामिल है।

वर्तमान परिवेश में हिंदी की सार्थकता

हमारा देश विकास के मार्ग पर तेजी से बढ़ रहा है। उदारीकरण के इस दौर में पूरा विश्व एक गाँव बन गया है। तकनीक के नए क्षितिज हमारे सामने खुल गए हैं। 21वीं सदी में कदम रखने के बाद हिंदी अब विश्व बाजार में अपनी समस्त क्षमता व भव्यता के साथ प्रवेश कर चुकी है। हिंदी चैनलों को देखने वाले दर्शकों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि हुई है। विगत वर्षों में हिंदी के नए चैनलों का प्रारंभ तथा कोविड-19 के समय हिंदी की वेब सीरीज का बहुतायत में बनना हिंदी की लोकप्रियता व सार्थकता को दर्शाता है।

इसी क्रम में जहाँ एक तथ्य बताना आवश्यक है कि दो दशक पूर्व जब एक अंग्रेजी फिल्म 'जुरासिक पार्क' चेन्नई में आई तो मात्र एक सिनेमाघर में चली और यही फिल्म जब हिंदी में डब होकर पुन: आई तो चेन्नई के कई सिनेमा घरों में हाउसफुल चली। यही हाल देश के अन्य प्रांतों में भी था। इससे यह स्पष्ट है कि हम लोग अंग्रेजी की झूठी मानसिकता ओढ़े हुए हैं। जबकि देश के सभी प्रांत हिंदी सही ढंग से समझ लेते हैं। हमें अपने देश की भाषा पर गर्व होना चाहिए तथा इस मानसिकता को त्यागना चाहिए कि अंग्रेजी सभ्यता व बड़प्पन का प्रतीक है।

पहले देसी व विदेशी कम्पनियाँ अपने ज्यादातर विज्ञापन अंग्रेजी में दिया करती थी। लेकिन अब लगभग 90% विज्ञापन हिंदी में ही होते हैं क्योंकि सभी को हिंदी की लोकप्रियता का पूरा आभास है। " भरोसे का प्रतीक – पीएनबी, 'ठंडा मतलब कोका कोला" और 'सस्ता नहीं सबसे अच्छा' हिंदी में ही हो सकता है अंग्रेजी में नहीं'। जर्मनी के डॉक्टर लोथार लुत्से ने ठीक ही कहा है – ' हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता'।

दुनिया का सबसे बड़ा भाषा विज्ञान भारत का है। विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी ऐसी भाषा है जिसमें 2 करोड़ से भी अधिक शब्द है। उपसर्ग, परसर्ग व धातुओं के जरिये इनकी संख्या सहजता से अधिक बढ़ाई जा सकती है। हिंदी का यह विशेष गुण है कि वह दूसरी भाषाओं के शब्दों को सहजता से स्वीकार कर लेती है।

अंत में:-

अंत में यह कहा जा सकता है कि हिंदी देश की संपर्क भाषा है, अधिकांश की मातृभाषा व संविधान द्वारा घोषित राजभाषा है। जिसका प्रयोग हम जीवन के हर पहलु में करते हैं। अन्य भाषाओं में प्रदेश बोलता है, हिंदी में देश बोलता है। आज हिंदी तमाम अवरोधों के बावजूद जनसाधारण के समर्थन से निरंतर आगे बढ़ती जा रही है। आज इसका प्रयोग संवैधानिक अनिवार्यता को पूरा करने के लिए नहीं बल्कि जनमानस की एक आस्था प्राप्त भावना के रूप में उभरकर सामने आया है। अत: नई सदी में हिंदी का भविष्य नित नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगा।

अच्छा! हम चलते हैं।

(ललित कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक, शाखा: मेटलडोबा, पश्चिमी मेदिनीपुर)

अच्छा! हम चलते हैं।
नई आशाएँ, कुछ नए अरमान लिये।
जिम्मदारियों का बोझ, घर का सारा सामान लिये।।
ढल रहा हूँ अब, दिनभर की थकान लिये।।
हर शाम जैसे दिन/सूरज ढलते हैं।।
अच्छा! हम चलते हैं।।

रह लिये इस शहर में,
जितना हमें रहना था।
सह लिये यहाँ की धूप- बारिश,
जितना हमें सहना था।।
मैं तो नीर हूँ, बर्फ़ कैसे बन गया,
मेरी प्रकृति तो निरंतर बहना है।।
चलो! हम भी अब बर्फ की तरह पिघलते हैं।।
अच्छा! हम चलते हैं।।
मैं रहूँ या ना रहूँ,
इस आशियाँ को सजाये रखना।
हँसना, मुस्कुराना, खिलखिलाना,
महफ़िल को यूँ ही खुशनुमा बनाए रखना।।
मैं आऊँगा याद बनकर, जिंदगी को रौशन करने,
जैसे शाम ढले, आँगन में दीप जलते हैं।।
अच्छा! हम चलते हैं।।

डर का संशय भी है तो,
चुनौतियों का जोश भी।
आत्मविश्वास से काम करूँ मैं,
रखना होगा थोड़ा होश भी।।
कछुए-सी धीमी चाल है बेहतर,
हार जाता तेज़ चलकर खरगोश भी।।
असली विजेता हैं वही, जो
ठोकर खाकर संभलते हैं।।
अच्छा! हम चलते हैं।।

प्रधान कार्यालय में हिंदी दिवस

पंजाब नैशनल बैंक के समस्त अंचल, मंडल और शाखाओं में सितंबर माह को हिंदी माह के रूप में मनाया जाता है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी माह के उपलक्ष्य में राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल ने की। इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे तथा श्री कल्याण कुमार सहित मुख्य महाप्रबंधकगण एवं महाप्रबंधकगण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रधान कार्यालय में राजभाषा समारोह के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल तथा कार्यपालक निदेशकगण, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे एवं श्री कल्याण कुमार।

कार्यक्रम का शुभारंभ एमडी एवं सीईओ, कार्यपालकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय ने सर्वप्रथम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से बैंक को 02 'राजभाषा कीर्ति' पुरस्कार दिल्ली बैंक नराकास को 'राजभाषा कीर्ति' प्रथम पुरस्कार एवं पंजाब नैशनल बैंक को 'राजभाषा कीर्ति' द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए समस्त स्टाफ सदस्यों को हार्दिक बधाई दी तथा भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन के नए आयाम स्थापित करने एवं प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार ने सभी स्टाफ सदस्यों को अपना दैनिक कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया और सभी स्टाफ सदस्यों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई।

समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक- राजभाषा ने राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में बैंक की वर्ष भर की उपलब्धियों के बारे में सभी स्टाफ सदस्यों को जानकारी दी।

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा कार्यपालक निदेशकगणों द्वारा प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों, अंचलों तथा मंडल कार्यालयों के स्तर पर लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान काव्य संध्या का आयोजन भी किया गया। प्रसिद्ध कवि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा एवं कवियित्री डॉ. सीता सागर जी

पंजाब नैशनल बैंक प्रधान कार्यालय द्वारका नई दिल्ली में आयोजित राजभाषा समारोह एवं सांस्कृतिक संध्या में उपस्थित बैंक के एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशकगण, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार, प्रसिद्ध हास्य कवि, पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा एवं कवियित्री, डॉ. सीता सागर। साथ में दृष्टव्य हैं श्री देवार्चन साहू, महाप्रबंधक-राजभाषा एवं श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा।

ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। श्री सुरेन्द्र शर्मा जी ने अपनी हास्य कविताओं से श्रोताओं को खूब हँसाया और साथ ही अपनी व्यंग्यपूर्ण रचनाओं के माध्यम से सामाजिक संदेश भी दिया तथा कवियित्री डॉ. सीता सागर ने अपनी भावपूर्ण और रचनानात्मक कविताओं से साहित्यिक भावों को अलंकृत कर श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

अंत में श्री देवार्चन साहू, महाप्रबंधक-राजभाषा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अंचल तथा मंडल कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

अंचल कार्यालय - दिल्ली

अंचल कार्यालय - जयपुर

अंचल कार्यालय - हैदराबाद

अंचल कार्यालय - लखनऊ

अंचल कार्यालय - वाराणसी

अंचल कार्यालय - शिमला

अंचल कार्यालय - अहमदाबाद

अंचल कार्यालय - आगरा

अंचल तथा मंडल कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

अंचल कार्यालय - भोपाल

अंचल कार्यालय - पटना

अंचल कार्यालय - लुधियाना

अंचल कार्यालय - गुवाहाटी

अंचल कार्यालय - मेरठ

अंचल कार्यालय - चंडीगढ़

अंचल कार्यालय - मुंबई

अंचल कार्यालय - दुर्गापुर

अंचल तथा मंडल कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

मंडल कार्यालय - फाज्लिका

मंडल कार्यालय - बरेली

मंडल कार्यालय - बस्ती

मंडल कार्यालय - बिजनौर

मंडल कार्यालय - ब्रह्मपुर

मंडल कार्यालय - मालदा

मंडल कार्यालय - मुजफ्फरपुर

मंडल कार्यालय - सोलन

अंचल तथा मंडल कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

मंडल कार्यालय - दक्षिण 24 परगना

मंडल कार्यालय - पश्चिम मुंबई

मंडल कार्यालय - बैंगलुरु

मंडल कार्यालय - हिसार

मंडल कार्यलय - उज्जैन

मंडल कार्यालय - आरा

मंडल कार्यालय - ठाणे

मंडल कार्यालय - कानपुर

संसदीय समिति के दौरे

संसदीय औद्योगिक स्थायी समिति

अगरतला, त्रिपुरा में 29 और 30 अगस्त 2022 को आयोजित संसदीय औद्योगिक स्थायी समिति की बैठक में उपस्थित माननीय सांसदगण के साथ बैंक की ओर से सहभागिता करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री विजय दुबे तथा अंचल प्रबंधक, गुवाहाटी, श्री बिक्रमजित सोम व अन्य अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति

दिनांक 03 जुलाई 2022 को मंडल कार्यालय, जम्मू के संसदीय राजभाषाई निरीक्षण के दौरान मंच पर उपस्थित संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यगणों का अभिवादन करते हुए महाप्रबंधक, राजभाषा, श्री एस.के. दाश, अंचल प्रबंधक, श्री प्रवीन गोयल, मंडल प्रमुख, श्री नीरज कुमार आनंद, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, श्रीमती मनीषा शर्मा एवं अन्य अधिकारीगण।

दिनांक 26-27 अगस्त,2022 को मंडल कार्यालय, उदयपुर के संसदीय राजभाषाई निरीक्षण के दौरान संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यगणों के साथ उपस्थित हैं महाप्रबंधक-राजभाषा, श्री देवार्चन साहू, मंडल प्रमुख, श्री सुरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, श्रीमती मनीषा शर्मा, मुख्य प्रबंधक, श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा एवं अन्य अधिकारीगण।

राजभाषा गतिविधियाँ

प्रधान कार्यालय में सितंबर तिमाही हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, श्री राजेंद्र कुमार साबू, मुख्य महाप्रबंधक, एसएमईएडी, श्री संजय वार्ष्णेय, मुख्य महाप्रबंधक, डीबीटीडी, महाप्रबंधक-राजभाषा, श्री देवार्चन साहू, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, श्रीमती मनीषा शर्मा, श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

दिल्ली बैंक नराकास की गृह पत्रिका "बैंक भारती" के 27वें अंक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि, श्री बाबूलाल मीना, निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, विशिष्ट अतिथि, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष-दिल्ली बैंक नराकास एवं अंचल प्रबंधक (दिल्ली), पंजाब नैशनल बैंक, श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य-सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक।

हिंदी माह, 2022 के दौरान एलकेएमसी विभाग, प्रधान कार्यालय, द्वारका द्वारा आयोजित हिंदी प्रश्नोतरी प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक, एलकेएमसी विभाग, श्रीमती रीता कौल।

हिंदी माह, 2022 के दौरान सतर्कता विभाग, प्र.का., द्वारा आयोजित हिंदी प्रश्नोतरी प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक, सतर्कता विभाग, श्री अनुपम तथा सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, श्रीमती मनीषा शर्मा।

मंडल कार्यालय, झाँसी में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला एवं देखो, बताओ और गाओ/अभिनय करो प्रतियोगिता के दौरान मंडल प्रमुख, श्री राजेश कुमार जैन, अंचल कार्यालय, आगरा से पधारे वरिष्ठ प्रबंधक, श्री गणेश का पुष्पगुच्छ से अभिनंदन करते हुए। साथ में हैं प्रबंधक, राजभाषा, श्री जीतेंद्र कुमार अहिरवार।

शाखा पणजीम गोवा को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पणजीम (संयोजकः सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया) का तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई से तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री कुमार गौरव, उप प्रबंधक।

राजभाषा गतिविधियाँ

नवी मुंबई नराकास द्वारा क्षेत्रीय स्टाफ कॉलेज, मुंबई को वर्ष 2019-20 एवं 2020-21 के लिए राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यालय प्रमुख, श्री राजेश कुमार के साथ श्रीमती इंदुमति झा, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा एवं सुश्री ऋतिका गुप्ता, राजभाषा अधिकारी।

मंडल कार्यालय-बठिंडा की सितंबर तिमाही के दौरान आयोजित की गई राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान मंडल प्रमुख, श्री जतीन्द्र मनकोटिया मंडल के सभी स्टाफ सदस्यों को अपना कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करने के लिए प्रेरित करते हुए।

मंडल कार्यालय, सोलन में सितंबर 2022 तिमाही हेतु आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान मंडल प्रमुख, सोलन, श्री संजीव कुमार स्टाफ सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करते हुए।

मंडल कार्यालय, जालंधर में आयोजित सितंबर तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए मंडल प्रमुख, श्री भूषण शर्मा।

मंडल कार्यालय, दक्षिण 24 परगना द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला सह संगोष्ठी आजादी के अमृत महोत्सव में ग्राहक संबंध एवं हिंदी' विषय पर आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय- भारत सरकार का पौधा भेंट कर स्वागत करते हुए मंडल प्रमुख, श्री बिश्वरंजन नायक।

अंचल कार्यालय, वाराणसी में आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए अंचल प्रबंधक, श्री अजय कुमार सिंह, साथ में दृष्टव्य हैं श्री बलिकरण यादव, आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय प्रमुख एवं श्री आनंद कुमार राय, उप अंचल प्रबंधक व प्रतिभागीगण।

राजभाषा गतिविधियाँ

श्री आशीष चतुर्वेदी, मंडल प्रमुख, नागपुर की अध्यक्षता में बैंक व्यवसाय विकास पर "बैंकिंग में हिंदी, हिंदी में बैंकिंग विषय" पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मंडल कार्यालय, फाज़िल्का में आयोजित राजभाषा कार्यान्यवन समिति की तिमाही बैठक के दौरान मण्डल प्रमुख, श्री नरेश कुमार नागपाल एवं अन्य स्टाफ सदस्यगण।

हिंदी माह के दौरान प्र. का. के मल्टी पर्पज हॉल में स्केल I से III तक के स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित प्रतियोगिता "कुछ भूल गए कुछ याद रहा" में प्रतिभागिता करते हुए प्रधान कार्यालय के विभिन्न प्रभागों और विभागों के स्टाफ सदस्यगण।

नराकास, अमरावती के तत्वावधान में आरसीएफ द्वारा आयोजित प्रश्नमंच प्रतियोगिता में नागपुर मंडल के अंतर्गत मुख्य शाखा अमरावती में पदस्थ श्रीमती अपेक्षा फड़नीस पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

नराकास फरीदकोट की छमाही बैठक में नराकास से अध्यक्ष महोदय से वर्ष 2020-21 के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए मण्डल प्रमुख, फाजिल्का, श्री नरेश कुमार नागपाल एवं राजभाषा अधिकारी, सुमित्रा देवी।

मंडल कार्यालय, कोलकाता उत्तर में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में समिति अध्यक्ष, श्री प्रताप केशरी मल्लिक, मंडल प्रमुख, श्री सुनील कुमार मिश्र, उपमंडल प्रमुख एवं स्टाफ सदस्य ।

राजभाषा गतिविधियाँ

मंडल कार्यालय, दक्षिण 24 परगना के सभागार में शाखा प्रबंधको हेतु हिंदी कार्यशाला सह संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री राणा रितेश कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक, शाखा मथुरापुर को मंडल प्रमुख, श्री बिश्वरंजन नायक सम्मानित करते हुए।

हिंदी माह के अवसर पर संसद मार्ग, दिल्ली स्थित कार्यालय में हिंदी प्रतियोगिता "कुछ भूल गए कुछ याद रहा" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिभागी स्टाफ सदस्यों को पीपीटी के माध्यम से छायाचित्र दिखाते हुए वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा, श्री रविन्द्र मंडले।

हिंदी दिवस उद्घाटन समारोह सह संगोष्ठी में आमंत्रित विशिष्ट अतिथि, श्री हरीश चोपड़ा, प्रबंध निदेशक, पायोनियर कंपनी का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत करते हुये श्री सुनील कुमार मिश्र, उप मण्डल प्रमुख, कोलकाता उत्तर।

हिंदी माह के दौरान प्रधान कार्यालय के मल्टी पर्पज हॉल में स्केल IV तथा उससे ऊपर के स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित "हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता" में प्रतिभागिता करते हुए प्रधान कार्यालय के विभिन्न प्रभागों और विभागों के स्टाफ सदस्यगण।

अनुरोध

पीएनबी स्टाफ जर्नल/प्रतिभा के सुधि पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं के बारे में यदि आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएंगे तो हम इसके लिए आपके आभारी होंगे। नि:संदेह इससे पत्रिका के आगामी अंकों को और सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण बनाने में हमें सहायता मिलेगी। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका में सभी स्टाफ सदस्यों, उनके परिवारजनों तथा सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों की रचनाएँ भी स्वीकार्य हैं। आप सभी के सहयोग से हम इस पत्रिका को एक पारिवारिक पत्रिका बनाने की ओर अग्रसर रहेंगे।

अंचल कार्यालयों में नियुक्त पीएनबी स्टाफ जर्नल के प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे अपने संबंधित मंडल कार्यालयों में नियुक्त अधिकारियों से पत्रिका में प्रकाशन योग्य सामग्री एकत्रित करके ई-मेल pnbstaffjournal@pnb.co.in पर या सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली को भिजवाना सुनिश्चित करें।

पीएनबी प्रतिभा का आगामी अंक '**अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग**' विशेषांक (अक्टूबर-दिसंबर 2022) के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

स्वतंत्रता दिवस के 75 वर्ष और राजभाषा हिंदी

(हृदय कुमार, राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय)

स्वतंत्रता प्राप्त किये हुए हमें 75 वर्ष हो चुके हैं और इन 75 वर्षों के दौरान हमने ये पाया है कि स्वतंत्रता पाने के लिए हमने ना जाने कितने बलिदान दिए या यूँ कहें कि अपनी आजादी के लिये हमें बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी। चाहे वह सन 1857 का विद्रोह हो या 1919 का जलियांवाला बाग नरसंहार या 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन ही क्यों न हो। उक्त सभी घटनाओं के दौरान हमारे देशभक्तों और स्वतंत्रता सेनानियों ने अनेक यातनाएं झेली और कुर्बानियाँ दीं लेकिन यह यातनाएं और कुर्बानियाँ उनके मन से आजादी की मशाल को बुझा न सकी। ये सिलसिला यहीं नहीं रुका। 1947 की स्वतंत्रता को प्राप्त करने के बाद विभाजन की विभीषिका भी भारत ने देखी जोकि किसी भयावह स्वप्न से कम नहीं था। देश के लाखों नागरिकों ने इस दौरान न जाने कितने अपनों को खोया। इन सभी घावों और त्रासदियों के बावजूद भारत देश को एक सूत्र में बाँधने का काम जिसने किया वो थी हमारी राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा हिंदी। हिंदी ही वह भाषा थी जिसने जन-जन की भाषा की भूमिका निभाते हुए देश और समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को जोड़ने का काम किया जिसकी वजह से देश में हर कीमत पर स्वतंत्रता प्राप्त करने की अलख जगी। देश के नागरिकों में देश-प्रेम का जज्बा जगाने में हिंदी ने महती भूमिका निभाई। समाज और देश में हिंदी के प्रति इतना सकारात्मक माहौल बना हुआ था कि हर धर्म और समाज का नागरिक हिंदी को स्वभाषा के रूप में अपनाने के लिए तत्पर दिखाई देता था।

हमारे देश के बुद्धिजीवियों जैसे महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरु, सुभाष चंद्र बोस और न जाने कितने ही अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी का समर्थन करते हुए इसे जन-जन की भाषा बताते हुए अपने विचारों को हिंदी भाषा में जन मन तक पहुँचाने का प्रयास किया और वे इसमें सफल रहे। हिंदी स्वतंत्रता संग्राम की मशाल जलाने का वो ईंधन साबित हुई जिसके कारण हिंदी की मशाल आज भी प्रकाशमान है। चाहे वो हिंदी में दिए गए नारे हों या हिंदी में रचित देशभक्ति गीत और कविताएं ही क्यों न हो, सभी जगह हिंदीमय माहौल का दर्शन मिलता था। हिंदी का आलम तो यह था कि महात्मा गाँधी के पास जब भी कोई युवक या युवती आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए उनसे कोई काम बताने को कहते तो महात्मा गाँधी उनसे पहला प्रश्न यही करते थे कि आपको हिंदी भाषा आती है या नहीं और यदि नहीं तो पहले आप हिंदी भाषा सीखिए तब मेरे पास आईये। वे ऐसा इसलिए कहते थे कि पहले हमें अपनी स्वभाषा और अपने देश की संस्कृति का सम्पूर्ण ज्ञान होना जरुरी है ताकि हम अपने देश, समाज के परिवेश और देश की जरूरतों को भलीभांति समझकर उनके मन की व्यथा और दुःख को आत्मीयता से महसूस कर उसका समाधान कर सकें।

भारत का हर नागरिक आजाद हवा में साँस लेना और उन्नति करना चाहता था क्योंकि वह इस बात को समझाता था कि पराधीन रह कर शायद वह कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। सचमुच पराधीनता और स्वाधीनता में जमीन और आसमान का फर्क होता है। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यदि आप स्वतंत्र होते हैं तो आपका मनोबल और विकास अर्श पर होता है और यदि पराधीन होते हैं तो मनोबल और विकास फर्श पर होता है। स्वतंत्र देश में नित नये अनुसंधान और आविष्कार के मार्ग प्रशस्त होते हैं। सोच और विचारों का दायरा बढ़ता है और समाज और देश उन्नति के पथ की ओर अग्रसर होता है। साथ ही आत्मनिर्भरता का मार्ग भी प्रशस्त होता है। किसी ने क्या कमाल की बात कही है कि यदि हम अपनी माँ का सम्मान नहीं करते हैं तो हम संसार की किसी भी माँ का सम्मान नहीं कर सकते। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि पहले हम हमारी माँ रूपी मातृभाषा का सम्मान करें और उसे वह उचित स्थान दें जिसकी वह अधिकारिणी है।

आजादी से पहले हमारा देश छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ था जिसे एक भारत और श्रेष्ठ भारत बनाने की कवायद

शुरू की गई। इसके लिए देश के प्रथम गृह मंत्री श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को चुना गया और उन्होंने देश के हर राज्य और नगर को एक सूत्र में पिरोने के लिए हिंदी माध्यम से अपने विचारों को सभी देशवासियों तक पहुँचाया और विश्व पटल पर एक संगठित भारत की बुनियाद रखी। देश के अनेक नेताओं और बुद्धिजीवियों ने एक सुर में हिंदी भाषा का समर्थन करते हुए हिंदी में प्रचार-प्रसार किया और जनसमर्थन द्वारा हिंदी को और अधिक विकसित करने का प्रयास किया।

आज देश का प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक और सजग है जिसका एक मात्र कारण है भाषा। यहाँ मैं भाषा की बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि एक भाषा ही है जो आपके विचारों, नीतियों, संस्कृति और परम्पराओं की द्योतक बन इन्हें एक-दूसरे तक पहुँचाने के लिए सेतु का कार्य करती है और वह न केवल सम्पर्क भाषा के सभी गुणों सें परिपूर्ण होती है बल्कि देश को एक सूत्र में बांधने का काम भी करती है इसलिए शायद राजभाषा हिंदी को इन सभी गुणों से समृद्ध पाया गया और हिंदी का अपना व्याकरण और भाषा विज्ञान होने के कारण यह सभी जगह स्वीकार्य भी थी, जिस कारण हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजकाज की भाषा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और अनुकूल पाया। आखिरकार यह अनुभव हुआ कि एक स्वंत्रत देश की अपनी स्वभाषा होना भी होना उतना ही जरुरी है जितना हमारा स्वतंत्र होना, क्योंकि प्रेमचंद जैसे महान कथाकार और साहित्यकार का ये मानना था जिसकी कोई स्वभाषा नहीं उसका कोई देश भी नहीं।

महात्मा गाँधी जी ने तो यहाँ तक कहा कि स्वभाषा के बिना देश गूँगा है। यह जरूरी है कि हर देश अपनी भाषा को अपनाएं और उसमें व्यवहार करे उसी सोच के साथ संविधान सभा का गठन करते हुए संविधान में राजभाषा का कार्य करने के लिए हिंदी को शामिल करते हुए इसे 14 सितंबर 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया गया ताकि यह हमारे देश की सांस्कृतिक और सामासिक अभियक्ति का माध्यम बन सके। तब से लेकर आज तक हिंदी ने विकास के अनेक सोपन तय किये हैं। हिंदी के विकास हेतु अनेक आयोग, विभाग और संस्थानों को गठित किया गया ताकि समय-समय पर हिंदी की प्रगति की समीक्षा की जा सके। साथ ही हिंदी के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके। देश की सर्वोच्च संस्था गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा राजभाषा विभाग का गठन किया गया और उसे यह जिम्मेदारी दी गई कि वो समस्त केंद्रीय सरकार में विभागों, अर्ध सरकारी, स्वायत निकायों, उपक्रमों, नराकास आदि के माध्यम से न केवल हिंदी का प्रचार प्रसार बढ़ाये बल्कि उनके निष्पादन और क्रियान्वयन की रिपोर्ट भी समय-समय पर गृह मंत्रालय और राष्ट्रपति को प्रस्तुत करे।

यदि देखा जाए तो हिंदी ने संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, खड़ी बोली से आज आधुनिक हिंदी में प्रवेश किया है और अपने भीतर अनेक भाषा और बोलियों के शब्दों को समाहित किया है जोकि इसकी ग्राहयता और अनुकूलता को दर्शाती है। वाकई में हिंदी ही वो भाषा है जो जैसी बोली जाती है वैसी लिखी जाती है। इसलिए इसे सीखना सरल और सुकर है।

समय के साथ हिंदी ने अपने आपको न केवल विस्तृत और व्यापक बनाया बल्कि अनेक बोलियों और भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करते हुए इसने जन-जन के मन में अपनी स्वीकार्यता को बढ़ाया भी है। यह हिंदी भाषा का तिलिस्म ही है जिसके कारण हर जगह हमें इसके जानने, समझने और उसे प्यार करने वाले मिल ही जाते हैं। हिंदी ने बहुत ही प्रभावी ढंग से हाट बाजारों से मॉलों तक और फिल्मों के गानों से लेकर विज्ञापन जगत पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। हिंदी, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के सशक्त माध्यम के रूप में देखी जाती है। शायद इसीलिए देश के बुद्धिजीवियों ने इसे भाव अभिव्यक्ति और सम्पर्क भाषा के रूप में कारगर हथियार समझते हुए इसका अधिक से अधिक प्रयोग किया और इसे अपनाने पर बल दिया। आज के युग में डिजिटल माध्यमों के द्वारा इसमें अभूतपूर्व क्रांति देखी जा सकती है। आज मोबाइल और ई-टूल्स के माध्यम से हम बोलकर या टाइप करके अपने संदेशों और पत्रों को हिंदी में भेजने में आसानी महसूस करते हैं। यह हिंदी भाषा का करिश्मा ही है कि विश्व में अन्य देश, भारत को व्यापक बाजार के रूप में देखते हुए इसमें अपने उत्पादों का प्रचार-प्रसार भी हिंदी में करने के लिए बाध्य हैं। देश-विदेश में हिंदी जानने वालों की अच्छी-खासी संख्या है जोकि हिंदी के वजूद को और भी बुलंद बनाती है। वाकई में हिंदी ने न केवल नागरिकों बल्कि समाज और देश की उन्नति के मार्ग खोल दिए हैं। आज देश वोकल फॉर लोकल तथा आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में दिन-रात लगा हुआ है जिसके लिए हिंदी भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। चाहे वह स्थानीय उत्पादों के निर्माण और वितरण से संबंधित बात हो या उसके लिए विज्ञापन ही क्यों न हो। सभी जगह आपको हिंदी का दर्शन हो ही जायेगा। साथ ही देश की वर्तमान सरकार इसके विकास और प्रचार-प्रसार के लिए पूर्णरूप से प्रतिबद्ध है। हाल ही में दिनांक 14-15 सितंबर को सूरत में आयोजित हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह तथा सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि

हिंदी किसी भी भाषा की प्रतिस्पर्धी भाषा नहीं है बल्कि वह सभी भाषाओं और बोलियों की सखी है। साथ ही हिंदी सभी भाषाओं और बोलियों के पुष्पित-पल्लवित होने में सहायक की भूमिका निभाती है। इस अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा कंठस्थ 2.0 और केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की सहायता से तैयार किया गया बृहत हिंदी शब्दकोश ""हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण -1)" आरम्भ किया गया। जिसका उद्देश्य यह है कि देश के प्रत्येक नागरिक को हिंदी शब्दकोश और उनके अर्थों का पूर्ण ज्ञान हो। हिंदी शब्दकोश हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण -1) का आरम्भ करते हुए माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने यह कहा कि हमें आने वाले 25 वर्षों जोकि देश की आजादी का शताब्दी और अमृत काल का अवसर होगा तब देश में हिंदी पूरी तरह से समस्त कामकाज और ज्ञान-विज्ञान की भाषा होगी जिसके लिए यह हिंदी शब्दकोष हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण -1) पहला कदम है और आने वाले समय में इसके कई संस्करण आते रहेंगे जिससे हमारा हिंदी शब्द कोश बृहद और समृद्ध होता जाएगा। इन सभी से झलकता है कि हिंदी का भविष्य न केवल उज्ज्वल है बल्कि विश्व पटल पर हिंदी का मान-सम्मान भी कई गुना बढ़ा है। अब नई शिक्षा नीति में भी बड़े बदलाव करते हुए सरकार ने विधि और विज्ञान विषयों को भी हिंदी में अनूदित कर सभी तक शिक्षा को सुलभ और सुगम बनाने का प्रयास किया है जोकि एक सराहनीय और प्रशंसनीय कदम है।

भारतेंदु हरिशचंद्र द्वारा कहा गया यह कथन कि "निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल" यह दर्शाता है कि हम सभी अपनी भाषा के द्वारा कहीं अधिक तेजी से उन्नति कर सकते हैं बजाए अन्य विदेशी भाषाओं के उपयोग के। ऐसे कई देश हैं जो अपनी भाषा को अन्य भाषाओं से ज्यादा अहमियत देते हुए विकास और उन्नति के शिखर पर विराजमान है और वह अपनी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार के प्रति पूर्णरूप से समर्पित और प्रतिबद्ध हैं जो यह दर्शाता है कि अपनी भाषा का सम्मान करके ही हम देश और दुनिया में सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। अन्य भाषाओं को सीखने और बोलने में कोई बुराई नहीं परन्तु अपनी भाषा के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करना भी उचित नहीं हैं। हमें अपनी भाषा में बोलने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए न कि शर्म और संकोच की। यह तभी संभव है जब हम पूरे मनोयोग और हृदय से इसके लिए प्रयास करें और सभी को ऐसा करने के लिए प्रेरित करें। हम सभी का विकास हमारे देश और स्वभाषा के विकास में निहित है जिसके बिना हम उन्नति के पथ पर कभी अग्रसर नहीं हो सकते। इसलिए हमें हर दिन छोटे-छोटे प्रयास करने की आवश्यकता है जैसे हम अपने हस्ताक्षर कम से कम हिंदी में लिखने का प्रयास करें। हर लम्बी यात्रा की शुरुआत छोटे-छोटे क़दमों से होती है और यह निरंतर चलती रहती है। तो आइये हम सभी यह प्रण लें कि अपने देश की अस्मिता और गौरवमयी धरोहर हिंदी को पुष्पित और पल्लवित करते रहेंगे ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी संस्कृति और परम्परा से वंचित न रह जाए।

जिजीविषा

(चन्द्र शेखर जोशी, आंतरिक वरिष्ठ लेखा परीक्षक, आंचलिक लेखा परीक्षण कार्यालय, देहरादून)

पंख मेरे ऐ वक्त तूने जब भी जलाए हैं,
हौंसले उड़ने के मेरे और भी बढ़ाए हैं।
लिखे मेरे हिस्से में किस्मत ने अँधेरे जितने,
रौशनी के लिए दिल ने उतने एहसास जगाए हैं।
रफ्तार की जैसे ही मेरी कश्ती की तरफ मौजों ने,
और भी मजबूती से मैंने अपने पतवार चलाये हैं।
पूरे होंगे जरूर वो ख्वाब जो मेरी पलकों ने,
लम्हा-लम्हा बड़ी ही तबीयत से सजाए हैं।
काफिला बढ़ा दर्द का जब मेरे दिल की तरफ,
खुदा गवाह है हम जी भर के मुस्कुराये हैं।

तमाशा समाज का

(मो. फारिज आलम, अधिकारी, आई.टी, मंडल कार्यालय,
दक्षिण 24 परगना)

हर तरफ शोर बेताहाशा है,
आदमी क्या है एक तमाशा है।

चल देते हैं लोग जहाँ भीड़ के पीछे,
मंजिल मिलेगी एक दिन, दिल में अगर आशा है।

कहीं भूखे बिलख रहे हैं बच्चे एक निवाले को,
तो कही कोई ऊँची इमारतों पर करते खर्च बेताहाशा हैं।

हुकमतों ने जहाँ जात- पात की दीवार खड़ी की,
कौन देखता है मरता हुआ आदमी क्या प्यासा है।

नफरतों की आग में वो लड़-मरने को तैयार हैं,
जिनके जीवन में न कुछ करने की जिज्ञासा है।

बिक रहे जोर-शोर से भ्रष्ट नेताओं के झूठे वादे,
जिनको भी हम चुन कर लाये लगती हाथ निराशा है।

खून से लथपथ वीरों ने तो कर्ज चुकाया माटी का,
दो क्षण के बस मौन व्रत से हम देते उन्हें दिलासा हैं।

समय है अब भी आओं चले प्रेम – स्नेह की नैय्या में,
प्रेम ही डोर है जीवन की प्रेम ही परिभाषा है।

समझ सको तो दर्पण है न समझो तो कुछ नहीं,
सीधी मेरी कविता है, सीधी मेरी भाषा है ।।

बचपन के दिन

(हेमलता धामी, प्रबंधक, मंडल कार्यालय, हल्द्वानी)

उन बीते दिनों को गुजरा हुआ जमाना कहूँ
या फिर खुशियों से भरा कोई खजाना कहूँ।

जब हुआ करती थी यूँ ही चाहत चाँद को पाने की
तो कभी हसरत हुई सूरज को मुट्ठी में लाने की।

ख्वाहिशें पंछियों की तरह खुले आसमान में उड़ने की
तो कभी आदत बनी नंगे पाँव जमीन पर चलने की।

अपने ही दोस्तों के साथ हर खेल में होने वाली कट्टी
तो दूसरे ही पल दोस्तों संग प्यार वाली मीठी सी बट्टी।

ना सुबह की फिकर ना कोई शाम का ठिकाना
कुछ ऐसा ही था दोस्तों के साथ अपना याराना।

बचपन में बारिश की बूँदों से खेलने का जुनून
ठहरे पानी में कागज की कश्ती देखने का सुकून।

ना होती थी तब कोई खास वजह रोने की
और ना ही ढूँढे जाते हँसने के कोई बहाने।

तब होता साथ कभी पापा के कंधों का
तो सहारा हमेशा माँ के प्यारे से आँचल का।

ये खट्टी-मीठी यादें नहीं महज एक किस्सा
है ये सबकी जिंदगी का अनमोल-अनकहा हिस्सा।
खुशियों की कुँजी और जिंदगी की पूँजी है।

हर तस्वीर कुछ कहती है (उत्कृष्ट प्रविष्टियाँ)

मेरा बचपन

हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
मुझे खेल- खिलौने खेलने दो।
हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
मुझे माँ- बाप का प्यार मिलने दो।
हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
बचपन के दोस्तों से मिलने दो।
हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
मुझे बचपन की ख्वाहिश पूरी करने दो।
हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
मुझे बचपन की दुनिया देखने दो।

हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
मुझे अकेलेपन का दर्द सहने न दो।
हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
मुझे बचपन का जश्न मनाने दो।
कब पूरा हो जायेगा यह मेरा बचपन,
मुझे अच्छी शिक्षा सीखने दो।
कामों से भरी है यह कठिन जिंदगी,
मेरे बचपन के हसीन सपने आग में जलने न दो।
हुआ हूँ अभी बचपन की उम्र का,
बस, बचपन की दुनिया में मुझे जीने दो।

हरगोविंद सी. मकवाना
अधिकारी, शाखा नया नरोडा, अहमदाबाद

'आज मेरी नन्ही बिटिया बड़ी हो गई'

दिनभर का थका पिता,
शाम ढले जो लौटा अपने द्वार ।।
पत्नी को पाया बिस्तर पर,
बेसुध पड़ी थी बहुत बीमार।।
बिटिया थी अभी बस आठ साल की,
खेल-खिलौने छोड़कर हो गई तैयार ।।
ज्ञान कहाँ था उसे चूल्हे-चौके का,
फिर भी निभाने चली वो हर किरदार।।
कभी नन्हें हाथों से रोटियाँ बेलती,
कभी चूल्हे की आँच जलाती बारंबार।।

पिता देख रहा था उसकी तत्परता,
नम थी आँखे, पर चेहरे पर मुस्कान।।
घर के सारे मंज़र के आगे,
वो भूल चुका अपनी सारी थकान।।
अगले पल ही, खाने का थाल सजाये,
बिटिया उसके आगे खड़ी हो गई।।
उस दिन सचमुच लगा पिता को,
आज मेरी नन्ही बिटिया बड़ी हो गई।।
.... आज मेरी नन्ही बिटिया बड़ी हो गई।।

ललित कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (शाखा: मेटलडोबा)
मंडल कार्यालय, पश्चिमी मेदिनीपुर

उम्मीद

दिन चढ़ आया, माँ अब तक घर नहीं आई।
शायद आज काम बहुत होगा खेतों में,
इसलिए पिताजी को माँ अकेला छोड़ नहीं पाई ।।
चूल्हे के सब अंगारे धूमिल हो रहे हैं,
जो अकेले और खाली बैठे मैं नहीं देख पाई,
सोचा दाल-सब्जी ना सही चावल ही चढ़ा दूँ।
माँ-बाबू जी के घर आने से पहले कुछ बना दूँ
जिससे बुझती हुई आँच थोड़ी धधक जाए।।
माँ के घर आते-आते खाना भी झटपट बन जाए,
आज मेरे माँ-पिता की मेहनत भी बच जाए।
थके-मादें होंगे दोनों, उन्हें भी आराम मिल पाए।।
दाल, सब्जी ना सही, चावल से काम चल जाए।
उनका व्याकुल मन और पेट दोनों तृप्त हो पाएं।।
अम्मा-बाबू जी भी कुछ सुख के पल पा जाएं।।
ये पल हमारे लिए कुछ ऐसे यादगार बन जायें।
मेरी पहली रसोई अम्मा बाबू जी को पसंद आये।
ख़ुशी का हर पल हमारी झोलियों को भर जाए ।
मात-पिता का आशीर्वाद मुझ पर सदा बना रह पाए।
इस उम्मीद के दीये मेरी आँखों में जगमगाते जाएं।

आर एन दास
मुख्य प्रबंधक,
मंडल कार्यालय बेंगलुरु

"वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।"
- पीर मुहम्मद मूनिस

जलता बचपन

गरीबी का जो ये बचपन उबल रहा है,
इस चूल्हे पे बचपन भी जल रहा है।
आग वहीं धुआँ बनकर संग रहेगी,
नम आँख से, पानी पिघल जो रहा है।
यहाँ जो नहीं, वो वहाँ भी मिला कहाँ है,
खुदा के भरोसे ही ये जो पल रहा है।
चहेरे पे मुस्कान देखी है फिर भी,
ये कीचड़ में जैसे कमल जो खिल रहा है।

परेश गोधासरा
प्रबंधक शाखा, नानकपाया, मुंद्रा,
मंडल कार्यालय, राजकोट

बचपन और मन

चेहरे पर मुस्कुराहट है
न कोई घबराहट है
घर के आंगन में है चूल्हा
थोड़ी सी गर्माहट है
स्पंदन सा हुआ है मन
यूँ बीता जाए बचपन
खुश ऐसे वो लगती जैसे
बनेंगे अब विविध व्यंजन

छोटी उम्र में फूँकनी पकड़ी
चौका चूल्हा और ये लकड़ी
कुचल न पाएं इसके अरमां
ये है प्यारे हिंदुस्तां की जां

खुशबू जैन
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय,रोहतक

देश का सम्मान - हिंदी

(अब्दुल हमीद इंदारसी, वरिष्ठ प्रबंधक, सेवानिवृत्त, मण्डल कार्यालय बिरहाना रोड, कानपुर)

अब नये गुल खिलाना चाहती है।
ये खुल कर मुस्कुराना चाहती है।

दिलों में घर बनाना चाहती है।
नहीं कोई खजाना चाहती है।

शिकायत हर मिटाना चाहती है।
बुरे दौर को हराना चाहती है।

नहीं कुछ भी पुराना चाहती है।
नये नगमें सुनाना चाहती है।

अदावत को मिटाना चाहती है।
समय अच्छा बिताना चाहती है।

बड़ा जिम्मा उठाना चाहती है।
दिलों में अब समाना चाहती है।

जहाँ को जगमगाना चाहती है।
मुहब्बत भरा जहां बसाना चाहती है।

कुछ हमारी सुनना चाहती है।
कुछ अपनी सुनाना चाहती है।

हर गम को ये भुलाना चाहती है।
खुशियाँ ये फैलाना चाहती है।

तुरंत रफ्तार पाना चाहती है।
नहीं अब कोई बहाना चाहती है।

सुकूँ सबको दिलाना चाहती है।
सबक़ अच्छा पढ़ाना चाहती है।

किसी भाषा से बैर नहीं है इसका,
सबको ये बताना चाहती है।

जड़ें गहरी बहुत इसकी ज़मीं पर,
नहीं अब डगमगाना चाहती है।

जहाँ हिंदी ही हिंदी हर तरफ हो,
हसीं ऐसा ज़माना चाहती है।

हो जिससे सम्मान भारत का जहां में,
ऐसी हर रिवायत निभाना चाहती है।

बचपन

(दिशा आगासे, शाखा, नंदनवन, नागपुर, मंडल कार्यालय)

बचपन के दोस्तों को भूलें कैसे ?
उनकी मीठी यादों को बिसरायें कैसे ?
जिंदगी के वो पल बिताये थे, जिनके साथ
उन यादों को संजोए बढ़ाते रहे वे अपना हाथ।

मुसीबत में भी दिया, जिन्होंने निस्वार्थ अपना साथ,
ऐ दोस्त, तुम्हीं ने बनायी मेरी हर खुशी तब खास ,
दोस्ती हमारी अगर कोई बेचना भी चाहे,
तो खरीददार सिर्फ हम ही होंगे।

अपनी दोस्ती की कीमत तुझे पता भी नहीं है,
लेकिन खरीदकर सबसे अमीर हम ही होंगे

हम चले थे एक दूसरे का हाथ थामकर,
गिर भी जाएं तो उठाने वाले दोस्त ही थे।

याद आता है वो बचपन,
जब आगे बढ़ने के लिए दोस्त पीछे हो जाते थे
और आज आगे बढ़े तो,
गिराने वाले हजार हो जाते हैं।

काश लौट आये वो दिन,
जी लूँ फिर से एक बार वह बचपन
वो दोस्तों की नोंक-झोंक और लड़ाई
याद तुम बहुत आते हो बचपन।

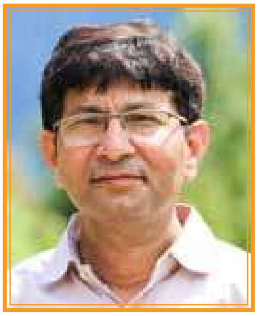

पुस्तक समीक्षा - जब आदिवासी गाता है

दयाराम वर्मा, मुख्य सतत निरीक्षक, रैम-जयपुर-अजमेर (राजस्थान)

लेखिका: डॉ. जमुना बीनी तादर (राजीव गाँधी विश्वविद्यालय-दोईमुख, अरुणाचल प्रदेश, ई मेल jamunabini@gmail.com); परिंदे प्रकाशक-दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष 2018, मूल्य रू. 230/-

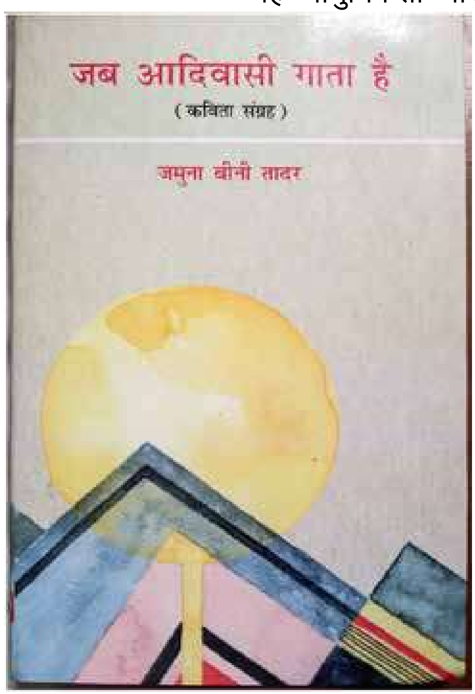

उन्नत जीवन के सपनों, आधुनिकता की चकाचौंध, मुआवजे और अस्थाई नौकरी के लालच में फाँसकर 'विकास रूपी' अजगर 'आदि' सभ्यता की मौलिकता को अपने नशीले सम्मोहन में जकड़े शनै:-शनै: निगलता जा रहा है। जन-जातियों की विलुप्त होती जा रही पुरातन जीवन शैली के विषाद की यथार्थ अनुभूति, स्वयं एक आदिवासी से बढ़कर भला और कौन कर सकता है? उसी मिट्टी में जन्मी-पली-बढ़ी लेखिका 'जमुना बीनी तादर' अपने परिवेश और परम्पराओं के ह्रास के दंश की साक्षी भी हैं और पीड़ित भी। संभवत: यही कारण है कि सरल, सपाट शब्द शिल्प होते हुए भी इस काव्य संग्रह की रचनाएँ अरुणाचली आत्मीय संवेदनाओं की एक अदभुत परंतु सार्थक संगीतमय अभिव्यक्ति है। वर्तमान से लिपटी इनकी कविताओं का एक छोर बारंबार अतीत में डूबता उतरता है। "असभ्य लोगों की अर्धविकसित भाषा/ यदि यह सत्य है / तो जब आदिवासी गाता है/ तो मन में/ सिहरन क्यों कर पैदा होता है/ उन अस्फुट ध्वनियों को सुन/ क्यों रोना आता है/ क्यों वर्तमान अतीत हो जाता है/ और क्यों अतीत वर्तमान..."

भले ही मैदानी लोगों के लिए अरुणाचल प्रदेश आज भी सर्वाधिक वन संपदा, अल्पतम जनसंख्या और भरपूर प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण सुंदर प्रदेश है लेकिन इसके प्राकृतिक, मानवीय और सांस्कृतिक संसाधनों के लगातार दोहन और शोषण से जनजातीय ताने-बाने को अस्त-व्यस्त होता देख विक्षुब्ध कवि मन विद्रोह कर बैठता है। नहीं चाहिए यह आधुनिकता और विकास जो उनके 'स्वयं' के होने के एहसास को ही नष्ट कर रहा है। संग्रह की अधिकांश रचनाएँ बेधड़क अपनी संस्कृति और संपदा के अपकर्ष को केंद्र में रख कर सभ्य समाज से सवाल करती हैं और मिथ्या स्तुति से पाठक को बहलाने का कोई छद्म प्रयास नहीं करती। "अब हम नहीं रहते/ बाँस के घरों में/ अब नहीं बहती रोशनियाँ/ उन छिद्रों से/ अब हमारा घर/ बनता है कंक्रीट से/ अब हम नहीं सोते बहुत जल्द/ रात भर टी.वी., मोबाईल फोन या लेपटॉप में डूबे रहते।"

'वे अलसाये दिन' कविता की ये पंक्तियाँ सहसा मुझे पहाड़ी नदी के किनारे बसी एक छोटी सी आदिवासी बस्ती में तीन दशक पूर्व बाँस के घरों के बीच सुलगती अंगीठी के चारों ओर बैठे, हँसते, अपोंग पीते आदिवासी परिवार के बीच ले जाती है जहाँ पहाड़ के दूसरी ओर सूरज लुढ़कते ही घुप्प अंधेरा तेजी से पूरी बस्ती को स्याह कंबल से ढाँप देता था। अल सुबह खेत खलिहान को कूच करते मर्द, पीठ पर टोकरी लटकाए स्त्रियों की टोलियाँ, पारदर्शी, बर्फीली, गुर्राती, गरजती सियांग, घने हरे जंगलों से ढँके, ऊँचे पर्वत शिखर, उन पर तैरते यायावर बादलों के झुण्ड! अंतहीन बारिशें! पहाड़ों के सीनों को छलनी करती न कोई सड़क, न रेल मार्ग। लोगों का खान-पान, जीवन शैली, क्रीड़ा-आखेट, सोलुंग, रेह, तोरग्या!

सब सरल, प्राकृतिक और जीवंत!

उगते सूरज की धरती पर पिछले दो दशकों में पक्की काली सड़कें दूर-दराज तक पहुँच गई हैं। अब यहाँ के लोग बाहर और बाहर के लोग यहाँ तेजी से आ जा रहे हैं। लेकिन 'वे और हम' में बाहर के लोगों का उस अंचल में जाने का व्यावसायिक दृष्टिकोण रचनाकर को नहीं भाता। 'इन्हें सिखाया जाना चाहिए/ पेड़ जंगल/और पहाड़ अनमोल हैं परंतु/इन्हें चीरना, उखाड़ना और काटना चाहिए/अधिक से अधिक संसाधन विकास और/ सभ्यता के लिए/ आदिवासियों को बदलते हैं वे/ अपने फायदे के लिए। और फिर "क्या 'अरुणाचल' को कोई जनजातीय नाम नहीं मिल सकता था? सवाल करती लेखिका का अपनी बोली और जाति से अटूट स्नेह छलक पड़ता है।

आदिवासियों की जमीन पर गड़ते कॉरपोरेट्स के विषैले पंजे, जंगल आदमी या फिर आर्मी के बीच पिसता युवा 'वाड़पान'? दैहिक, मानसिक, आर्थिक शोषण की शिकार, रोजगार और बेहतर कल के सपने सजोये पहाड़ों से उड़कर मैदानी शहरों में आने वाली परियों की डरावनी कहानियाँ। हाइडल बिजली के उजियारे के पीछे छुपा अंधकार। तथाकथित सभ्य समाज के छल,कपट और शोषण के विरुद्ध हर रचना में किसी न किसी रूप में कवियित्री कुपित हो उठती है और इन सब से थोड़ा अलग हटकर, संग्रह की 'डर' व 'टीवी चैनल' सरीखी रचनाएँ, लेपटॉप, टीवी और मोबाईल आदि के माध्यम से परोसे जा रहे निर्रथक, स्तरहीन समाचार, सीरियल्स और भड़काऊ हिंसा से संवेदनहीन होते जा रहे समाज को आगाह करती नजर आती है। 'खूनी लहरें' समुद्र से उसकी हदें तोड़ कर सुनामी लाने पर सवाल पूछती हैं। अरुणाचल का साहित्य हो और उसमें बारिश का जिक्र न हो, यह कैसे हो सकता है? जब 'धूसर आसमान' से 'बारिश की बूँदों' का लयबद्ध नृत्य आरंभ होता है तो घाटी पर एक धुंधनुमा विशाल चद्दर तन जाती है। "छप-छप बूँदें बारिश की/ कानों को बहुत सुहाती/ छोटी-छोटी लड़ियाँ जल की/ नभ से नीचे आती/ झिलमिल-झिलमिल बूँदें हिलमिल/ सब्ज धुले पत्तों पर/ देती मोती सा आभास..."

'आज मुझे घेर लिया/ फिर से स्मृतियों ने/ मन मेरा नहीं मेरे पास/ कहाँ ओझल हुआ..."। प्रेमी से मन या तन की दूरियाँ विरह को जन्म देती है, 'हँसी गूँजती रही', 'प्रेम का रंग', 'चाँद का कराह', 'तुमसे प्रेम हुआ','सीढ़ी पर बैठी वह लड़की' आदि कविताओं में कवियित्री काव्य के इस चिर विषय को अपने अनूठे अंदाज में विशेष भावाभिव्यक्ति प्रदान करने में सफल रही हैं।

वक्त कहाँ ठहरता है? तो फिर कोई सभ्यता व संस्कृति अपने आप को परिवर्तन के बहाव से कैसे रोक सकती है? परिवर्तन अवश्यंभावी है परंतु अपने स्व को अंतिम श्वास तक बचा लेने की तड़प या जिजीविषा रचनाकार की इन पंक्तियों में मर्मस्पर्शी आह्वान कर उठती है। 'तुम्हारे आदिवासी-बोध ने बतलाया/ तुम्हें पहाड़ों की ओर भागना चाहिए/ वहाँ ऊपर/ दुश्मनों से महफूज रहते आए/ अनगिनत काल से/ तुम भागते जाते हो/ जब तक तुम्हारी साँसे नहीं रुकती/ पैर जवाब नहीं देता/ फिर तुम आश्वस्त होते हो कि/ तुम्हारे लोग/ तुम्हारे बाद भी जीयेंगे/ तुमसे अधिक जीयेंगे/ संसार को बतलाने/ तुम्हारी अदभुत-अनोखी संस्कृति/ आदिवासी संस्कृति के बारे में।' डॉ. जमुना बीनी तादर ने इस प्रवाह की पीड़ा को अपने अन्तर्मन की गहरी संवेदनाओं के साथ विभिन्न आयाम दिये हैं। हिंदी भाषी न होते हुए भी हिंदी में ऐसे अर्थपूर्ण काव्य संग्रह का सृजन आपकी विशेष उपलब्धि है। इस अमूल्य सौगात के लिए आपका बहुत-बहुत साधुवाद और अनंत शुभकामनाएँ।

पीएनबी प्रतिभा का वेब संस्करण

सभी स्टाफ सदस्यों एवं प्रिय पाठकों की सुविधा हेतु पीएनबी प्रतिभा का ऑनलाइन संस्करण नॉलेज सेंटर पर उपलब्ध है। पीएनबी प्रतिभा तक निम्न नेविगेशन से पहुँच सकते हैं-

पीएनबी नॉलेज सेंटर → **ई-सर्कुलर** → **मैगजीन** → **पीएनबी प्रतिभा**

इस पत्रिका को और अधिक बेहतर तथा उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

विविध

मंडल कार्यालय, कोलकाता में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में दृष्टव्य हैं अंचल प्रबंधक, श्री नबीन कुमार दास एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, कोलकाता, उत्तर में बैंक के बहुमूल्य ग्राहकों हेतु आयोजित "व्यवसाय विकास बैठक" के दौरान वाहन ऋण राशि रु 1.68 करोड़ का अनुमोदन पत्र प्रदान करते हुये श्री सुनील अग्रवाल, महाप्रबंधक एवं श्री प्रताप केशरी मल्लिक, उप महाप्रबंधक व मंडल प्रमुख, श्री सुनील कुमार मिश्र, उप मंडल प्रमुख एवं अन्य उच्चधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, कोलकाता (दक्षिण) द्वारा आयोजित "शाखा प्रमुख सम्मेलन" में अंचल प्रबंधक, श्री नबीन कुमार दास सभी शाखा प्रमुखों को संबोधित करते हुए। साथ में दृष्टव्य हैं मंडल प्रमुख, श्री आदित्य कुमार पाढ़ी तथा उपमंडल प्रमुख, श्री सुजीत कुमार नेगी।

मंडल कार्यालय, पानीपत द्वारा विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंडल प्रमुख, श्री सुनील ब्रत द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों, भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिजनों को सम्मानित किया गया।

पीएनबी के जयप्रकाश नारायण पंजाब नैशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, पानीपत द्वारा 13-18 अगस्त 2022 के दौरान आयोजित स्वच्छता अभियान रैली में भाग लेते स्टाफ सदस्य और प्रशिक्षु ।

देशभक्ति के नवीन आयाम

(श्वेता शर्मा, अधीनस्थ, मंडल कार्यालय, कोटा)

"जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं।

वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं। "

प्रत्येक देशवासी को अपने देश से अनुपम प्रेम होता है। अपना देश चाहे बर्फ से ढका हो, चाहे पहाड़ों से घिरा हो, चाहे गर्म रेगिस्तान हो, चाहे गरीबी से ग्रस्त हो या चाहे ऊबड़-खाबड़ हो, वह सबके लिए प्रिय होता है। इस संबंध में श्री रामनरेश त्रिपाठी जी की कुछ प्रेरणादायी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:-

विषुवत रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।
ध्रुव वासी जो हिम में, तम में, जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर॥

देशप्रेम की भावना सर्वत्र और सब कालों में विद्यमान रहती है। मातृभूमि को मनुष्य अपनी जन्म देने वाली माता से भी कहीं अधिक महिमामयी और वंदनीय समझता है।

देश के प्रति कर्तव्य- केवल यहीं तक सीमित नहीं है कि हर व्यक्ति में देश के लिए मर-मिटने की भावना हो अपितु अपनी सेवाओं द्वारा देश के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक ढाँचे को मजबूत बनाने की चेष्टा हो। देश को विकास के मार्ग पर ले जाएं। आज हम स्वतंत्र है लेकिन हमें सबसे बड़ा संघर्ष गरीबी से करना है। हमें आत्मनिर्भर होने के लिए अग्रसर होना पड़ेगा यही हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। ऐसा प्रत्येक काम जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र का हित हो, वही स्वदेश प्रेम की अनुपम ज्योति है।

देश के प्रति हमारे अंदर निःस्वार्थ प्रेम होना चाहिए। हमें अपने देश की अखंडता, संप्रभुता आदि की रक्षा करनी चाहिए। देश में शिक्षा का व्यापार नहीं अपितु अधिकार होना चाहिए। हमारे राष्ट्र का निर्माण तब होगा जब हम संविधान के भाग-IV के अनुच्छेद -51 (क) में दिए गए मौलिक कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा व ईमानदारी से करेंगे।

कर्तव्य एक व्यक्ति की नैतिक और कानूनी जिम्मेदारी है जिसका देश के प्रति निर्वाह करना होगा। यह सत्य है कि हम ब्रिटिश शासन से आजाद हो गए हालांकि लालच, अपराध, भ्रष्टाचार, गैर-जिम्मेदारी, सामाजिक मुद्दों, बाल श्रम, गरीबी, क्रूरता, आतंकवाद, कन्या भ्रूण हत्या, लैंगिक असमानता, दहेज उत्पीड़न और अन्य गैर-कानूनी गतिविधियों से स्वतंत्रता हासिल करना भी देश के प्रति सबसे बड़ा कर्तव्य है।

नवीन आयाम- यदि हम किसी दूसरे देश के झंडे जला देने या उसके मुर्दाबाद के नारे लगा देने को देशभक्ति कहते हैं तो हम गलत हैं क्योंकि हमारी देशभक्ति, हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि हम कहें-

हिंदुस्तान जिंदाबाद, ये सारा जहां जिंदाबाद।

हमने सीखा है- **"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः।" एवं "वसुधैव कुटुंबकम।"**

गुरुनानक देव साहब कहते हैं:- "अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे, एक नूर ते सब जग उपजया, कौन भले को मंदे।"

अर्थात सबसे पहले ईश्वर ने प्रकाश बनाया फिर अपनी रचनात्मक शक्ति से उन्होंने सभी नश्वर प्राणियों को बनाया। एक ज्योति से समस्त ब्रह्मांड का उदय हुआ तो कौन अच्छा है और कौन बुरा? यदि हम मात्र राष्ट्रगान का सम्मान करने और देशभक्ति के नारे लगा देने को देशभक्ति समझते हैं तो भी शायद हम गलत हैं क्योंकि असली देशभक्ति वो है जब इंसान पूरी निष्ठा, पूरी लगन व पूरे समर्पण के साथ अपना योगदान देता है। असली देशभक्ति वो है जब शिक्षक पूरी ईमानदारी के साथ शिक्षा प्रदान करता है और कैप्टन तान्या

शेरगिल, कैप्टन विक्रम बत्रा जैसे महान योद्धा समाज को देते हैं, तब होती है असली देशभक्ति।

असली देशभक्ति वह है:

- जब हम जल को व्यर्थ बहने से रोक देते हैं।
- जब एक पत्रकार निष्पक्ष रूप से खबर देता है।
- जब हम किसी नेता को वोट उसकी जाति या धर्म देखकर नहीं बल्कि उसका काम देखकर देते हैं।
- जब हम किसी बुजुर्ग को सड़क पार करवा देते हैं।
- जब हम गरीबों का भी कर्तव्य निष्ठा के लिए सम्मान करते हैं।
- जब हम स्वयं भ्रष्टाचार नहीं करते और न ही करने देते हैं।
- जब हम अपनी थाली का भोजन व्यर्थ नहीं जाने देते।
- जब हम शहीदों और उनके परिवारों का सम्मान करते हैं।
- जब हम सरकारी संपत्ति जैसे:- ट्रेन, बस, मूर्तियाँ, बगीचे, इत्यादि को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।
- जब हम सभी अपने धर्म और संस्कृति को सिर्फ मनाने के लिए नहीं बल्कि स्वामी विवेकानंद की तरह जानने की जिज्ञासा रखते हैं। तब प्रकट होती है असली देशभक्ति। ईमानदारी से किया गया हर काम देशभक्ति है। मैं उस देश की बात करती हूँ जहाँ नेता हम स्वयं चुनते हैं, महलों के राजा हमारी तकदीर नहीं लिखते। हमारे राष्ट्र का निर्माण तब होगा जब हम अपनी संस्कृति का पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निर्वहन करेंगे।

भारतीयों का देश प्रेम:- हमारी भारत माँ ने ऐसे अनेक नर, स्त्री रत्नों को जन्म दिया है जिन्होंने असीम त्याग भावना, देश के प्रति मर-मिटने की भावना से प्रेरित होकर हँसते-हँसते मातृभूमि पर अपने प्राणों की बलि दे दी। अनेक वीरों ने अपने अदम्य शौर्य एवं पराक्रम से शत्रुओं के दांत खट्टे किए। अनेकानेक ऋषि–मुनियों ने देश की महिमा को मंडित किया। हमारे वीर सपूत महाराणा प्रताप ने घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया लेकिन पराधीनता नहीं। स्वामी विवेकानंद ने विश्व प्रसिद्ध शिकागो की यात्रा पर भारतीय अध्यात्म और संस्कृति का व्याख्यान किया। जब हम अपने हित से पहले दूसरे के हित की चिंता की चेतना का विकास अपने व्यक्तित्व में कर लेंगे तभी होगा राष्ट्र निर्माण।

ऋग्वेद में लिखा है-

“संगच्छतं संवदधवं सं वो मनांसि जानताम । देवा भागं यथा पूर्वे सन्जनानाम उपासते॥ ”

अर्थात, हम सब एक साथ चलें; एक साथ बोलें; हमारे मन एक हो। प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा है इसी कारण वे वंदनीय हैं।

और गुरुवाणी के अनुसार,

“किरत करो, नाम जपो, वंड छको । ”

अर्थात, प्रभु का सिमरन करो, ईमानदारी से कड़ी मेहनत करो, बाँट कर खाओ।

आज हमारे नागरिकों में देशप्रेम की भावना अत्यंत क्षीण होती जा रही है। आज व्यक्ति विदेशों से आयातित वस्तुओं का उपभोग, उसके प्रति मोह आदि का शिकार हो गया है। हमारे देश का विकास तभी संभव है-

- जब हम स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता देंगे।
- जब विश्वविद्यालय अराजकता का अड्डा नहीं, शोध के संस्थान होंगे।
- जब विद्यालय एवं महाविद्यालय में महापुरुषों की जीवनी पर अनवरत अध्ययन होंगे।
- जब हमारा नायक कोई अभिनेता नहीं बल्कि अभिनंदन जैसा योद्धा होगा।

पवित्र भावना से प्रेरित प्रसाद जी ने कहा था-

“ अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो।
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो-बढ़े-चलो। ”

" राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।"

- महात्मा गाँधी

प्रादेशिक भाषा की रचनाएँ

সোশ্যাল মিডিয়া / सोशल मीडिया

(सृजन कुमार कुंडु, मुख्य प्रबंधक, मंडल कार्यालय, पुरुलिया)

বাংলা রচনা

বিশ্ব বিখ্যাত মার্কিন ভাস্কর Richard Serra 1973 সালে বলেছিলেন - "if you are getting something for free, then you're the product" । এই কথাটা আজ ভীষণ ভীষণ প্রাসঙ্গিক।

বিশ্বের সব থেকে বড় ১০টা কম্পানির দুটো হল alphabet আর meta । alphabet গুগলের প্যারেন্ট কম্পানি আর meta ফেসবুকের। বাকি বড় কম্পানি গুলো , যেমন apple ফোন বিক্রি করে, মাইক্রোসফট অপারেটিং সিস্টেম , সফটওয়্যার বিক্রি করে , টেসলা গাড়ি বিক্রি করে, সৌদি আরব অয়েল কম্পানি তেল বিক্রি করে, amazon সব কিছু বিক্রি করে। গুগল , ফেসবুক কি বিক্রি করে? আপনার ইনফরমেশন ? না কক্ষনো না। আপনার খুঁটিনাটি মোটেও বিক্রি করে না। এরা উপার্জন করে আপনার সময় বিক্রি করে , আপনার অভ্যেস বিক্রি করে , আপনার মগজ ধোলাই করে আপনাকে ওদের ইচ্ছে মতন চালনা করে।

একটা কথা ইদানিং খুব প্রচলিত , ডেটা ইস দ্য নিউ অয়েল। আরব দেশগুলো তেলের মালিক হয়ে প্রচুর শক্তিশালী , প্রচুর সম্পদশালী। তেমনিই যে কম্পানির কাছে আপনার যত খবর আছে , সে আপনার সম্পর্কে তত বেশি জানে .. এবং তত ভালো করে বুঝতে পারে যে আপনি এর পরে কি করতে চলেছেন , আর সেখানেই যত সমস্যা।

মেটার কাছে আছে - ফেসবুক, ইনস্টাগ্রাম , হোয়াটস্যাপ

আলফাবেটের কাছে আছে - গুগল ,জিমেল , ইউটিউব , গুগল ম্যাপস, android, এরকম আরও বেশ কয়েকটা খুব দরকারি application

তাই আপনি কি খেতে, কি দেখতে, কি পরতে, কোথায় যেতে, কিভাবে যেতে পছন্দ করেন শুধু এগুলো নয়, আপনার খেলাধুলা , সিনেমা, গান থেকে শুরু করে রাজনৈতিক পছন্দ - অপছন্দ পর্যন্ত সব এদের জানা। যে কম্পানি এদের কাছে বিজ্ঞাপন দেয় সে একেবারে নির্দিষ্ট সংখ্যক লোকের জন্য বিজ্ঞাপন দেয় , যাদের ইচ্ছে-অনিচ্ছে , মতামত কম্পানির টার্গেট অডিয়েন্সের সাথে মেলে।

আপনি amazon এ কেবল একটা জামা কার্টে অ্যাড করে ছেড়ে দিন। আপনার ফেসবুক ফিড ভরে যাবে জামার বিজ্ঞাপনে। সুইগি বা জোমাটোতে বিরিয়ানি সার্চ করে ছেড়ে দিন। এত লোভনীয় বিজ্ঞাপন, দুর্দান্ত সব ছাড় আসবে যে আপনি না কিনে থাকতেই পারবেন না। আমরা যখন খবরের কাগজের বিজ্ঞাপন দেখি তখন সেটা সকলের জন্য। যত কাগজ ছাপা হয়েছে, সবাই দেখছে সেটা। ধরা যাক, কাগজে দারুন একটা শ্যাম্পুর বিজ্ঞাপন দিয়েছে । কিন্তু আমার মাথায় সুন্দর একটা চকচকে টাক। ওই বিজ্ঞাপন আমার চোখেও পড়বে না। কিন্তু এই আমিই যখন ফেসবুক খুলবো, ইউটিউব খুলবো একদম আমার পছন্দ মতন কেবলমাত্র আমাকে টার্গেট করে বানানো বিজ্ঞাপন আমাকে দেখানো হবে।

हिंदी अनुवाद

विश्व विख्यात अमेरिकी शिल्पकार रिचर्ड सेरा ने वर्ष 1973 में कहा था – " अगर कोई उत्पाद आपको मुफ्त में मिल रहा है, तब आप उत्पाद हैं।" यह वाक्य आज बहुत अधिक प्रासंगिक है।

अल्फाबेट (Alphabet) और मेटा(Meta) विश्व की 10 सबसे बड़ी कंपनियों में से हैं। अल्फाबेट, गूगल की मूल कंपनी है और मेटा, फेसबुक की मूल कंपनी है। अन्य बड़ी कंपनियाँ, जैसे ऐप्पल (Apple) मोबाइल फोन बेचती है, माइक्रोसॉफ्ट ऑपरेटिंग सिस्टम, सॉफ्टवेयर बेचती है, टेसला गाड़ी बेचती है, सऊदी अरब की तेल कंपनियाँ तेल बेचती हैं और एमाज़ोन सबकुछ बेचती है। यह विचार करने की बात है कि गूगल और फेसबुक जैसी कंपनियाँ क्या बेचती हैं? आपकी निजी जानकारी? नहीं बिल्कुल नहीं। आपकी जानकारी बिल्कुल भी नहीं बेचती। ये कंपनियाँ उपार्जन करती हैं आपका समय बेच कर, आपकी आदतें बेच कर। ये आपको गुमराह कर अपनी इच्छानुसार चलाती हैं।

एक वाक्य हाल में बहुत चलन में है, 'डेटा इज़ द न्यू ऑयल'। जिस प्रकार अरब देश की तेल कंपनियों के मालिक बहुत ही शक्तिशाली और संपदाशाली होते हैं उसी प्रकार जिस कंपनी के पास आपकी जितनी ज़्यादा जानकारी है वह आपके बारे में उतना ही अधिक जानती है और वह उतनी अच्छी तरह समझती है कि आप इसके बाद क्या करने वाले हैं एवं यहीं से सारी समस्या शुरू होती है।

मेटा के पास है- फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप।

अल्फ़ाबेट के पास है- गूगल, जीमेल, यूट्यूब, गूगल मैप्स, ऐंड्रोइड और इसी प्रकार की और कई सारी महत्वपूर्ण ऐप्लीकेशन।

इसलिए आपको क्या खाना, देखना, पहनना, कहाँ जाना, कैसे जाना पसंद है और सिर्फ यही नहीं आपके मनपसंद खेल, सिनेमा, गानों से शुरू कर राजनैतिक पसंद – नापसंद तक सबकुछ इन्हें पता है। जो कंपनी इन्हें विज्ञापन देती है वह केवल एक निर्दिष्ट संख्या के लोगों के लिए विज्ञापन देती है। जिनकी इच्छा- अनिच्छा और राय कंपनी के लक्षित दर्शकों से मेल खाती है।

आप एमाज़ोन कार्ट में एक कपड़ा रख कर छोड़ दें। आपकी फेसबुक फीड कपड़ों के विज्ञापनों से भर जाएगी। स्वीगी या ज़ोमाटो पर बिरयानी ढूँढ कर छोड़ दें। इसके बाद इतने लोभनीय विज्ञापन, आकर्षक छूट वाले ऑफर आपको दिखेंगे कि आप इन्हें खरीदे बिना रह ही ना पाएंगे। हम अखबारों में जो विज्ञापन देखते हैं वह सभी के लिए होते हैं। जितना अखबार के पन्नों पर छपा है उतना सभी देख पा रहे है। मान लीजिये, अखबार में शैंपू का एक बेहतरीन विज्ञापन छपा है लेकिन मेरे सर पर बाल नहीं हैं। अतः इस विज्ञापन पर मेरी नज़र भी नहीं जाएगी। लेकिन यदि मैं फेसबुक पर जाऊँ या यूट्यूब पर जाऊँ, मुझे बिल्कुल मेरे पसंद के विज्ञापन दिखाये जाएंगे।

কিন্তু আরও মজার ব্যাপার হল , শুধু বিজ্ঞাপন দেখিয়েই সব শেষ হয়ে যায় না।

ফেসবুক , ইউটিউবের প্রোগ্রামিং এমন ভাবে করা , যে আমি কি ভাববো সেটাও সে ঠিক করে দেয়। বার বার বিভিন্ন পোস্ট, ভিডিও দেখানো হয় যাতে একটা সময়ের পর গিয়ে মিথ্যে কে সত্যি বলেই মনে হয়।

এবার আমার ছেলেবেলায় পড়া একটা গল্প ছোট করে বলি -

এক পুরোহিত ভদ্রলোক বাজার থেকে একটা ভালো ছাগল কিনেছেন। উনি কাঁধে করে ছাগলকে নিয়ে যাচ্ছেন। কিছুদূর যাওয়ার পর একদল চোরের নজর পড়ল সেই ছাগলের উপর। তারা নিজেদের মধ্যে প্ল্যান করে নিলো। এবার একজন ওনার কাছে এসে বলল - "ঠাকুর কুকুর কাঁধে চললে কোথায় ? " উনি পাত্তা না দিয়ে এগিয়ে চললেন। কিছুদূর যাওয়ার পর আর একজন চোর এসে জিজ্ঞেস করল - "ঠাকুর কুকুর কাঁধে চললে কোথায়?". ওনার মনে একটু খটকা লাগলো , তবে উনি এই চোরকেও অগ্রাহ্য করে এগিয়ে চললেন। আরও কিছুদূর যাওয়ার পর আর এক চোর এসে বলে ওই একই কথা "ঠাকুর কুকুর কাঁধে চললে কোথায় ? " । এবার পুরুত মশাই কাঁধের থেকে ছাগল নামিয়ে দেখলেন। না ঠিকই আছে তো। উনি আরো এগিয়ে চললেন। এবার আর এক চোর , আর সেও বলে একই কথা - "ঠাকুর কুকুর কাঁধে চললে কোথায় ? " । এবার ঠাকুর মশাই এর মনের জোর ভেঙ্গে গেছে। উনি বিশ্বাস করে নিয়েছেন উনি ছাগল কেনেননি , কুকুরই কিনেছেন। উনি সেই ছাগলকে রাস্তায় ছেড়ে দিয়ে এগিয়ে চললেন নিজের গন্তব্যে। চোরেরাও সেই ছাগল নিয়ে চলে গেল।

সোশ্যাল মিডিয়াতেও এটাই হয়। আপনাকে কোন একটা জিনিস বার-বার বার-বার দেখানো হয় যতখন না আপনার মনে সেটা গেঁথে যাচ্ছে। হয় আপনার ভুল বিশ্বাস আরও মজবুত করা হচ্ছে অথবা আপনার বিশ্বাস পুরো ভেঙে দেওয়া হচ্ছে , আপনার মগজে সেটাই চাপিয়ে দেওয়া হচ্ছে যেটা ফেসবুক , গুগল বা তাদের বিজ্ঞাপনদাতারা চায়।

আমি ফেসবুক খুললে যা দেখতে পাই , আমার বাবা ফেসবুক খোললে একদম অন্য জিনিস দেখতে পান, আমার স্ত্রী আবার সম্পূর্ণ অন্য জিনিস দেখেন তাঁর ফিডে। প্রতিটা লোক ফেসবুকের ফিডে আলাদা আলাদা পোস্ট দেখতে পায়। এমন কি দুজন ঘনিষ্ঠ বন্ধু, যাদের পছন্দ অপছন্দ এক রকম , তারাও ফেসবুক খুললে আলাদা আলাদা জিনিস দেখতে পায়। আরও মজার ব্যাপার , যতবার রিফ্রেশ করা হবে , সমুদ্র মন্থন করে ততবার আমাদের ফিডে নতুন নতুন আকর্ষণীয় পোস্ট ঢেলে দেওয়া হবে। আমাদের মনকে বারবার বাধ্য করা হবে পেজ রিফ্রেশ করতে। কিছু সময় ফোন না দেখলে , মনের ভেতর অস্বস্তি শুরু হবে , ফোন খুলতেই হবে , ফেসবুক খুলতেই হবে। ফোন না দেখলেই FOMO শুরু হয়ে যাবে। FOMOর পুরো কথা fear of missing out গুগল করলে যার সংজ্ঞা পাওয়া যাবে - "anxiety that an exciting or interesting event may currently be happening elsewhere, often aroused by posts seen on social media" । এরপর, ফেসবুক খুললে শরীরে তৈরী হবে happy hormone ডোপামিন , মন আনন্দে ভরে উঠবে। এবং এর প্রভাব কোকেনের মতনই ভয়ানক।

তা বলে, ফেসবুকে ভালো কি কিছুই নেই? কোভিডের বাড়াবাড়ির সময় কত মুমূর্ষু রোগীকে অক্সিজেন পেতে সাহায্য করেছে, কয়েক দশক আগের পুরোনো বন্ধুকে খুঁজে পেতে সাহায্য করেছে, কত স্টার্ট আপ শুধু সোশ্যাল মিডিয়াতে বিক্রি করেই রমরমিয়ে চলছে, প্রতিভাবানকে প্রতিভা দেখাতে আর বিভিন্ন প্রোডাকশন হাউসে দৌড়াতে হয় না , নিজের চ্যানেলে কন্টেন্ট দিয়ে দিব্বি উপার্জন করা যায়।

ফেসবুক , একটা tool বা যন্ত্র , যা তৈরি হয়েছিল চেনা অচেনা মানুষের সাথে বন্ধুত্ব করতে , বন্ধুত্ব চালিয়ে যেতে, আমাদের একে

इससे भी मज़ेदार बात यह है कि केवल विज्ञापन दिखाने भर से बात नहीं बनती।

फेसबुक, यूट्यूब जैसे ऐप की प्रोग्रामिंग ऐसे की गई है कि मैं क्या सोचूँ वह भी ये ही तय करते हैं। हमें बार –बार विभिन्न पोस्ट और वीडियो दिखाये जाते रहेंगे। जब तक झूठ, सच न लगने लग जाए।

अब मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ जो मैंने बचपन में पढ़ी थी-

एक पंडित जी ने बाज़ार से एक बकरी खरीदी। वे उस बकरी को अपने कंधे पर बैठा कर लिए जा रहे थे। कुछ दूर जाने पर चोरों के एक दल की नज़र उन पर पड़ी। उन्होनें आपस में एक योजना बनाई। अब उनमें से एक चोर उनके पास आकर बोला , "पंडित जी कुत्ता बांध कर कहाँ चले?" वे ध्यान न देकर आगे बढ़ गए। कुछ दूर जाने पर दूसरा चोर आकर बोला, "पंडित जी कुत्ता बांध कर कहाँ चले?" पंडित जी के मन में शंका तो उठी लेकिन उन्होनें उस चोर की बातों को भी अनसुना कर दिया और आगे बढ़े। थोड़ी दूर और चलने पर एक और चोर ने आकर फिर वही बात कही, "पंडित जी कुत्ता बांध कर कहाँ चले?" अब पंडित जी ने बकरी को कंधे से उतार कर देखा। उन्होनें सोचा बकरी ही तो है। वे आगे बढ़ गए। अब एक और चोर ने आकर कहा,, "पंडित जी कुत्ता बांध कर कहाँ चले?" अब पंडित जी का विश्वास टूट गया। उन्होनें मान लिया कि उन्होनें बकरी नहीं बल्कि कुत्ता खरीदा है। उन्होनें बकरी को वहीं छोड़ा और अपने गंतव्य की ओर बढ़ गए। चोरों का दल उस बकरी को लेकर चला गया।

सोशल मीडिया भी बिल्कुल यही है। आपको एक ही वस्तु इतनी बार दिखाई जाती है जब तक कि आपके मन में वह बात बिल्कुल बैठ न जाये। आपके विश्वास को या तो पूरी तरह मजबूत कर दिया जाता है या उसे पूरी तरह तोड़ कर रख दिया जाता है। आपके दिमाग में वही डाला जाता है जो कि फेसबुक और गूगल के विज्ञापनदाता चाहते हैं।

मुझे फेसबुक पर जो दिखता है, मेरे पिताजी को बिल्कुल दूसरी वस्तु दिखाई जाती है। इसी प्रकार मेरी पत्नी कोई अन्य वस्तु देखती है। हर व्यक्ति को फेसबुक पर अलग-अलग फीड देखने को मिलती है। यदि दो घनिष्ठ मित्रों की पसंद बिल्कुल एक जैसी भी हो, तब भी दोनों के फेसबुक वॉल पर अलग- अलग फीड देखने को मिलेगी। इससे भी मज़े की बात है ,जितनी बार यह फीड रिफ्रेश की जाती है उतनी बार समुद्र मंथन कर हमें आकर्षक पोस्ट दिखाये जाते हैं। हमारे मन को बार-बार फेसबुक रिफ्रेश करने को प्रेरित किया जाता है। कुछ देर तक फोन की ओर ना देखने पर , हमारे मन में आसक्ति उत्पन्न होगी, हमें अपना फोन चालू करना ही होगा, फेसबुक चालू करना ही होगा। फोन न चालू करने पर फोमो (FOMO) की भावना आने लगती है। फोमो (FOMO) का अर्थ होता है फियर ऑफ मिसिंग आउट (Fear of Missing Out). गूगल करने पर फोमो (FOMO) की जो परिभाषा दी गई है - 'यह एक प्रकार की व्याकुलता है जो कि किसी रोमांचक या दिलचस्प घटना के वर्तमान में कहीं और होने और सोशल मीडिया पर देखी गई उससे संबंधित पोस्ट से पैदा होती है।' इसके बाद फेसबुक खोलने पर शरीर में 'हैप्पी हॉरमोन' कहे जाने वाला डोपामिन पैदा होगा, मन आनंद से प्रफुल्लित हो जाएगा एवं इसका प्रभाव कोकेन जैसा ही भयानक होगा। इसका मतलब हुआ कि फेसबुक में कुछ लाभदायक नहीं है? कोविड महामारी के समय कितने ही पीड़ितों को ऑक्सीज़न प्राप्त होने में सहायता हुई, दशकों से बिछड़े मित्र एक-दूसरे को ढूँढ पाये, कितने ही स्टार्ट अप सोशल मीडिया पर ही फल-फूल रहे हैं। प्रतिभावान व्यक्ति को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए किसी निर्माता कंपनी के पास जाने की जरूरत नहीं है। वह अपना खुद का चैनल बना कर अपनी प्रतिभा दिखा कर अच्छा उपार्जन कर रहे हैं।

फेसबुक एक ऐसा यंत्र है जो जाने-अनजाने लोगों के साथ मित्रता करने के लिए , मित्रता निभाने और एक दूसरे की सहायता करने के लिए बनाया गया था। लेकिन भूखे पेट व्यापार नहीं किया जा सकता। अतः विज्ञापन अस्तित्व में आए। ये विज्ञापन जिन्हें अधिक से अधिक लोग देखना चाहें, इसलिए फेसबुक को और अधिक आकर्षक और आसक्तिपूर्ण होना होगा।

অপরকে সাহায্য করতে। কিন্তু খালি পেটে ব্যবসা হয়না। তাই এল বিজ্ঞাপন। এই বিজ্ঞাপন যাতে আরও বেশি মানুষ দেখেন , সে জন্য ফেসবুককে হয়ে উঠতে হল আরও বেশি attractive , আরও বেশি addictive। ফেসবুকের ইঞ্জিনিয়াররা এমন এমন সব ফিচার যোগ করতে থাকলেন, যে পাঁচ মিনিট ফেসবুক না খুললে মনে হবে কত কিছু হয়ে যাচ্ছে আর আমি কিছুই জানতে পারছি না। হাতে তুলে নিতেই হবে মোবাইল। খুলেই হবে ফেসবুক। সেখানে সাজিয়ে রাখা আছে এমন সব পোস্ট, এমন সব খবর, যেটা নিয়ে আপনি জানতে উৎসাহী। এবার আপনি এখন অনলাইনে কি কি করছেন , ফেসবুক সব লক্ষ করছে। আপনি কি কি করছেন না , ফেসবুক সেটাও লক্ষ্য করছে। আপনি যদি আপনার বন্ধুর নতুন গাড়ির ছবি দেখে স্ক্রল করা বন্ধ করে দেন, লাইক করার দরকার নেই, ফেসবুক বুঝে যাবে আপনি হয় বন্ধুকে হিংসে করছেন বা গাড়িটা পছন্দ হয়েছে। আপনি ও ওরকম একটা গাড়ি কিনতে পারেন। এবার আপনার ফিডে আপনার ওই বন্ধুর পোস্ট বেশি বেশি আসবে, গাড়ি নিয়ে পোস্ট , রিল , বিজ্ঞাপন সব বেশি বেশি আসবে।

সমস্যাটা আরও গভীর হয়, যখন রাজনৈতিক বা সামাজিক ইস্যু নিয়ে আপনার পছন্দ, অপছন্দ, মতামতের উপর ভিত্তি করে ফেসবুক আপনার ফিড সাজিয়ে দেয়। আপনার মনে দৃঢ় বিশ্বাস জন্মায়, আপনি যেটা ভাবছেন, শুধু সেটাই ঠিক। বিরুদ্ধমত শোনার ও লজিক্যালি ভাবার ক্ষমতাটাই চলে যায়। সমাজে ছড়িয়ে পড়ে অসহিষ্ণুতা। আমরা কি এটাই এখন দেখছি না চার পাশে ?

আমার ছোটবেলায়, একটা খবর রটেছিল , আজকের ভাষায় বললে ভাইরাল হয়েছিল - গনেশ ঠাকুর নাকি দুধ খাচ্ছেন। আমরা তখন বসিরহাটে থাকি , কলকাতা থেকে ট্রেনে দু ঘন্টার দূরত্ব। বাবা অফিস করে রাত্রিবেলা ফেরার পর জানা গেল সেদিন কলকাতায় সবাই গণেশকে দুধ খাইয়েছেন। এখন, এরকম কিছু হলে সারা পৃথিবীতে মুহূর্তের মধ্যে সেই খবর ছড়িয়ে পরে। সব থেকে মজার ব্যাপার , আমেরিকায় বসে থাকা কম্পিউটার প্রোগ্রামের পক্ষে জানা সম্ভব নয় , পশ্চিবঙ্গের যে ঘটনাটার কথা ফেসবুক, টুইটারে লেখা হচ্ছে , সেটা সত্যি না মিথ্যে। তাই সত্যি, মিথ্যে বিচার না করেই খবর ছড়িয়ে পড়ে । গবেষণা বলছে কোনো ফেক নিউস, সত্যি খবরের তুলনায় 6 গুণ দ্রুত ছড়ায় সোশ্যাল মিডিয়াতে।

এবার উল্টোদিকে উইকিপিডিয়ার মতন একটা সাইট দেখা যাক , আমি খুললে যা দেখতে পাবো, রাম ,শ্যাম ,যদু ,মধু যে কেউ খুলুক সেই একই জিনিস দেখতে পাবে। ওনারা মাঝে মাঝে ডোনেশন চান। এবং এই ডোনেশনেই চলে সাইটটি। ওখানে বিজ্ঞাপন নেই। তাই উইকিপিডিয়া সোশ্যাল মিডিয়ার মতন attractive নয়, addictive নয়।

ফেসবুক ম্যাসেঞ্জারে “Is that you in the video” এরকম ম্যাসেজে উত্তর দিয়ে অনেকে নিজের প্রোফাইল তুলে দিয়েছেন হ্যাকারদের হাতে। কিন্তু এটা নিয়ে পড়াশোনা করতে করতে এত গভীরে চলে যাবো আমার নিজেরই আইডিয়া ছিল না। ওই ফ্রডটা এড়ানো তুলনামূলক সহজ। এরকম লিংকে ক্লিক করলে ফেসবুক লগইন পেজের মতন একটা পেজ আসে , সেখানে আই ডি পাসওয়ার্ড দিলেই প্রোফাইল অন্যের কব্জায় চলে যাবে। তবে এরকম লিংক এলে ক্লিক না করলেই মিটে যাবে। তাছাড়া ফেসবুকে 2FA চালু করে রাখলে অন্যরা সহজে প্রোফাইলের নাগাল পাবে না। এই সমস্যা চাইলেই এড়ানো যায়। কিন্তু ফেসবুক যেভাবে আমাদের সাথে খেলছে , সেই খেলায় জেতা কঠিন। সত্যি বলতে প্রায় অসম্ভব।

ফেসবুক , টুইটার , ইনস্টাগ্রাম থেকে বেরিয়ে আসার জন্য প্রচুর মনের জোর লাগে। সিগারেট বা মদ ছাড়া এর থেকে সহজ। সোশ্যাল মিডিয়ায় না থাকলে সেটা একরকম অস্তিত্ব সঙ্কট তৈরি করে দেয়। তাই কতটা নিজেকে নিয়ন্ত্রণে রেখে আপনি এই সোশ্যাল মিডিয়া ব্যবহার করবেন সম্পূর্ণভাবে সেটা আপনার ওপর।

फेसबुक के इंजीनियरों (अभियंताओं) ने ऐसी-ऐसी विशेषताएँ जोड़ीं कि लगने लगा कि यदि थोड़ी देर भी फेसबुक नहीं खोला तो ऐसे लगता है कि कितना कुछ होता जा रहा है और मैं कुछ भी जान नहीं पा रहा। मोबाइल उठाना ही पड़ेगा। फेसबुक खोलना ही होगा। जहाँ ऐसी-ऐसी पोस्ट, ऐसी खबरें सजा कर रखी गई हैं जो आप जानने के लिए उत्साहित हैं। अब आपने ऑनलाइन क्या-क्या किया, फेसबुक ने सब देखा। फेसबुक ने वह भी देखा जो आपने नहीं किया। आपने यदि अपने मित्र की पोस्ट की हुई गाड़ी को देखा और फेसबुक बंद कर दिया। आपने उस पोस्ट को भले ही 'लाइक' न किया हो। फेसबुक को यह पता चल चुका है कि या तो आपको अपने मित्र के प्रति ईर्ष्या की भावना है अथवा आपको भी वह गाड़ी पसंद आ गयी है। आप भी उसकी तरह की गाड़ी खरीद सकते हैं। अब आपको उसी मित्र के अधिक से अधिक पोस्ट , रील, विज्ञापन दिखाये जाएंगे।

यह समस्या और अधिक गंभीर तब हो जाती है जब राजनैतिक या सामाजिक मुद्दों पर आपकी राय, पसंद और नापसंद के आधार पर आपकी फेसबुक फीड सजा दी जाती है। आपके मन में दृढ़ विश्वास जन्म लेता है कि आप जो सोच रहे हैं सिर्फ वही सही है। विरोधमत सुनने एवं तर्कपूर्ण रूप से सोचने कि क्षमता समाप्त हो जाती है। समाज में फैल जाती है असहिष्णुता। हम क्या अपने चारो ओर यही नहीं देख पा रहे?

हमारी बालावस्था में एक खबर फैली थी। आज की भाषा में , वायरल हुई थी- गणेश भगवान दूध पी रहे हैं। तब हम बसीरघाट में रहते थे, कोलकाता से रेल के माध्यम से 2 घंटे दूर पिताजी के कार्यालय से वापस आने पर हमें पता चला कि कोलकाता में सभी गणेश भगवान की मूर्ति को दूध पिला रहे हैं। यह खबर पूरी दुनिया में मिनटों में फैल गई। सबसे मज़े की बात यह कि अमेरिका में रखे कंप्यूटर प्रोग्राम के लिए यह साबित करना संभव नहीं है कि पश्चिम बंगाल में जो घटना घट रही है के बारे में फेसबुक और ट्विटर में लिखा जा रहा है वह सच है या झूठ। इसलिए सत्य- मिथ्या का विचार किए बिना ही यह खबर फैल गई। शोध में यह पता चला है कि सोशल मीडिया पर झूठी खबर, सच्ची खबर की तुलना में 6 गुणा तेजी से फैलती है।

अब दूसरी तरफ विकिपीडिया जैसी किसी साइट पर जाया जाए, मैं इस साइट पर जो देख पाऊँगा, राम, श्याम, यदु, मधु , कोई भी वहाँ वही जानकारी देख पाएगा। वो बीच – बीच में कुछ आर्थिक दान की माँग करते हैं। इसी दान से यह साइट चलती है। वहाँ कोई विज्ञापन नहीं है। यही कारण है कि विकिपीडिया , सोशल मीडिया के समान आकर्षक और आसक्तिपूर्ण नहीं है।

फेसबुक मैसेंजर पर आने वाले "क्या इस वीडियो में आप हैं" जैसे मैसेज के उत्तर देकर अनेकों व्यक्तियों ने अपनी निजी प्रोफाइल हैकरों के हाथों में सौंप दी है। किन्तु इस विषय पर पढ़ते हुए मैं इतनी गहराई तक पहुँच जाऊँगा ऐसा मैंने नहीं सोचा था। ऐसी जालसाजी से बचना तुलनात्मक रूप से सहज है। ऐसे लिंक पर क्लिक करने पर फेसबुक के लॉगिन पेज जैसा एक पेज खुलता है, वहाँ आपकी उपयोगकर्ता आईडी और पासवर्ड डालते ही आपकी प्रोफाइल किसी और के शिकंजे में चली जाती है। हालांकि ऐसे लिंक आने पर यदि आप उस पर क्लिक ना करें तो यह लिंक खुद ही मिट जाती है। इसके अतिरिक्त फेसबुक में 2FA चालू कर के रखने पर कोई भी सहजता से आपके प्रोफाइल तक नहीं पहुँच सकता। यह समस्या चाहने भर से खत्म की जा सकती है। किन्तु फेसबुक जिस प्रकार हमारे साथ खिलवाड़ कर रहा है, उससे जीतना कठिन है। सच कहा जाए तो असंभव है।

फेसबुक, ट्विटर , इंस्टाग्राम से बाहर आने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। तंबाकू और शराब छोड़ना उससे कहीं अधिक सहज है। सोशल मीडिया पर न रहना भी एक प्रकार का अस्तित्व संकट खड़ा कर देता है। इसलिए अपने आप को कितना अधिक नियंत्रण में रखते हुए आप सोशल मीडिया का प्रयोग करेंगे यह आपके ऊपर निर्भर करता है।

सीएसआर गतिविधियाँ

पीएनबी ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण केंद्र, ढुढिके (मोगा) में प्रशिक्षित महिलाओं को सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत भेंट की गई सिलाई मशीनों के साथ एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल, श्री सुमंत महांती, अंचल प्रबंधक, लुधियाना एवं बैंक के अन्य उच्चाधिकारीगण।

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत महिला सशक्तिकरण के लिए कार्यरत संवेदना एनजीओ को सिलाई मशीन प्रदान करते हुए श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी साथ में हैं श्री संदिप कुमार पाणिग्रही, अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़ अंचल एवं चंडीगढ़ अंचल के अधीनस्थ मंडल प्रमुखगण।

श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी चंडीगढ़ दौरे के दौरान पंचकूला स्थित बैंक भवन प्रांगण में रूद्राक्ष का पौधा रोपण करते हुए। दृष्टव्य हैं अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप पाणिग्रही एवं अन्य अधिकारीगण।

अंचल कार्यालय, चेन्नई द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों के अंतर्गत तमिलनाडु मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 24.90 लाख रूपये का चेक प्रदान करते हुए अंचल प्रबंधक, चेन्नई, श्री पी. महेंदर और मंडल प्रमुख, श्री चेतन मसूर।

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अन्तर्गत मण्डल कार्यालय, बिजनौर द्वारा जजी परिसर, बिजनौर में अंचल प्रबंधक (मेरठ) श्री सुरिंदर पाल सिंह एवं मण्डल प्रमुख, श्री संजीव मक्कड़ की गरिमामयी उपस्थिति में माननीय जिला जज, श्री मदनपाल सिंह जी के कर-कमलों से वॉटर कूलर का लोकार्पण किया गया।

मण्डल कार्यालय जयपुर-अजमेर द्वारा कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अन्तर्गत राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,जयपुर को "हर घर तिरंगा अभियान" के अंतर्गत 400 ध्वज एवं पंखे वितरित करते हुए अधिकारीगण।

आपके पत्र

पीएनबी प्रतिभा का 'बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध विशेषांक' खोलते ही पृष्ठ क्रमांक 2 पर प्रकाशित दोनों चित्र देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। आपके प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कर कमलों से एमएसएमई अभियान में उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करने के लिए एवं ईज 5.0 बैठक में माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी के साथ विमर्श का सुअवसर प्राप्त करने के लिए हार्दिक बधाई। बैंक और ग्राहक के पारस्परिक संबंधों पर यह अंक निकालकर आपने अपनी उत्कृष्ट संपादकीय दृष्टि का परिचय दिया है। स्टाफ सदस्यों द्वारा ऐसे जरुरी समसामयिक विषयों पर हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने का आपका यह प्रयास अभिनंदनीय है। पत्रिका के इस अंक में श्री विद्याभूषण मल्होत्रा का लेख 'वर्तमान परिवेश में बैंकिंग और ग्राहक संबंध की प्रासंगिकता' बहुत महत्वपूर्ण है। अंक की साज-सज्जा और अन्य तकनीकी पक्ष भी पाठकीय संतोष देते हैं। एक संग्रहणीय अंक के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,
(शशांक युगल किशोर दुबे)
महाप्रबंधक (राजभाषा)
आईडीबीआई बैंक, लिमिटेड
प्रधान कार्यालय, मुंबई

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु हमारी ओर से शुभकामनाएं स्वीकार करें। आपके कार्यालय द्वारा, हमारे बैंक के श्री स्वरुप कुमार साहा, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक जी को उच्च स्तर पर पदोन्नति के संबंध में स्मृति चिन्ह भेंट कर शुभकामनाएं देते हुए चित्र के लिए बहुत-बहुत हार्दिक धन्यवाद।
पत्रिका बड़ी ही सुव्यवस्थित एवं सुरुचिपूर्ण है। इसमें संकलित लेख जैसे वर्तमान परिवेश में बैंकिंग और ग्राहक संबंध की प्रासंगिकता, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्राहक सेवा, बैंकिंग उद्योग की लाभप्रदता बैंकों द्वारा प्रदत सेवा है, कॉरपोरेट सामजिक उतरदायित्व, ग्रामीण बैंकिंग एवं वित्त सेवा, बैंकों की लाभप्रदता: बैंकर ग्राहक संबंध आदि बड़े ज्ञानवर्धक लगे, कविताओं में – राह में मुश्किल, पैसे का कमाल, चाँद और मैं, आसान कहाँ, जीवन की राह, माँ, मेरी बिटिया, पूछो अपने दिल से जरा, मेरी माँ, तुम-सी ना बनूँगी माँ, जिंदगी के रंग, बदलेगा ये मंजर, माँ की ममता की पुकार, वक्त, आदि बहुत ही रुचिकर है तथा कहानी में - फटी कमीज हृदयविदारक है। पत्रिका में चित्रांकन बड़ा ही आकर्षक है एवं भाषा भी सरल, सटीक तथा सहज है। इसके लिए समस्त संपादक मंडल बधाई का पात्र है।
आशा करते हैं कि भविष्य में भी पत्रिका प्राप्त होती रहेगी।

भवदीय,
कामेश सेठी
महाप्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एंड सिंध बैंक, नई दिल्ली

आपके पत्र के साथ बैंक की तिमाही पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" का सद्य: प्रकाशित अंक अप्रैल-जून 2022 – "बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध विशेषांक" प्राप्त हुआ। अपने सुंदर और आकर्षक कलेवर में सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित यह अंक अपनी विशिष्टता का परिचय स्वयं दे रहा है। विशेष रूप से इस अंक का 'बैंकिंग एवं ग्राहक संबंध' पर केंद्रित होना वर्तमान समय में बैंक के उद्देश्यों एवं ग्राहक सेवा के उसके दायित्वों के लिए हमारा मार्गदर्शन करेगा ऐसी आशा सहज ही की जा सकती है। बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं इस पत्रिका के संरक्षक श्री अतुल कुमार गोयल के संदेश से इसकी पुष्टि होती है। बैंकिंग संबंधी गतिविधियों तथा साहित्यिक रचनाओं का संतुलित समायोजन इस पत्रिका को बैंकिंग तथा साहित्यिक दोनों मानकों पर विशिष्ट बना रहा है। प्रधान कार्यालय, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकों द्वारा किये गए दौरे, अंचल प्रबंधकों तथा मंडल प्रमुखों के सम्मेलन, बैंक के 128वें स्थापना दिवस से संबंधित कार्यक्रमों, योग दिवस संबंधी आयोजनों, राजभाषा संबंधी गतिविधियों आदि के सचित्र विवरण इसे एक सुन्दर स्वरुप प्रदान कर रहे हैं। ज्ञानवर्धक आलेख एवं साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ पत्रिका के बीच-बीच में सूक्ति वाक्य भी इसे संग्रहणीय बना रहे हैं। हमारी आशा है कि इसी प्रकार यह पत्रिका निरंतर हमारा मार्गदर्शन करते हुए बैंकिंग एवं साहित्य दोनों क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करेगी।

भवदीय,
राजेश कुमार
मंडल प्रमुख, वाराणसी

आपके कार्यालय की उक्त गृह पत्रिका का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! हमें प्रसन्नता है कि आपने इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के रचनात्मक आयामों को उद्घाटित करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किया है। पत्रिका बैंकिंग जगत से संबंधित महत्वपूर्ण आलेख, राजभाषा गतिविधियाँ, कविता एवं कहानी संकलन, यात्रा वृत्तांत, प्रादेशिक भाषा की रचनाएं और कर्मचारी अभिप्रेरणा उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की संकल्पना, साज-सज्जा और संपूर्ण कलेवर सृजनात्मक रूप से उत्कृष्ट है। पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद।
शुभकामनाओं सहित,

भवदीया
(डॉ. माधुरी केलकर)
सहायक महाप्रबंधक

हमें आपकी गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" अप्रैल-जून, 2022 का अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका को बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। पत्रिका में बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध के संबंध में विभिन्न गुणवत्तापूर्ण लेख प्रकाशित किये गए हैं। विशेषांक में प्रकाशित लेखों से बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध को बेहतर ढंग से समझने में सहायता प्राप्त होती है। पत्रिका से बैंकों में आने वाले बैंकिंग तथा ग्राहक संबंध को बेहतर करने हेतु मार्गदर्शन मिलेगा।
पत्रिका में प्रकाशित लेखों, वर्तमान परिवेश में बैंकिंग और ग्राहक संबंध की प्रासंगिकता, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्राहक सम्बन्ध, बैंकिंग में ग्राहक सेवा का महत्व, बैंकिंग उद्योग की लाभप्रदता बैंकों द्वारा प्रदत्त ग्राहक सेवा आदि लेख ज्ञानवर्धक हैं। इसके साथ ही कुछ सामान्य लेख जैसे सफलता का अर्थ, देश का गौरव: रेत समाधि – गीतांजलि श्री, बात सेहत की – स्वास्थ्य प्रबंधन, प्रादेशिक भाषा की रचनाएं आदि भी रोचक जानकारियों के साथ प्रकाशित किये गए हैं। इसके साथ आपके बैंक द्वारा आयोजित विभिन्न आयोजन प्रेरणादायक हैं।
पत्रिका के प्रकाशन के लिए इतने महत्वपूर्ण विषय को चुनने के लिए संपादक मंडल का धन्यवाद। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपकी पत्रिका में इसी प्रकार के अन्य रोचक आलेख एवं तकनीकी जानकारियां पढ़ने को मिलेंगी।

भवदीय,
(रंजन कुमार बरुन)
उप महाप्रबंधक
राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली

भावभीनी विदाई

श्री एच.एस.भल्ला, उप अंचल प्रबंधक एवं उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप कुमार पाणिग्रही ।

श्री जगदीप सिंह, उप महाप्रबंधक एवं एसएलबीसी-हरियाणा प्रभारी को उनकी सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप कुमार पाणिग्रही ।

श्री हेमंत कुलकर्णी, उप-महाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर मंडल कार्यालय, पुणे द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में श्री पुष्कर कुमार तराई, उप अंचल प्रबंधक, मुंबई, सुश्री भुवनेश्वरी वेंकटरमण, मंडल प्रमुख, पुणे ।

उपमंडल प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक, अगरतला मंडल, श्री सुब्रोतो रॉय की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उनको सम्मानित कर भावभीनी विदाई देते हुए उपमहाप्रबंधक एवं मंडल प्रमुख, श्री आनंद कुमार।

पुणे मंडल की शाखा बावदान में कार्यरत सुश्री गीता उन्मेष वैद्य, प्रबंधक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए सुश्री भुवनेश्वरी वेंकटरमण, मंडल प्रमुख, पुणे। साथ में हैं शाखा प्रबंधक।

श्रीमती फूलवती देवी, प्रबंधक, मंडल कार्यालय, हिसार की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए मंडल प्रमुख, हिसार, श्रीमती अंजु मित्तल एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

भावभीनी विदाई

महाप्रबंधक (एलकेएमसी), श्रीमती रीता कौल को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मृति चिन्ह प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशकगण, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार।

श्री अशोक कुमार प्रधान, महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उन्हें पुष्पगुच्छ प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए श्री बी.पी.महापात्र, अंचल प्रबंधक तथा मुख्य महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, मुंबई।

आज़ादी का अमृत महोत्सव
pnb one #JustOneApp
pnb
पीएनबी, वाट्सएप?
अब आपका बैंक वाट्सएप पर,
बैंकिंग हुई ज्यादा आसान और ज्यादा निजी !
खाते की शेष राशि
चेक रोकें
Punjab National Bank
अंतिम 5 लेन-देन
चेकबुक आवेदन
+919264092640 पर केवल 'Hi' वाट्सएप करें।
गैर-पीएनबी खाताधारक भी पीएनबी की वाट्सएप बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से बैंक द्वारा दी जाने वाली सेवाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
स्कैन करें और 'Hi' भेजें
हमें फ़ॉलो करें : www.pnbindia.in I टोल फ्री : 1800-180-2222 या 1800-103-2222
पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक !
punjab national bank ...the name you can BANK upon !